पसेनाक धरम

पसेनाक धरम

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

PASENAK DHARAM (पसेनाक धरम)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-06-3
दाम: 251/- (भा.रु.)

पाँचिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2015)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवारी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

कथा-सत्तैर:

नहरकन्हा

कातिक मास। काल्हिये दीयावाती छी। रौदमे ने जेठुआ जलैन अछि आ ने माघक सिरसिरी। ने हथियाक झाँट अछि आ ने मघ-असरेसक गर्जन-तर्जन। मुदा बिनु बरखो-बुन्नीक सौनक सुहावन तँ अछिए। भलेँ सौनमे गरम-ठण्ढाक घोर किए ने बनैत हौउ, मुदा कातिकोमे तँ पानि-रौदक घोरमे ओसक मिश्रण बनिते अछि..।

बेरुका समय, गोसाँइ लहसैत दिन। चेतन काका हाथ-पएर मारि दरबज्जापर बैसल अपन बीर्तमान भविस दिस देखि रहल छैथ। मनमे उठलैन, पनरह कातिक तीस अखाढ़ जे सुतल से गेल बजार! मुदा हम सुतल कहाँ छी, सुता देल गेल छी। तहूमे आइ चौदहम कातिक तँ छीहे। तही बीच रधिया काकी चाह नेने पहुँचलैन।

काकीक पैरक धमकसँ चेतन कक्काक भक् खुजलैन। भक् खुजिते तकलैन तँ आगूमे पत्नीकेँ चाह नेने ठाढ़ देखलैन। आँखिमे आँखि सटिते चेतन कक्काक मन अश्रु मिश्रित भऽ सिहैर गेलैन। सिहरलैन ऐ दुआरे जे पत्नीक पियासल आँखिमे पानिक तरास बुझि पड़लैन। मुदा भूख-पियास कोनो आइए भेल आकि सभ दिनसँ रहल। जखने देहधारी जीव हएत तखने ओकरा जीबैत चलै-फिड़ैले अन्न-पानिक खगता हेबे करत। मुदा ओइ खगताक पूर्ति तँ अपने केने हएत। पत्नीक हाथमे चाहक गिलास देखि चेतन काका हाथ बढ़ा गिलास पकैड़ बजला-

“काल्हिए ने उका-वाती छी?”

ओना, रधिया काकीकेँ सेहो बुझल रहैन। कोनो पाबैन परिवारमे पुरुख-पात्रसँ पहिने बाले-बोध आ जनिजातियेक कानमे पहुँचैए, आ ओ पहुँचैए आन परिवारसँ, समाजसँ। काल्हिए पाबैन छी सुनि रधिया काकीक मन थकमका गेलैन। थकमकाइते मनमे की उठलैन से तँ ओ जानैथ मुदा पतिक सोझासँ हटि, माने दरबज्जापर सँ आँगन दिस बढ़ि गेली। भऽ सकैए चुल्हि लग अपन छनाएल चाह ठण्ढाइ दुआरे बढ़ि गेल हेती चाहे पतिक सिनेहिल मन जगबै दुआरे सेहो। सिनेहिल मन ई जे जखन तबधल पेटमे चाह पड़तैन तखन पेटक ताप आ चाहक तापक संयोग होइते सिनेहिल विचार पनैपते सिनेहिल मन बनतैन। आकि अखनो पतिक सोझमे चाह नै पीबैत होथि, तहू दुआरे हटल हेती चाहे आने कारणे..।

चुपचाप पत्नीकेँ लगसँ हटैत देखि चेतन कक्काक मनमे अनेको प्रश्न एक संग उठलैन, उठलैन ई जे अपनो तँ जनिते छी जे घरमे किछु ने अछि, जखन कि काल्हि ज्योतिक पाबैन- दिवाली-क संग काली पूजा सेहो छी। लगले परसू गोबरधनक संग गाए-महींसिक चुमौन, माने पखेब-सुकराती-हुरियाहा सेहो छी, तेकर सटले तरसू भाए-बहिनीक पाबैन-भरदुतिया-क संग चित्रगुप्त-दवात पूजा सेहो छी। तैसंग सटले छठि पावनिक बीजवपन सेहो भऽ जाएत..,

..भरिसक यएह सभ सुइख ने तँ मनकेँ सता रहल छैन जइसँ मुँह छिपबै दुआरे परोछ भऽ गेली। मुदा लगले मनमे उठलैन जे किछु छैथ तँ अर्द्धांगिनीए छैथ ने, किए ने हुनकर मनक तरसैत ताप तराइस दिऐन। जे समय बनि गेल अछि, जेकर भुक्तभोगी अपना संग परिवार सेहो बनि गेल अछि। एहेन स्थितिमे तँ यएह ने नीक हएत जे सभ बात-विचार जी-खोलि दुनू गोरे जीसँ निकालि जीहक भिरानी करैत जिनगीक आगूक बाट हेरब..।

..मनमे अबिते चेतन कक्काक मन पानिमे बनैत पाथर जकाँ थीर भऽ गेलैन। मुदा लगले भेलैन जे ईहो तँ सम्भव ऐछे जे अपन पीबैले चाह चुल्हि लग रखने होथि जे पीबैले चलि गेल हेती। अनेरे मन वौआ रहल अछि, जेते समय अपने चाह पीबैमे लगत तइसँ कनीयेँ बेसी अँटैक सोर पाड़ि गपियाइये किए ने लेब। तैबीच चाहो सधलैन। गिलासकेँ चौकी तरमे रखि, तमाकुलक सूर-सार करए लगला। मुदा तैबीचमे पत्नी पहुँच गेलखिन। आने मिथिलांगना जकाँ रधिया काकी अपन बेथाकेँ बेवस्थित ढंगसँ साजि, मुँहक मुस्कान साजैत बजली-

"की पाबैन हएत! बच्चाकेँ जँ कितावे ने रहतै तँ ओ की पढ़त! आ की पौत! चाहे किसानेकेँ जँ बरद नइ रहत तँ ओ गोबरधन पूजा की करत!!"

बेथाएल मने रधिया काकी बजली, मुदा चेतन काका सुनि कऽ वौआ गेला। वौआ ई गेला जे एक दिस बच्चाक विद्याध्ययनक बात उठेलैन मुदा लगले किसानक गाए-बरदसँ जोड़ि देलैन। मर्र ई की भेल? गाइक नाँगैर घोड़ाकेँ आकि घोड़ेक नाँगैर गाएकेँ केना छजत। मुदा ईहो तँ सम्भव ऐछे जे बेथा-कथाक बखार भरल होइन, जे बहराइले मनमे उपरौंज केने होइन तँए गपक मुड़ीक ठेकाने ने रहल होइन। चेतन काका बजला-

"पाबैन छी काल्हि आ पीड़ाएल छी आइए? ऐ पीड़ेने नइ ने हएत। किए पीड़ाएल छी तेकर ने खोद-वेद करब।"

चेतन कक्काक बोल रधिया काकीकेँ नीक लगलैन। सहैट कऽ लगमे एली। लगमे अबिते चेतन काका बजला-

"आइ कातिकक चौदहम दिन छी, चौदहमी-चान सेहो उगत। काल्हिए गणेश-लछमी पूजाक संग घर-आँगन, दुआर-दरबज्जा,

इनार-पोखैर, मालक थैरक संग चर-चौमासमे दीप जरत। तैसंग निसभेर रातिमे कालीक पूजा हेतैन।”

पावनिक पावन विचार सुनि रधिया काकी विहुँसैत बजली-

“हाइ रे कातिक! गिरहस्तक धरम-करम मास कातिक!”

कहि जेना मने-मन किछु विचारए लगली। विचारए लगली जे वृन्दावनक जमुना-कछेरक कदमक फूलक घुघरूक बीच फड़ केना छिपल रहैए..। मुदा दुनू गोरेक बीच चुपा-चुपी, धुपा-धुपी भऽ गेल। आँखिसँ नजैर धरि एक-दोसरपर चढ़ौने रहैथ, मुदा मुँहमे बोल नहि, भाव रहितो अभावे-अभाव। परिवार छी, पति-पत्नीक सहयोगसँ संचालित होइए। चेतन काका बजला- “अपन गाम, अपन परिवार, अपन जिनगी कनाह भऽ गेल!”

‘कनाह’ सुनि रधिया काकी चौंकली। अछैते आँखिये कनाह! मुदा होइ तँ छैहे। आँखिक डेर-वार भेने सेहो लोक कनाह कहाइए। ओना, एकटा आँखि नहियोँ रहने लोक कनाह कहैबते अछि, मुदा कनीयोँ ली-ओंच भेने तँ सेहो कनाहे कहबैए! खाएर जे होउ। बजली-

“की कनाह कहलिऐ?”

पत्नीक भाव पूर्ण प्रश्न सुनि चेतन काका बजला-

“जहिना कोसिकन्हा भेल तहिना अपनो सभ नहरकन्हाक बासी भऽ गेलौं।”

‘नहरकन्हा’ सुनि रधिया काकी मने-मन विचारए लगली जे ई की पावनिक जगह कहि रहला अछि। मुदा जे कहि रहल छैथ तिनकेसँ किए ने खरियारि कऽ पुछि बुझि ली। पाबैन काल्हि छी। विचार तँ हवाक गतिये चलैए। काज ने कटही गाड़ी जकाँ चर्र-चर्र करैत चलैए..। बजली- “की नहरकन्हा कहलिऐ?”

पत्नीक प्रश्न सुनि चेतन काका अपन मनक बेथा पत्नीपर आ पत्नीक बेथा अपनापर लैत बजला-

“सम्पन्नता घटने विपन्नता अबै छइ। अपन सभ किछु देखिते छी, तेहेन नहर गाममे बनि गेल, तैसंग सड़कसँ तेना घेरा गेल जे गामेक रूप कुरूप भऽ गेल। जहिना कोसीकातक सभ गाम कनाह नहि अछि मुदा ओहन गाम तँ कनाह ऐछे जेकर चास-बास उकन-विपन भऽ गेल छइ। तहिना देखबे करै छी जे धानक चास दहा गेल। पानिक जमाव रहने, गहुम, रब्बी-राइक संग वाड़ी-झाड़ीक तीमन-तरकारीक खेती छीना गेल, एहेन स्थितिमे..?”

‘एहेन स्थिति’ कहि चेतन काका बौक भऽ गेला! जेना दलदलमे फँसल हाथी बाहर निकलैले चीतकार करैत तहिना कक्काक चित्त चीत भऽ चीतकार करए लगलैन। बोल घौलाए लगलैन!

चेतन कक्काक विचार सुनिते रधिया काकीक भक् खुजलैन। बजली- “यएह दिवाली पाबैन छी जइमे रंग-रंगक तीमनो-तरकारी आ अन्नो-पानि भरल रहै छेलए, अपनो खाइ छेलौं आ दोसरोकेँ पइत सम्हारै छेलिऐ। काल्हि पाबैन छी आ आइ सुन्न घरमे ठाढ़ छी! केना दीप जरत?”

दुनू परानीक मुँहक बोल, ओइ पोखैर जकाँ सुखा गेल जेकर जाठिक समुच्चा देह उघार भेल बालु-माटिपर ठाढ़ भेल फटोफनमे पड़ल रहैए। एक-दोसरपर दुनू परानी नजैर दैथ, मुदा लगले नीचाँ खसि पड़ैन। ओना, रधिया काकी अनभुआर जगहो आ अनभुआर रस्तो देखि सहैम कऽ सहैज गेली।

सहैज ई गेली जे जखन नारी असगरो ब्रह्मचारिणी बनि सकै छैथ तखन तँ हम पुरुखक संग छी। तहूमे ओहन पुरुख जे जीवन

संगी छैथ! मन मचललैन, चल रे जीवन चलिते चल, सुख-दुखक संगे चल, जिनगी-मृत्युक सीमा धरि चल..।

रधिया काकी विहुँसैत बजली- "अनेरे मनकेँ मारि रहल छी, यएह ने जे आनबेर भाँटिनक चारिटा तड़ूआसँ थारीक पारस सजाइ छल, ऐबेर नइ हएत। घर-अँगनामे दीप नइ जरत, तँए आगूओ नइ जराएब?"

पत्नीक बात सुनि चेतन कक्काक चेतन चनचनेलैन, मुदा लगले ठमैक गेलैन। ठमैक ई गेलैन जे बिनु तेल-वातीक दीया केना बड़त! बिनु शक्तिए ज्योति केना अनहारमे छिटकत! अपन के कहए, खाइ-पीबै दुआरे गामेसँ माल-जालक हरण भऽ गेल। केना गोबरधन पूजा करब! परात भने बहिन ऐठाम नैहराक की सनेस लऽ कऽ जाएब? भाव रहितो अभावे अभावक बीच चेतन काका बजला-

"अपन मन हारि कहाँ कबूल करैए। मुदा फेर जिनगी हरण केना भेल?"

कहि पत्नीक ओइ नजैरमे चेतन कक्काक नजैर घुसि दीवालीक दीप जरबए लगल जे सुख-दुखकेँ ओते नै जेते संगे-संग चलैत रहबकेँ महत दैत।



तिथि: 11 मार्च 2015, शब्द संख्या: 1209

बटखौक

पनरह दिनसँ दौड़-बरहाक अन्त परसू भऽ गेल। अन्त ई भेल जे भीमपुरवासी-जीयालालक बेटाक बिआह कल्लापटीक रघुनीक बेटीसँ ठीक भऽ गेलैन। ओना, वंशगत तँ नहि मुदा सामाजिक सम्बन्धे रघुनी 'काका' हेता, जिनका ऐठाम भीमपुरसँ चारि गोरे बिआहक गपो-सप करए औता आ बिआहक दिनो ठेकता। भिनसुरके उखड़ाहामे औता, खाइ-पीबैबेर सँ पहिने चलि जेता, मुदा तैयो चाह-पान-जलखै तँ चलबे करत।

ओना, रघुनी काका किछु कहलैन हेन नै, मुदा समाजक बेटीक बिआह छी नइ किछु जँ एकटा बोलोसँ उपकार भऽ जेतैन तैयो तँ उपकारे भेल। जँ नहियेँ कहलैन तँ नइ कहलैन, बेटी समाजक बेटी होइते अछि तँए अपन छी, जँ नइ छी तँ किए आन गाम गेला पछाइत फल्लाँ गामवाली कहबैए..।

..भिनसुरका काज सम्हारि साढ़े सात बजे रघुनी काका ऐठाम विदा भेलौं। बुझल रहबे करए जे आठ बजे चारि गोरेसँ भीमपुरवला औता।

गमैया लोक जकाँ नै जे जँ औता तँ घन्टा-दू-घन्टा पहिने चलि औता, नइ तँ नहियेँ औता, पछाइत कहता जे बिसैर गेलौं। से नइ, ठीक आठ बजे चारि गोरेक संग जीयालाल रघुनी काका ऐठाम पहुँच गेला। काजक पहिल दिन तँ छी नहि जे पेनीए छनैमे देरी लागत, सभ काज सुढ़ियाएले छैन, मात्र बिआह दिनक बरियातीक

बेवस्थाक विचार करब छैन।

ओना, जातिक हिसाबसँ कल्लापटी घनगर अछि मुदा भीमपुर से नहि अछि। एके दियादीक दस परिवार अछि। तहूमे चारि-पाँच परिवार ओहन अछि, जइमे मात्र बुड़हे-बुड़हीटा गाममे, बाँकी सभ बाहरे रहै छैथ, जे एबे ने केलाह।

दरबज्जापर अबिते आव-भगत शुरू भेल। भिनसुरका समय तँए पहिने चाह-पान चलल। चारि गोरे हमहूँ सभ समाजक लोक रही आ चारू बापूत रघुनियोँ काका रहैथ। ओना, अपन चारू समांग ओरियाने-बातमे लगल रहैन मुदा अपनो रघुनी काका आ हमहूँ सभ कुशल-छेम करैत काजक गपक जिज्ञासा करए लगलौं। पान परसाइते गप-सप्प शुरू भेल। पहिल गप उठल बरियातीक। ओना, बरियातीक विचारक पाछू केते गप अछि जे तँइ करब छैन। जेना गिनतीमे केते बरियाती औता.., तइमे केते सियान-चफलगर आ केते धिया-पुता औत..। अबैक साधन की रहत.., इत्यादि।

ओना, दुनू गामक दूरी बेसी नहियेँ अछि मुदा बिनु सवारीए जात-बरियात जाएबो तँ नीक नहियेँ हएत। खाइ-पीबै आ रहैक बेवस्था इत्यादिपर गप-सप्पकेँ अन्तिम रूप देब अछि। ओना, रघुनी कक्काक अपन विचार रहैन जे गप-सप्प करैमे समैये केते लगत चलितो-चलितो, माने विदा होइतो फरिछा लेब। तैबीच जँ पहिने खा-पी लेता तँ ओकर दोसर प्रभाव हएत। मुदा से नइ भेलैन। चाह-पान होइते बिआहक गप उठि गेल। दू भैयारी आ दूटा भातीजक संग जीयालाल रहैथ, तहूमे भैयारीमे जेठ रहने, तीनू समांग माने दुनू भातिजो आ छोट भाइयो मुँहमे ताला लगौने। असगरे जीयालाल वक्ता, जेकर समर्थन तीनू गोरे केनिहार..। केते गोरे बरियाती औता मूल प्रश्न छल। मूल ऐ दुआरे जे खेनाइ-पीनाइ, रहनाइ आ गाड़ी-सवारी इत्यादि अहीपर निर्भर करैए। ओना, भीमपुर नमहर गाम,

सभ जातिक लोक गाममे। मुदा एक-दोसरमे तेना घेरा-घेरी जे आन जाति आन जातिक बरियाती किए जाएत आकि सराधेक भोज किए खाएत। जाति खेने श्राद्धक भोज भेल आ जातिक एने-गेने कुटुमैती-बरियाती भेल।

..ओना, समाजोक बीच आ सम्बन्धी सबहक बीच एहेन सम्बन्ध सूत्र तँ रहबे कएल अछि जे दिनानुदिनक परिवारक काज जखने नमहर हुअ लगैत अछि तखने दोसराक खगता होइ छै, जइले गामो-समाज आ सरो-सम्बन्धीक सहयोग सेहो होइते आबि रहल अछि। ओना, एक गाम रहितो, आने गाम जकाँ भीमपुरोक चालि-ढालि। चालि-ढालि ई जे जहिना आन गाममे स्कूलिया-कौलेजियाक जे बिआह होइए तइमे माता-पिताक सर-समाजक संग सर-सम्बन्धीक सम्बन्धक संग एकटा नव सम्बन्ध जरूर स्थापित भेल जा रहल छै, मुदा एकरा पाछू एकटा बिमारियो तँ बढ़िये रहल अछि, जे बिआह-दानक खर्च बढ़ि रहल अछि।

ओना, बेटा-बेटीक बिआहक पाछू माता-पिताक ईहो मनसा रहैत जे जात-बरियातकेँ मनोनुकूल सुआगत करिऐन, मुदा मनोनुकूलताक सीमे समाप्त भेल जा रहल अछि। मूल प्रश्न अछि दू गामक दू परिवारक बीचक जे दूटा बेटा-बेटी अछि ओकर स्थायी सम्बन्ध स्थापित करब। ओना, मनुक्ख विचारशील अछि तँए विचारक रस्ता चलि विचारवान बनैक छै जइसँ मनुक्खक संग मनुक्खक घर (परिवार) आ घरक (परिवारक) संग परिवारक समूह (समाज) सेहो विचारशील बनि चलत। मुदा आने गाम जकाँ जीयालाल असगरे सभ दियाद माने एक जातिक दसो परिवार बंगलोरमे रहैत, बाँकी गौंआँ मुम्बइ, कोलकाता, आसाम, दिल्ली इत्यादिमे रहैत, जइसँ समाजो हटले। तहूमे जीयेलाल कोन बंगलोरसँ आबि समाजक बेटा-बेटीक बिआहमे संग दैत जे भीमपुरबला

जीयालालकेँ देत। मुदा तँए कि जीयालालक बेटाक बिआह नइ हएत, सेहो तँ नहियेँ अछि। जेकरा जुड़ै छै से पचासटा गाड़ी आ पान साए बरियातीक संग बेटाक बिआह करैए आ जेकरा कम छै ओ एकोटा गाड़ी आ पाँचोटा बरियातीक संग बिआह तँ करिते अछि। एकर माने तँ ईहो नइ ने हएत जे जेकर पचासटा गाड़ीमे बरियाती गेल, ओइ लड़का-लड़कीक (बर-कनियाँक) बिआही-सम्बन्ध अधिक सक्कत भेल आ एकटाबलाक कम सक्कत भेल..।

बरियातीक बात उठबैत जीयालालकेँ पुछलयैन-

"केते बरियाती आएब?"

जीयालाल अपन उदारता देखबैत बजला-

"जेते अहाँ सभ भार देब।"

जीयालालक बात सुनि गुम भऽ रघुनी काका दिस तकलौं। रघुनी काका मुड़ी ने नीक जकाँ उठौने आ ने नीक जकाँ खसौने, तिरछिया कऽ सभ दिस देखैत रहैथ।

रघुनी काकापर नजैर पड़िते बुझि पड़ल जे मने-मन विचारि रहल छैथ जे दू साए बरियातीक मांग करता तँ एक साए कहबैन जे डेढ़ साएपर तँइ हएत। अखुनका डेढ़ साए बेसी नइ भेल, सहरगंजा भेल। मुदा समाजक आशामे मुँह बन्न केने रहैथ। समाजक बुढ़ो-पुरान सभ बैसले रहैथ, तँए आगू बढ़ि किछु बाजब उचित नै बुझि सिंहेसर बाबा दिस देखए लगलौं जे ऐठाम तँ वएह सिरजन छैथ, ओ जे बजता तेकरे समाज होइक नाते सुनब आ ओइ पक्षक विचार सुनि बीचमे ऊपर-नीचाँ, कम-बेसी करैत एक सीमापर काजकेँ ठाढ़ कऽ देब। मुदा जे प्रश्न सामनेमे आबि खसल छल ओकरा ढील-ढाल देखि बिच्चेमे जीयालालकेँ कहलयैन-

"केते दिनसँ बंगलोरमे रहै छी।"

जहिना आन नोकरिहाराक मनमे उमकी रहैत तहिना जीयालालोक मनमे उमकी रहबे करैन। शहरमे रहै छी दरमाहाक संग उलफी आमदनी, नीक होटलक संग नीक सवारीक सुविधा सेहो। बजला- “ओना, अपने पचीस बर्खसँ मुदा परिवार बीस बर्खसँ संग रहए लगल अछि।”

पुछलयैन- “केते परिवार गामक एकठाम रहै छी?”

जीयालाल- “ओना, अपना गामक अपन जे जातिक दसो परिवार अछि ओ सभ बंगलोरेमे रहैए। गामक दोसर जातिक नइ रहै छैथ जँ रहबो करैत हेता से जानकारीमे नइ अछि।”

पुछलयैन- “दसो गोरे एकेठाम रहै छी?”

जीयालाल- “नइ, बहुत हटि-हटि कऽ रहै छी।”

जीयालालक बात सुनि एक संग मनमे अनेको प्रश्न उठि गेल। उठि गेल ई जे जैठाम भाषाक दूरी एते अछि जे जिनगीक सभ किरिया-कलापक रस्ता बन्न केने अछि, तैपर खाइ-पीबैक सेहो दूरी अछिए। जे रहबो सोभाविके अछि। सोभाविक ई जे मिथिलांचलक मौसम आ बंगलोरक सालो भरिक मौसम एक रंग नइ अछि। जे से ओइठाम जे खान-पान अछि, ओहने भेलापर ओइठाम जीब सकै छी, नइ तँ रंग-बिरंगक बर-बेमारी गरसित करत। तैसंग काजक पद्धति बदलने अंगक संग बुधियोक पद्धति बदैलते अछि, मुदा सभ किछु रहितो पहिल दिनक मुँह-भिरानीमे एहेन बोल उचित नइ, तँए चुप भऽ गेलौं। हमरा चुप होइते जीयालाल बजला-

“बरियातीमे मात्र नअ गोरे गामक आ बारह-तेरह गोरे कुटुम छैथ, माने कुल मिला एकैस गोरे बरियाती आएब।”

ओना, रघुनी काकाकेँ बरियाती झुझुआन बुझि पड़लैन, किएक तँ पैछला बेटीक बिआहमे अढ़ाइ साए बरियाती आएल रहैन,

मुदा बजला किछु ने। तइ बिच्चेमे सुन्दर काका बजला- “बरियातीक खानो-पानक विषयमे किछु कहैक अछि?”

जीयालाल भातीजकेँ इशारा दैत बजला- “बौआ, अखैन कोनो बात खोलि कऽ बाजह, बरियाती तँ तोहीं सभ ने रहबह।”

चालू-पुरजा इनदेसर अछिए। बाजल- “हम सभ माछ-प्रिय छी तँए माछ खेबे करब! पीबैले बोतलक इंजाम काका अपने दिस रहए दियौ।”

शराब-माछ सुनि समाजक बीच गुन-गुनी शुरू भेल। गामक सभ वैष्णव। ने माछ खाइत आ ने शराबक नाओं सुनने। जीतन काका बजला- “गामक बेसी गोरे वैष्णवे छैथ, हमहूँ वैष्णवे छी। ओना, माछमे बहुत बेसी पौष्टिक गुण छै मुदा ओ तँ छी देहा-देहीक। जहिना सब रंगक माछमे सब रंगक पौष्टिक तत्व छै, जेकर जरूरत लोकोकेँ सभ रंग छइ। मुदा भोज-काज तँ दस गोरेक बीचक होइए। तैसंग ईहो जे खरचो बहुत बेसी होइए। तँए माछ खाइले नइ देब। गामोमे अखन धरिक जे चलैन अछि तेकरा आगू भऽ कऽ तोड़बो उचित नइ हएत।”

आँगन दिससँ स्त्रीगण सेहो हल्ला करैत- “दुनियाँमे जेते बेटी छै, तेते बेटो तँ छैहे। नइ करब एहेन कुटुमैती।”

सएह भेल। चारू गोरे जीयालाल बिनु जलखै केने ओतएसँ विदा भऽ गेला।



तिथि: 14 मार्च 2015, शब्द संख्या: 1272

पसेनाक धरम

जहिना अंग्रेजक जून मास काल्हि समाप्त भेल तहिना अपन जेठ मास सेहो ओरानीपर आबि गेल। पैछला साल जे दुर्गापूजामे हथिया नक्षत्रक बर्खा भेल, तहियासँ एको बून पानि मेघसँ नै खसल। ओना, मघाइर बर्खा भेने जाड़ो किछु बेसियाइए जाइए, मुदा सेहो नहियेँ बेसियाएल। तइसँ जाड़क दुख तँ कनी कमबे कएल मुदा रब्बी-राइकेँ लाही चाटि गेल!

हथियाक पछाइत आठ माससँ अकास धरतीकेँ सरकारी राशन जकाँ पानि बन्न कऽ देलक। जइसँ रंग-रंगक विचार धरतीपर उठऽ लगल। कियो बजैत जे रौदी हएत, तँ कियो कहैत आगूसँ रौदी भेने थोड़े रौदी हएत आ जँ पाछूसँ मेघ फाटि बर्खो हुअए आ बाढ़ियो आबए तखन रौदी कहबै आकि दाही? तहिना कियो ईहो कहैत जे कालियो दास अखाढ़सँ बर्खा-मेघक आगमन मानै छैथ तखन रौदी केना भेल?

मुदा तेतबे थोड़े अछि, केम्हरो कमला पूजा तँ केम्हरो पानिक यज्ञ तँ केम्हरो रौदी भगबैले रामधुन-अष्टयाम-नवाह तँ केम्हरो मनुखदेवा गहवरमे पूजो अनधुन हुअ लगल।

जे भेल कि नइ भेल मुदा एते तँ भेबे कएल जे हथियाक बरिसल, माघक गुजरल फागुनक मोजर रौद आ पछिया हवामे तेना झड़कल जे आमे अलोपित भऽ गेल।

चारि बजे भोरेसँ शिवपूजन काका काजमे लगता तँए साढ़े

तीनियेँ बजे नीन तोड़ि उठि, प्रभात कर्मसँ निवृत होइत चाह बना पीब घड़ीपर नजैर देलैन तँ चारि बजैत देखलैन। पत्नीकेँ सोर ऐ दुआरे पाड़लैन जे ओ जगि कऽ तैयार भेल छैथ कि नइ, मुदा सुगियो काकी पतिक कोठरीक खट-खुटक आवाज सुनि तैयार भऽ गेल छेली। तैयारो केना ने होइतैथ, काल्हि साँझूए पहर तीनू गोरे एकठाम बैस विचारि नेने छला जे पराते बीघो भरि खेतक चास लगाएब।

गोरहा खेत छी ओतबो जँ सम्हैर कऽ उपैज जाइए तँ बुतातक साल-माल लगिए जाइए। तहूमे कि आब लोक पहिलुका जकाँ दुनू साँझ भात खाइए, एकसंझू भेने अदहे साल ने भेल। जेठ अखाढ़क सीमा परहक समय छी, माघ मास थोड़े छी जे लोक आठ बजेक पछाइत काज दिस ताकत। अखैन तँ चारि बजे भोरेमे फरीच हुअ लगै छइ। काजक अनुकूल समय तँ बनियेँ जाइ छइ। तहूमे काजो नमहर अछिए। बीघा भरिक चास। एक दिस पहिने खेत पटत, तखन कदबा हएत तहिना दोसर दिस बीआ उखाड़ल जाएत, तखन ने कदबाक पछाइत रोपल जाएत। जेरगर जनकेँ जोड़ियबैयोमे समय लगिते अछि। तेतबे किए! दमकलसँ पटौल जाएत, ट्रेक्टरसँ जोतल जाएत, दुनू लोहे-लक्कठ भेल, जँ कोनो पाट-पुर्जा गड़बड़ेतै तँ काजे रूकि जाएत।

ओना, सुगिया काकीकेँ बुझल रहैन जे अँगनाक काज पुतोहुक हाथे अपने सम्हारऽ पड़त। तेतबे नइ जँ कहीं पुरुख-पातर खेतेक काजमे ओझरा जेता तँ पानि-जलखै सेहो खेत पहुँचबऽ पड़त। तँए भोरेसँ जलखै-खेनाइक ओरियानक पाछू जारैन-काठीक व्योँत-बाँत मने-मन सुगिया काकी करिते रहैथ तखने शिवपूजन काका पुछलखिन-

“बौआ उठल? चारि बजि गेल। घटही गाड़ी जकाँ जँ शुरूएमे लेट भेल तँ टीशने-टीशन लेट होइते जाएत।”

भिनसुरका समय तँए सुगिया काकीकेँ पतिक बोल नीक लगलैन। नीको केना ने लगितैन, कौआ जकाँ थोड़े पति बाजल रहैन, काग जकाँ कुचड़ल रहैन किने। मुदा काजक मोड़पर तेना सुगिया काकी पड़ि गेली जे किछु करैत किछु ने बनै छेलैन। मोड़ ई जे सोनेलाल खा-पी कऽ नबे बजे रातिमे पितासँ छिप कऽ ऑरकेस्ट्रा देखए चलि गेल छल जे पौने चारि बजे आपस आबि ओछाइनपर पड़ले छल कि उठबैक आदेश पतिक भेलैन। ओना, सुगिया काकीक अपनो मन घिरनी जकाँ नचैत जे चारि बजेमे दमकल चलत तखन ने कदबा बेरमे कदबा हएत आ रोपै बेरमे खेत रोपाएत। कहुना-कहुना तँ सात-आठ घन्टा खेत पटैमे लगत। एक तँ गोलगर खेत तैपर जेठुआ जरल सेहो अछि। तहूमे कि फूलक छीच्चा छी, आकि तीमन-तरकारीक जैड़पनियाँ छी, कदबाक पटौनी छी किने, जइमे कहुना तँ भरि घुट्ठी पानि लगौल जाएत। तँए ओहो समय खिंचबे करत।

पत्नीक उत्तर नहि पाबि शिवपूजन काका कनी कड़ैक कऽ दोहरबैत बजला- “की कहलौं, नइ सुनलिऐ?”

पतिक दहकैत आवाज सुनि सुगिया काकीक नजैर नचलैन। नचिते मनमे एलैन, एक दिस पति परिवारेक नीक-ले आफन तोड़ि रहला अछि, दोसर दिस ई छौड़बा किए भरि राति जागि कऽ गमा लेलक..! आब ओ सुतत आकि जगि कऽ काज सम्हारत। अखैन जे ओकरा उठबऽ जेबै तँ ढोँढ़ साँप जकाँ फुफकार छोड़त..! जँ नइ उठेबै तँ अपने आरो बेसी दहकता! ऐ परिस्थितिसँ निबटब केना..? परिस्थितिसँ वैचारिक दौड़मे निपटियो सकै छी मुदा काजक जे जाल पसैर गेल अछि, माने रोपनिहारकेँ कहि देने छिऐ, जे अपन समांगक गलतीसँ ओकर काज बाधित हेतै! कहुना छी तँ पेट-बोनियाँ छी, भरि दिन थाल-पानिमे लेटाएत तखन जा कऽ बाल-बच्चाक संग दुनू

साँझ खाएत। अपनो परिवारमे जेते जोड़ि-बन्हन कऽ नेने छी, माने दमकल चलैक ओरियान, खेत जोतैक ओरियानक संग जलखै-चाहक ओरियान, ओहो तँ राइए-छीती भऽ जाएत..! मने-मन साहस बटोरि सुगिया काकी सोनेलालक कोठरीक मुँह लग जा ठाढ़ भेली। केबाड़ बन्न रहने बाहरेसँ बजली- "बौआ, बौआ सोनेलाल?"

कनी पहिने सुतल सोनेलालक मोनमे ओहिना ऑरकेस्ट्राक सीनो सभ आ गीतो-नाद नचिते रहै जइसँ नीन गहराएलो नहियेँ छेलइ। मुदा माइक बोलकेँ अनसुन करैत सोनेलाल हँ-हूँ किछु बजबे ने कएल। जइसँ सुगिया काकी केबाड़ लग ठाढ़ छेली। ने आगू ससैर पति लग जाइक साहस होइ छेलैन आ ने बेटाकेँ जोरसँ दबारि उठबैक साहस होइन। एक तँ ओहुना भोरुका समय छी, शीताएलमे केतौ अगियाएल दौड़ै..।

शिवपूजन काका पत्नीकेँ कहला पछाइत, पत्नीएपर नजैर रोपि लेलैन। रोपि ई लेलैन जे काजक दौड़मे जँ काजक सूत्र मनसँ ससैर जाएत तखन तँ काजो ओही लाथे ससरऽ लगत। जइसँ काज या तँ भरियाएत या ओझराएत। पत्नीक क्रिया-कलाप देखि शिवपूजन कक्काक मन ठमैक गेलैन। जैठाम ठमकलैन तहीठाम ठाढ़ सेहो भऽ गेलैन। तँए मिसियो भरि आगू-पाछू नइ डोललैन। असथिर भेल दरबज्जाक मुँह लग ठाढ़ भेल पत्नीपर आँखि गरौने रहलैथ। मुदा नजैर घूमि कऽ काजक बीच सीमानपर आबि अँटैक गेलैन। अँटैक गेलैन ई जे कियो पसेना चुबा श्रम करैए आ कियो श्रमसँ छिटैक श्रमचोर बनि जाइए जे मेहनतक पसेनाक धरम नै बुझि, श्रमहीन बनि जाइए। एना किए एक्के मनक दुनू क्रिया भऽ जाइए? क्रिया तँ कर्मक अनुकूल चलैत अछि, कर्म चलैत अछि विचारानुकूल, आ विचार चलैत अछि धर्म-धारणक अनुकूल। माने जे जेहेन जिनगीकेँ धरम बुझि धारण करैए..।

..मुदा लगले मन नाचि गेलैन जे पसेनाक धरम की? जहिना एक-बट्टी, दू-बट्टी, तीन-बट्टी, चरि-बट्टी, पँच-बट्टी लग पहुँच अपन जीवन यात्राक पथ जखन कियो देखए लगैए तखने ने देखैए जे पसेना तँ ओ शीतल बून छी जे कुवृत्तिकेँ धोइ जेते बढ़ैत जाइए से तेते धोइत-धुआइत अपन धरम धारण करैए। से कहाँ सोनेलालमे देखि पाबि रहल छी? धिया-पुता जकाँ जेना कोनो धनियेँ-ढेकार ने छै, तहिना बुझि रहल अछि! जीबैले जीबैक उपाय सेहो तँ करए पड़ै छइ। से कहाँ देखैमे आबि रहल अछि..!

विचारैत-विचारैत शिवपूजन कक्काक मन अपन औझुका काजमे ओझरा गेलैन। ओझरा ई गेलैन जे जे गर्भे नाश भऽ जाएत ओकर जिनगीक आशा केते कएल जाए सकैए। फेर मन घुमलैन, जून मासक अन्त भऽ गेल, जइ बीआकेँ बीस-पचीस दिनक बीच रोपैक छल, ओ अदहा मइमे छीटने छेलौं, जेकरा आइ डेढ़ माससँ बेसी भऽ गेल, जे समय ओकर वृद्धिक छेलै, तइमे अदहा समय ओहिना चलि गेल। जाइक कारण भेल बर्खाक आशा-आशी देखब।

जहिना शिवपूजन काका दरबज्जाक मुँहपर ठाढ़ भेल घड़ी दिस देखि-देखि निराश भऽ रहल छला, तहिना सुगिया काकी सुतल बेटाकेँ देखि-देखि उतरीत भऽ रहल छेली। मुदा दुनूक मनक प्रश्न अन-उतरीत छेलैन। उतरीत तँ केलाक पछाइत भेलापर होइ छइ। निराशमे आस भरैत शिवपूजन काका सुगिया काकीकेँ कहलखिन-

“सोनेलाल सुतले अछि! चारि बजि गेल! अखैन जँ ओकरा चरिया कऽ नइ उठाएब तँ ओ सुतले रहि जाएत।”

अपन मनक बात खोलैत सुगिया काकी बजली-

“भरि राति अरकेस्ट्रा देखै छेलै, अखैन जँ उठेबो करबै तँ काजमे भकुआएले रहत।”

‘ऑरकेस्ट्रा’क नाओं सुनि शिवपूजन कक्काक मनमे उठलैन, अखन तँ खेती-बाड़ीक समय छी, कोनो उत्सवक समय तँ नहियेँ छी, अखुनका उत्सव तँ सभसँ पैघ खेती-बाड़ीक भेल। तहूमे काल्हि साँझूए पहर काजक सभ व्योँत लगा नेने छेलौं, तखन किए एना केलक। बजला-

“जखन औ काजक सभ व्योँत बुझल छेलै, तखन किए देखऽ गेल। जँ गेबो कएल तँ घन्टा-दू-घन्टा देखैत आ आबि कऽ सुति रहैत, जइसँ काजमे बिथुत नइ होइतै।”

मुदा सुगिया काकी चुपचाप पतिक बोल बेटा निविते सुनि रहल छेली। कोनो उत्तर नै छेलैन। छेलैन सिरिफ एतबे जे आँखिक ज्योति झूकल छेलैन।



तिथि: 16 मार्च 2015, शब्द संख्या: 1263

जेठुआ गरदा

लूरिपुरा गाम काजे जाएब रहए, जेठ मास भोरुए पहर गामसँ विदा भेलौं। कनी बेसी दूर रहने जेठुआ गरदाक धुरखेलमे पड़िए गेलौं।

जमुना धारक ओइ पार लूरिपुरा गाम अछि, जइ गाममे दुरवासा काका आ दुरदिनी काकीक घर सेहो छैन। हुनके ऐठाम जाएब रहए। ओना, अखुनका हिसाबे हमरो गाम कोनो बेसी हटल नहियेँ अछि, किएक तँ देखबे-सुनबेटा नइ, घर बैसल पाँचो मिनटमे कोन-कोन देश आ केतए-केतक लोकोसँ गपो होइए आ सवारियो तेते फड़ि गेल अछि जे हजार कोसक कोनो महते ने अछि, चाह-पान पीबै-खाइले, गामक चौक-चौराहा जकाँ लोक आनो-आनो देश जाइते अछि। तैठाम साते-आठ कोस हटल गाम, जेतएसँ पाँच बजे भोरे पएरे विदा भेलौं। मुदा बरह-बजिया विर्ड़ोओ आ जेठुआ गरदोमे पड़िए गेलौं। एक तँ ओहिना केतए-कहाँसँ आएल पछबा हवाक झोंकी जे ठाम-ठाम खेतोमे आ रस्तोपर मोइन फोड़ि रहल अछि माने जहिना पानि चकभौर लैत धारमे मोइन फोड़ैए तहिना हवाकेँ सेहो फोड़ि विर्ड़ो-दानो भइये जाइए।

एक तँ अहुना धारऽ-कातक गाम, तैपर बलुआहा रस्ता, केतौ धँसल, केतौ टुटल तँ केतौ बगलक खेतबलाक कोदारिक छाँटल, तँ केतौ अड़कन-मड़कनक ढेरीसँ घेराएल। ओना, लूरिपुरासँ पाछूए, माने दस बजेक करीबमे डेढ़-दू कोस पाछूएसँ ओहन रस्तासँ भेँट

भऽ गेल मुदा रौदो आ हवोक ओहन तेज गति नहियेँ आएल छल तइसँ टपैमे बेसी बाधा होइत, मुदा जमुना धारक किनछेर लग पहुँचैत-पहुँचैत जेठुआ धुड़खेलसँ भेँट भइये गेल। ओना, केतबो धुड़खेलक हवा-विहाड़ि किए ने रहए, मुदा मनमे ईहो बिसवास तँ बनले रहए जे जैठाम काज अछि ओहो लगिचाइए गेल अछि। होइतो अहिना छै जे रस्ता केहनो गड़ूगर किए ने टपऽ पड़ए मुदा अपन गनतव्य स्थानपर पहुँचते मन खुशीसँ खुशीआइए जाइ छइ। से आशा मनमे रहबे करए। जमुना धार टपिते एकटा चौड़गर रस्ता जे लूरिपुरा होइत पछिम मुहेँ दूर तक गेल अछि। गामो तेहेन घनगर नहियेँ, मुदा धारक कातक जेहेन गाम होइ छै, तइमे कमियोँ नहियेँ रहइ। काठक पहियाक गाड़ी, बरद बहलमानक बले चलिते अछि। जइसँ गामक रस्ताक कोनो दशा बाँकी नहियेँ छइ। एक तँ बलुआहा माटि तैपर केतौ खाधि तँ केतौ रस्ता-कातक पानिक कल लग खच्चा, मुदा किछु छी तँ गामक सार्वजनिक सम्पैत कहियौ आकि सरकारी सड़क, छी तँ वएह। मुख्य सड़कसँ एकपेरिया फुटल रस्ता, ओना, टोले-टोल सेहो एकपेरिया फुटले अछि, ओही रस्ता कातमे दुरवासा कक्काक घर। बारह बीतैत-बीतैत दुरवासा काका ऐठाम पहुँच गेलौं।

आने गाम जकाँ लूरिपुरोबला सभ रंगक काज अपना-अपना विचारे अपना-अपना लूरिए-बुधिये अपन-अपन करिते अछि। अपन-अपन सबहक काज तँए केकरोसँ केकरो मतलब बेसी किए रहतै। मतलब तँ बेसी ओइठाँ होइ छै जइठाँ एक रंगक काज वा दसगरदा काज होइ छइ। दुरवासा काका दुरदिनी काकीक किसान परिवार, तीन-चारि बीघा खेत, पाँच गोरेक परिवार, शहर-बजारक तँ जिनगी नहि, जे काजो समटल रहतैन। किसानी जिनगी तँए काजो घर-अँगनासँ लऽ कऽ खेत-खरिहाँन धरि पसरल छनिहेँ। ओना, देखा-

देखी लूरिपुरोबला आने गामबला जकाँ गाइयो-महींस पोसैत, खेतियो-पथारी करैत आ धारेकातक गाम जकाँ कारोबार आ सवारियो तँ रखनहि अछि। रस्ता-पेरा दुआरे- माने धार-धूरक इलाका रहने- इंजिनक गाड़ियो आ इंजिनक कारोबार नहियेँ तेना भऽ कऽ पकड़ने अछि मुदा थोड़-थाड़ पकड़ने तँ अछिए।

एक गाममे रहितो दुरवासा कक्काक विचारो अपन आ काजो अपना ढंगक छैन। अपना ढंगक काज ई जे दुनू परानीक बीच पँचनामा बँटवारा तँ परिवारक काजक नहि, मुदा परम्परासँ चलि अबैत बेवहारक अनुकूल काजक सीमांकन छनिहेँ। एकर माने ई नइ जे, एक-दोसराक सहयोगी संगी नइ छैथ। रहबो किए ने करता, काज चाहे जिनका सिरे होइ मुदा छी तँ परिवारेक काज, जे दुनू परानी नीक जकाँ बुझितो आ करितो। मुदा एते तँ मने-मन रहबे करैन जे जे-जे काज जिनका सिरे अछि ओ ओइ-ओइ काजक जवाबदेह भेला, आ परिवारक दोसर-तेसर ओइ काजक सहयोगी भेलौं, तँए वैचारिक मतभेदक प्रश्नक जड़िए ने केतौ अछि।

आन जकाँ परिवारमे केतौ गुमा-गुमी नहि जे, कियो केकरो काज बुझबे ने करत। पोखेरक पानि जकाँ जेहने घाट परक तेहने जाइठ लगक..।

..अपना ढंगक जिनगी तँए दुरवासा काका गाममे रहितो गौंआँक संग केतौ हटि, केतौ सटि आ केतौ-केतौ हटि-सटि कऽ अपनो चलि रहला अछि आ परिवारो चलि रहल छैन। हटल केर माने भेल जे जैठाम नोकरियो आ बहरवैयो अपन खेतमे ओहन-ओहन बोन-झाड़ लगौने छैथ, जेकर (लकड़ीक) पाइक मोल तँ अछि मुदा फल-फलहरीक मोल नहि अछि। मुदा से नै दुरवासा काकाकेँ बिसवास बनल छैन जे बच्चाकेँ माने विद्यार्थीकेँ कागज-कलम किताबक खगता तँ ऐछे, मुदा केहेन लिखनिहार-पढ़निहारकेँ केहेन

कलम कागज आ केहेन किताबक खगता अछि, ओइ अनुकूल ओकरा हेबा चाही। ई नइ जे बचकानी बच्चाकेँ हजार रुपैआबला कलम आ आन-आन देशक डिजेनगर किताब दऽ दिऐ। एहने सोच रहने गाममे शीशो-सखुआ-सागवानक बोन सेहो अछि, आम, कटहर, लताम, बेल, धात्रीक बोन सेहो आ दारीम, नेबो इत्यादिक झाड़ो अछिए।

दुरवासा काकाकेँ दूटा बेटा, विलास आ विकास। ओना, विलास जेठ, विकास छोट अछि मुदा दुनू नबालिके। जहिना सभ परिवारमे बालिक भेने बेटा पिताक विचारमे अबैत आ नबालिक रहने माइक विचारमे रहैत तहिना दुरवसो कक्काक रहलैन।

ओना, ऐ-बेरक भोँटर लिस्टमे नाओं आबि गेने विलास बालिक भऽ गेल मुदा पिताक बात-विचारमे नइ ऐने पिताक नजैरमे विलास नबालिके छल, तँए कोनो काजक भार दुरवासा काका विलासकेँ नइ देने। ओना, लाजक पच्छे बुझू आकि लूरिक पच्छे, कनी-मनी विलास पितोक संग काजमे पुरिते अछि, मुदा बात विचारमे माइयेक संग बेसी रहैए। प्रश्न तँ परिवारमे जटिल ऐछे जे जैठाम पिताक मन दूर देशमे बसव छेलैन तैठाम माइक मन दूर-दिन बीताएब छेलैन।

हवाक झोंकमे किसान परिवार सभकेँ खेती करैले बैंक-कर्जक घोषणा केलक। घोषणा ईहो केलक जे जेकर नाओं भोँटर लिस्टमे आबि गेल, ओकरा कर्ज भेट सकै छइ। ओना, ऐ बातक घोषणाक भनक दुरवसो काकाकेँ लगलैन, मुदा अपन समटल खेती, समटल लूरिक संग समटल श्रमक संग चलिए रहल छैन तँए बैंकक लौनक खगता नहियेँ बुझि पड़लैन। संगे मनमे ईहो रहबे करैन जे माता-पिताकेँ पार-घाट लगा कर्ज चुकाइये चुकल छी, पत्नी कोनो करजे ने

भेली, तखन बँचल बेटा-बेटीक कर्ज। सेहो तँ ओकाइत भरि कइये रहल छी, किछु दिनक पछाइत ओहो सधिये जाएत। तखन अनेरे जे देश-विदेशक कर्जा लऽ कऽ अपनो आ अपन लूरियोकेँ जे कर्जखौंक बना देब से उचित नहि। पसिन्न लोककेँ अपन-अपन होइ छै आ विचार अपन-अपन चलै छै..।

मुदा परिवारमे भीतरिया रोग पैसि गेलैन। भोँटर लिस्टमे नाओं ऐने अपनाकेँ बालिक बुझि विलास खेतीक नाओंपर लौन उठा टी.वी. कीनि लेलक..!

..बैंकसँ लौन उठा विलास बजारेसँ टी.वी. कीनने दोसर-तेसैर साँझ घर आएल। घरपर आबि माएकेँ कहलक-

“माए, टी.वी. कीनिलौं हेन।”

जहिना सभ माए, बेटा-बेटीकेँ नीक खेनाइ, नीक कपड़ा-लत्ता, साज-श्रृंगार देखि खुशी होइत तहिना दुरदिनी काकी सेहो भेली। अपना संग पड़ोसियो-पड़ोसनीकेँ टी.वी. देखैक हकार बिलैह एली। एके-दुइए देखनिहार अबऽ लगल जइसँ रातिक दस बजि गेल। दुरवासा काका अपन दिनचर्यानुसार अपनेमे घुरियाइत सुति रहला, जइसँ बुझबे ने केलैन।

भोरे-भोर दुरदिनी काकी टी.वी. नेने दुरवासा काकाकेँ देखबऽ गेली। टी.वी. देखिते जेना दुरवासा कक्काक नरसिंह एँड़ीसँ टिकासन चढ़ि गेलैन। मुदा प्रभातवेला दुआरे मुँहमे ताला लगौने रहला।

ओना, आँखिक रंग दुरवासा कक्काक कारीसँ ललौन हुअ लगलैन, मुदा जहिना लोक अपन लहूक घोँट अपने पीब लइए तहिना दुरवसो काका पीबैत बजला-

“ऐसँ नीक रेडी होइतै, जइमे बात तँ सब ऐबतै मुदा अनकर

रंग-रूप नइ देखने अपन रंग-रूपमे समटल रहैत।”

पतिक विचार सुनि दुरदिनी काकी बजली किछु ने मुदा मन कलहैन्त गेलैन।



तिथि: 18 मार्च 2015, शब्द संख्या: 1103

हँसीएमे उड़ि गेलौं

जहिया साते बर्खक रही तहियेक बात छी। फागुन मास रहै, धुमसाही लग्न चलैत रहइ। एक तँ ओहिना लोकक संख्या बढ़ने काजमे बढ़ोतरी भेल तइसँ जे काज बेसियाएल से धुमसाही, मुदा तेतबे नइ रहै बाढ़िक आगम सुनि जहिना लोक नून आ दिया-सलाइ कीनि-कीनि अपन काज अगुआ कऽ रखैए, तहिना बैशखाक लग्न मलेमासमे पड़ि गेने लग्नोक काज अगुअबऽ लगल जे काजक धुमसाहीकेँ आरो बढ़ा देने रहै, तैपर बिआहक संग दुरागमनोक दिन आ अगता उपनैनो आ मूड़नोक लग्न धुरझाड़ पछिया हवा जकाँ चलैत रहइ।

लग्न देखि जेना हमरो लगन जागि गेल हुअए तहिना भेल। सभकेँ बिआह करैत देखिऐ तँ हमरो मनमे भेल जे जँ कहीं ऐ साल बिआह नइ भेल आ लड़की सधि जाएत तखन तँ हमर बिआह..। आम-मौह जँ पुजबे करब तँ की ओ घरवालीक भाँज पुरौत?

ओना, अपना गाए नइ रहए, मुदा गइवरबा सबहक संगमे बुधना बाबाक खिस्सो आ महराइयो सुनऽ बेरूपहरमे चलि जाइ।

तीनटा गाए बुधना बाबाकेँ रहैन, ओकरे चरबऽ ओहो जाइ छला। खसल बाध, उपजा वाड़ीक दरस नहि, बाधमे सभ चरबाह अपना-अपना गाएकेँ चरैत छोड़ि दइ आ साहोरक गाछ लग सभ बुधना बाबाकेँ चारू भरसँ घेरि बैस खिस्सा सुनै छेलौं।

जहिएसँ लाटमे गेलौं तहिएसँ बुधना बाबापर बिसवास बनले

रहए। खिस्सा कहला पछाइत बुधना बाबा सभकेँ पुछैत रहथिन जे केकरा केहेन लगलौ। जेकरा जेहेन लगै से तेहेन बजै। सरंगाक खिस्सा सुना आइयो पुछि देलखिन-

"की रे, तोरा सभकेँ खिस्सा नीक लगलौं?"

मुदा हमरा जेना फौगनहैट हवा लगि गेल रहए तहिना चारू दुनियाँ हरियरीए देखिऐ। तही समय, कनी हटि कऽ रस्ते-रस्ते शहनाइबला एकटा बरियाती जाइत रहै, ओकर आवाजसँ कान सेहो भरैत रहए, तखने हमरो पुछलैन- "की रे बेलबा, तोरा नीक लगलौ?"

हमरा तँ तेहेन मन घुमैत-घुमैत भऽ गेल जे बकारे ने फुटए। मुदा बाबाक प्रश्नक उत्तर नै देबैन सेहो केहेन हएत, मुड़ी डोलबैत उत्तर देलिऐन। बाबा हमरा उत्तरसँ पिनैक गेला। बजला- "रे धीमरा, तोरा मुँहमे बोल नइ छौ।"

जे सोचि बाबा बाजल होथि मुदा हमरा माने लगल जे ओ धिक्कारि रहला अछि। हुकनर खिस्सा नजैरसँ हटि अपन अगुआ गेल। कहलयैन-

"बाबा, सबहक बिआह भेल जाइ छै, हमर कहिया हएत?"

आन बुढ़ जकाँ बाबाकेँ मिसियो भरि तामस नइ उठलैन, तामसो केना उठितैन तीन सोरेसँ बेसी बिआह करौने छैथ। मनमे भेलैन जे आनक देखा-देखी ईहो परिवार बना परिवारमे रहए चाहैए। कहलैन-

"देखि बेलबा, जुग-जमाना उनटल जाइ छै, लोक सभ हिप्पीबला बर आ कोठाबला घर ताकि-ताकि बिआह करैए, तहूँ परदेश चलि जो, हिप्पी बना कऽ आ गऽ, तखन तोरो बिआह हेतौ।"

बाबाक विचारकेँ गीरह बान्हि आँगन आबि बाबूकेँ कहलयैन-

"तूँ दुनू गोरे तेतबे कमाइ छह जे कहुना-कहुना दिन-राति कटि जाइ छह। तइसँ कोठाबला घर हेतह? इन्दिरा आवास जे भेटबो करै छै सरकारी, सेहो घराड़ी दुआरे देतह? हमरा एते-एते केते गोरे परदेशमे कमाइए, हमहूँ जाएब।"

बाबू किछु ने बजला मुदा आश्वासन दैत माए बजली-

"परदेशक कोनो ठेकान नइ छै, कियो करखन्नाबला हाथे बिका जाइए तँ कियो ठिकेदारक हाथे बन्हकी लगि जाइए। तँए आँखिक परोछपर हमरा बिसवास नइए, तूँ नै जो।"

ओना, माइक बातकेँ काटि नै सकलौं मुदा मनक लगन तेते जोर मारि देने रहए जे केतौ नजैर टिकबे ने करए। किछुए दिनक पछाइत पिसियौत भाए संगे पंजाब चलि गेलौं।

मुदा एकोरती पंजाबमे अनचिन्हार जकाँ नइ बुझि पड़ल। जहिना अपना ऐठाम लोक सभ देखिऐ तहिना ओतौ देखिऐ, मनमे एते बिसवास तँ बनले रहए जे अपन गाए नइ ने चरबै छेलौं, मुदा अनको के तँ हाँकिए दइ छेलिऐ। संगे-संग गाइक पाछू जाइतो छेलौं आ ऐबतो छेलौं, ई लूरि तँ अछिए। बड़का करखन्नामे जेकरा एकटा नट-बोल्ट लगबैक लूरि छै ओ बड़का इंजीनियरो भेल मोटका दरमाहा सेहो लइए, आ हमरा तँ गाएकेँ खुऔनाइ-पीऔनाइक सभ लूरि अछि। जेतए चाहब तेतए नोकरी हएत। से गर लागल। एकटा महिला मलिकाइन ऐठाम नोकरी भेल। मुदा ओहो ला-जवाब महिला, कहलैन-

"बेल बन्दा, मन लगा कऽ काज कर, जइसँ हमरो मुँह मिठाएत आ कहैले तोरा साए रुपैआ दरमाहा गछलियौ, मुदा जहिना हमर मुँह मिठेमेँ तहिना तोरो मिठा देबौ।"

पराते भने कहलैन- "ऐठामक लोक केश-दाढ़ीक बड़ शौकीन

होइ छैथ, तोहूँ केशकेँ नीकसँ बना ले।”

अपनो मोन पड़ल बाबाक कहल ‘हिप्पी’। कहलयैन- “चाची, अहाँ अपने चलि कऽ हजामत करबा दिअ।”

मुदा से वेचारी केलैन। बेटे जकाँ मानऽ लगली। अपने लग बैसा जे अपने खाइ छेली, से हमरो पुछि-पुछि खुअबै छेली। हमरापर एकदम दहिन छेली। जखन जे चीज कहै छेलिऐन, दासो-दास भऽ पुरा दइ छेली।

पंजाबमे देखिऐ बरहमसिया लग्न चलि रहए अछि। हमरो मन उधैक गेल, कहलयैन- “चाची, हमरो बिआह करा दिअ।”

जेना हुनको मनमे रहबे करैन तहिना करबैक भार उठा लेलैन। मुदा हम तँ रही कनीयेँटा, ओइठीन तँ नमहरमे बिआह होइ छै, तँए कोनो गरे ने लगलैन।

तीन सालक पछाइत, जहिना छाहमे दाबल कोनो खिदखिदाइत गाछ, छाह हटिते फुड़फुड़ा कऽ तेजीसँ बढ़ैए तहिना अन्नक मारल हमरो खिदखिदाएल देह फुड़फुड़ा कऽ जागल। एगारहम-बारहम बर्खमे मोछ-दाढ़ीक पम्ह आबि गेल। पम्ह देखि चाची कहली- “ऐबेर बेल तोहर बिआह कइये देबो। आब तूँ पुरुख जकाँ जवान भऽ गेलेँ।”

हमर बिआह पंजाबेमे भऽ गेल। कमासुत महिलाक संग। छह मास बीतैत-बीतैत एक दिन सुगन्धा कहलक-

“ऐठाम रहने अहूँ घिनाएब आ हमहूँ घिनाएब तइसँ नीक अप्पन देश-कोस चलू।”

पत्नीक बात हम नइ बुझि पेलौं, मनमे ई रहबे करए जे पत्नीसँ तँ लोक कोनो बात पुछिते अछि। हमरे पुछैमे कोन जमा जिगर चलि जाएत। पुछलिऐ- “की घिनाएब?”

जेना सुगन्धाक ठोरेपर रहै तहिना बाजल- “ऐठाम हमरा लोक सभ दिन गामक बेटीए बुझत, जइसँ मातृत्वक बोध नइ हुअ देत, तहिना अहूँकेँ लोक सासुरवासीए बुझता।”

आगूक बात सुनैक धैर्य टुटि गेल। बिच्चेमे बजा गेल- “जँ महिला रहि अहाँ अगुअबै छी तँ हमहूँ पुरुख बनि अगुआइले तैयार छी, मुदा आगू बुझब सझिया रहल?”

पंजाबसँ अबैक विचार केलौं। मोन पड़ल जे जहिना गामसँ पंजाब गाड़ीमे चढ़ल एलौं आ भोरे-भोर उतरलौं तँ एकेरंग बुझि पड़ल, तहिना पंजाबसँ गामो गेलापर बुझि पड़त। मुदा लगले मनमे उठि गेल जे जखन पत्नी रौद-वसातक चिन्ता छोड़ि गाम चलैले कहै छैथ तँ गामे जाएब। मुदा जे मलिकाइन मुँह मिठबैक बात कहने रहैथ हुनका किए ने मोन पाड़ि देबनि। ऐठाम दुनू परानीक विचारसँ ने रहब, से मलिकाइनो किए ने बुझती। मुदा सुतरल, सुतरल ई जे दस हजार रुपैआ अपना दिससँ दैत मलिकाइन असिरवाद देलैन-

“बेल, जेतऽ रही हँसी-खुशीसँ रही।”

गाम आबि हिया कऽ देखलौं तँ बुझि पड़ल जे गुड़क बजार खाली अछि। एकटा तरपीन मशीन कीनिलौं। दस कट्ठा कुशियारक खेत मनखप लेलौं..।

अपना गुड़ बनबै छी। गामो आ हाटो जा-जा गुड़ बेचै छी। तहूमे जखन माथपर गुड़क चेकी रहैए आ बाल-बोध सभ कियो गुड़बला काका, तँ कियो गरूबला काका, तँ कियो गुरूबला काका कहैए..। तखन तँ होइए जे दुनियाँमे सभसँ नीक हमहीं छी।

बाजपती हाट। बीचक एक पतियानी तरकारीवाली सबहक, आगूक पतियानीमे गुड़बला, तमाकुलबला, हँसुआ-खुरपीबला सबहक पतियानी। एक-दोसरमे उतरा-चौड़ी सबहक बीच होइते,

किएक ने, जखन दस गोरे कोनो रेलबे गाटरकेँ उनटबैकाल एक गोरे आगू-आगू कहलक- “जोर लगौने..।”

तँ दस गोरे पाछू-पाछू कहिते अछि- “हइसा..।”

रविकान्त गामेक अधवयसू, जे बड़ाबाबूसँ सेवा निवृत भऽ गामे रहै छैथ। सभ हाट तीमन-तरकारी-ले अबिते छैथ। तरकारीवाली सबहक बीच, केकरो भौजी, तँ केरो काकी, केकरो सढ़ुआइन, तँ केकरो गामवाली, तँ केकरो सासुरवाली बना सभ बात करै छैथ। तरकारीवाली सबहक मुहेँ सुनि लेने छेलौं जे एहेन लोके छैथ जे सभ कहै छैन मखानक पातसँ मुँह पोछने आउ, तखन समान लेब।

आइ हमरा लग रविकान्त आबि पुछलैन- “कए अने सेर गुड़ बेचै छह?”

खिस्सा तँ सुनने छी जे चारि अने सेर गुड़ बिकाइ छेलै, जे अखैन चालीस रुपैए किलो अछि। अही धोखामे बजा गेल- “मखानक पातसँ पहिने मुँह पोछने आउ तखन गुड़ लेब।”

हमर बात जेना कबौछ जकाँ रविकान्तकेँ लगलैन, बजला-

“तूँ ई कहितह जे अहाँक दर पुरान भऽ गेल, नवका दर चालीस रुपैए अछि। से नै कहि, तूँ किए मखानक पातक नाओं लेलह?”

निरूत्तर भऽ गेलौं। मनमे अपने ग्लानि हुअ लगल, जे ऐ आदमी आकि हाटेपर आँखि उठा देखि पाएब? की हम हँसीएमे उड़ि गेलौं?



तिथि: 20 मार्च 2015, शब्द संख्या: 1243

बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

बच्चेसँ पढ़ै-लिखैक प्रतिभा सुरेन्द्रक जगि गेल। जगिते बागर गहुम वा बागर धान वा बागर तीमन-तरकारीक गाछ वा फल-फलहरीक गाछक रंग-रूप जहिना छिटकैत बढ़ऽ लगैए तहिना सुरेन्द्रोकेँ लिखै-पढ़ैक रंग-रूप छिटकऽ लगल।

ओना, पढ़ैक सुपुट बोलो आ लिखैक सोझ लिखाबटो आनसँ दब सुरेन्द्रक रहै मुदा तैयो बजैक मति (फ्लो) आ लिखैक गति आनसँ अगुआइक परियास करए लगलै। करइये नइ लगलै सीमाक अतिक्रमण करैत आगूओ डेग बढ़बऽ लगलै। अतिक्रमण ई जे जहिना बच्चाकेँ एक दिनक पाठ भेल अक्षरक साँठ आकि अङ्कक खाँत होइए, तइमे समयसँ पहिने अगुआ दोसर सीमामे पैसऽ लगलै।

आने जीव-जन्तुक प्रतिभाक कीड़ा जहिना निम्नसँ निम्नतर होइत आगू मुहेँ ससरैत उठैत-बैसैत अगुआइत उच्चसँ उच्चतर बनैए तहिना मनुक्खोक तँ अछिए। सुरेन्द्रोमे तहिना प्रतिभा उठैत-बैसैत आगू मुहेँ ससरऽ लगल।

ओना, प्रतिभो उठैक सीमा नहियेँ अछि। मुदा जे बच्चेसँ उठैक गुण रखैए ओकर तँ बचपन सीमा भइये गेल, माने वाल्यकाल। जे वस्तु बाले-कालसँ उठैत, फलकैत, फलैतक शक्तिसँ सकबेधल अछि ओकर सीमो केना बनौल जाएत। मुदा एहनो तँ ऐछे जे वएह प्रतिभा केकरो ढेरपन आ केकरो चेतपनमे सेहो फुड़फुड़ा कऽ जगै छइ। जेकरा ढेरपनमे जगै छै ओ ढेरबेसँ कुद-फान करैए आ जेकरा

सिअनपनमे जगै छै ओ चेतपनमे करैत अपसोच करैए जे गेल उमेरिया बीति फुसिये मायामे दाग लगल बड़ भारी कंचन कायामे..।

मुदा तहूमे तँ एहनो लोक छैथे जे बड़ भाड़ीक माने सौंसे जिनगीक हूसलकेँ बुझि शेष बँचल जिनगीकेँ ओइ दाग छोड़बैमे लगा छोड़बैत-छोड़बैत शेष बीतल जिनगीक दाग सेहो छोड़ा सफाइक उपरा उपारजित कइये लइ छैथ। मुदा सुरेन्द्रोमे मिडिल स्कूल अबैत-अबैत एते तँ आबिये गेल रहै जे माए गे माए, चलल नइ जाए। सांकरी गलीमे कंकरी गरत हइ..।

कौलेजमे पढ़ैत सुरेन्द्र बी.ए.क विद्यार्थी। एक दिन हरलै-ने-फुड़लै अपन बक्सा-बक्सी नेने गाम पहुँच गेल। बी.ए.क परीक्षा छह मास आगू हएत। ओना, परिवारक सभ बुझने जे बक्सा-बक्सी लऽ कऽ सुरेन्द्र आएल अछि, भरिसक किछु भेल छै, मुदा पहिने बुड़हा-पिता- किछु पुछथिन। पछाइत ने हम सभ पुछबै। मुदा पिता-रामलोचन-केँ बक्सा-बक्सीक बात बुझले ने रहैन, जखन सुरेन्द्र घरपर पहुँचल तखन रामलोचन लत्तीक फुलवाड़ीमे मचानक बत्ती सेरियबैत रहैथ तँए आँखि कोनाह भऽ कखनो बत्तीक मिलानी करैत, तँ कखनो कोरो-बल्लाक, कखनो साबेक जौड़केँ हँसुआपर, तँ कखनो खाँचक मिलानीक बान्हपर। चौदिस आँखि नइ खिड़ैत रहैन तँए नइ देखलैन।

..ओना, रहैथ दरबज्जेक आगूक फुलवाड़ीमे। मुदा तइमे ईहो रहैन जे दहिना भाग रहैथ, दरबज्जा-अँगनाक रस्ता वामा भाग देने अछि। साँझू पहर जखन सुरेन्द्र दरबज्जापर गोड़ लगिते भेटलैन तखन असिरवादमे रामलोचन पुछलखिन- “बाउ, नीक छी किने?”

मुदा सुरेन्द्रो तँ सुरेन्द्रे, संक्षेपण तक व्याकरण पढ़ि नेने छल, तँए पिताक प्रश्नकेँ पोखेरक वंशीक बोर जकाँ टोनियबैत उत्तर

देलकैन- “हँ।”

ने आगू किछु पिता पुछलखिन आ ने सुरेन्द्रे किछु बाजल। एकेठाम दुनू गोरे चौकीपर बैसल, मुदा मुहसँ कियो ने किछु बजैत। सुरेन्द्र अपन दुनियाँमे वौआइत जे भने कौलेजसँ पिण्ड छुटल, जे पढ़ौनी जिनगीसँ हटि कऽ पढ़ौल जाइए तइसँ हटबे नीक। अपन जिनगी अपने हाथे बनाएब। जखन मुसोकेँ अपन घर बनबैक लूरि छै तखन तँ मनुक्ख रचने नइ रचनाकारो भऽ सकैए। तइले अनेरे जालमे ओझराएल छेलौं।

रामलोचन मने-मन ऐ ताकमे जे अखन ब्रह्मचारीक जिनगीक बीच बेटा अछि। ब्रह्मचारिणी स्वरूपा ढेरो नव खाधि सभ जिनगीमे अबैत हेतै, ई बात तँ हमरो ने सुनऽ पड़त, से वएह बाजत। अही बीच दुनू बापूतमे गुमा-गुमी, चुपा-चुपी। मुदा से रहल नइ, सुरेन्द्रक छोट बहिन आबि बाजल-

“बाबू, भैया रूसि कऽ कौलेजसँ एला अछि।”

जहिना चुल्हिपर धीपल रोटिपकामे चुरुकक पानि पड़िते छन दऽ लऽ उड़ैत तहिना रामलोचनक मन, रूक्मिीणी बात सुनिते उड़ि गेलैन। मनमे भेलैन जे ले-बलैया ई की भेल। ‘हँ’ केना ‘नइ’ भऽ गेल..?

..फेर मनमे भेलैन जे रूक्मिीणीक बात सुरेन्द्रो सुनलक। कहलक ने हमरा बेटी मुदा अपन बातक पूर्वासय तँ सुरेन्दे ने करत। बेटीक नालिसमे ऐछे जे भैया रूसि कऽ एला। केकरासँ रूसि कऽ आएल, जँ पढ़ैसँ रूसि कऽ आएल तखन हम तँ ओकर साती नहियेँ पढ़ि देबै। जँ कोनो संगी-साथीसँ झगैड़ कऽ आएल हएत तँ ओकर निमरजना भऽ सकै छइ। मुदा बाजत तँ सुरेन्द्रे ने..।

..मुदा सुरेन्द्र-ले धनिसन। बजबे ने किछु कएल। ओना, माए-

योगमाया- आँगनमे ठाढ़ भऽ दुनू बापूतक बीचक गप-सप्प सुनऽ चाहै छेली, मुदा चुपा-चुपी रहने किछु सुनि नै पबै छेली। से बात योगमायाक मन नइ कबुल केलकैन। शंका भऽ गेलैन जे कोनो फुसराहट दुनू बापूत कऽ रहला अछि जे सुनि नहि पाबि रहल छी। अपन आँट-पेट दिस तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे ओइ बीच जुड़ैक अधिकारी तँ हमहूँ छीहे। माने पिता-पुत्रक बीचक कड़ी माए होइते छैथ। आगू बढ़ि दरबज्जापर जखने योगमाया पहुँचली तँ अपन शंका निरमूल बुझि पड़लैन। समूल तँ तखन ने होइत जखन दुनू गोरे एक-दोसरक कान-मे-मुँह सटा गप करैत रहितैथ। मुदा से तँ नहि! चौकीक एक सिरापर पति आ दोसर सिरापर पुत्रकेँ बैसल अपनेमे दुनूकेँ मगन देखलैन। चौकी लग पहुँचते योगमायाकेँ दुनूक नजैरक तीर दुनू दिससँ बेध देलकैन। तैबीच अपन नजैर दुनूक मुँहक सेखी आँकऽ लगलैन। मुदा जे सोचि ठमकली से हाथ नइ लगलैन। बिवस्ता व्यक्त करैत पति दिस देखि बजली-

"बक्सा-बक्सी नेने बेटा घर आएल अछि!"

ओना, जी खोलि जँ बजिती तँ आरो बजिती मुदा से नइ जी दाबि कऽ बाजल छेली तँए अदहे-छिदहे बजली। माइक बात सुनि सुरेन्द्र बाजल-

"अपन घरक बक्सा-बक्सी छल, लऽ कऽ चलि एलौं।"

ओना, आगू पुछैले योगमायाक मुँह लुसफुसाइत रहैन मुदा अपन सीमाक उल्लंधन करब उचित नहि बुझि चुपे रहली। रामलोचन सुरेन्द्रकेँ पुछलखिन-

"बौआ, नीक जाँहित तोहर बात नहि बुझि पेलौं?"

जहिना न्यायालयमे धाराप्रवाह लोक अपन विचार रखैए तहिना सुरेन्द्रो अपन पक्ष रखैत बाजल- "लोक डिग्री हाँसिल कऽ

नोकरी-ले पढ़ैए, हमरा ने नोकरी करैक अछि आ ने तइले डिग्री उपार्जन करैक अछि, तँए चलि एलौं।”

रामलोचनक मन सुरेन्द्रक विचार सुनि ओझरा गेलैन। सुरेन्द्रोक विचारकेँ नकारल नइ जा सकैए, मुदा सोलहन्नी मानलो तँ नहियेँ जा सकैए। ज्ञानभूमि तँ विद्यालय, विश्व विद्यालये छी किने। तखन जँ सुरेन्द्र छोड़ि कऽ पड़ाएल तँ ओ अपन विचारक अनुकूल पड़ाएल। मुदा हमरा तँ ओइ भूमिकेँ योगदान करैक अछि। जँ बेटाकेँ सुहरदे मुहेँ फेर घूमि कऽ जाइले कहबै आ जँ कहि दिअए जे हम सप्पत खा कऽ आबि गेल छी, तखन बातक मोले की रहत..। मुदा लगले अपन जिनगीक कर्तव्यकेँ पाशापर रखैत पिता बजला-

“बौआ, बड़ लीलसा छेलए जे बी.ए. पास परिवारमे उपारजन होइतए से..?”

जहिना चिल्होरि उड़िते-उड़िते कोनो चीज धरतीपर सँ लूझि उड़ा लइए, तहिना सुरेन्द्रोकेँ भेल। दावपर चढ़ल पिताक पाशकेँ नचबैत बाजल-

“बाबू, अहाँकेँ बी.ए. पास परिवारमे चाही, से अहाँक केबाड़क चौकैठमे आठ मासक भीतरे टाँगि देब।”

सरस-समरस बहैत धारमे योगमाया आगू बढ़ैत आँगन गेली। मुदा आँगनमे सबहक कान ठाढ़ रहबे करै, एके-दुइए सभ योगमायाक मुँह नोचऽ लगलैन-

“माए, भैया वौसेला किने?”

कुंभ जहिना कुंभकार सिरजैए, तहिना ने कुंभकारो कुंभ सिरजैए। सुरेन्द्रो ओहने रूप बना अपन जिनगी अपन दुनियाँ बसा बास करए लगल। अपन दुनियाँक बाट पकैड़ गाम-समाज देस-कोस, देश-विदेशक बाट धेने सुरेन्द्र अपन जनम धरतीक ओइ

माटिकेँ ओइ रूपेँ रचि लेलक जेकर चानन सिरधर शिरोधार्य हुअ लगल। विदेशी मूलक विदेशी भाषाक अन्वेषी सुरेन्द्रक अन्वेषण करए, गाम पहुँचल। दूधी गोराइ, गाम देखलक। गामक बेवहार देखलक, मुदा भाषाक दूरी दुनूकेँ भागेश्वर ऐठाम पहुँचा देलकैन।

भागेश्वर गामक बीच अंग्रेजी जननिहार। दुनू गोरे (विदेशी आ भागेश्वर) मनुक्खक रूपमे सोझा-सोझी रहैथ, मुदा एक-दोसरमे प्रेमक किछु कमी रहबे कएल। प्रेमक केतेको कारण बीचमे ठाढ़ ऐछे, मुदा से नइ अपना आगू दोसरकेँ कम आंकब, यएह दुनूक मनक दोख। भागेश्वरकेँ विदेशी पुछलकैन-

“सुरेन्द्रक घर?”

‘सुरेन्द्र’ सुनि भागेश्वरक पथरी चमैक गेलैन जे जेकरा बुड़िबकक टाड़ी बुझै छेलौं से केते भारी अछि। जेकरा बताह बुझै छेलौं से केते बुद्धिमान अछि जे तेकरा दुनियाँ देखए लगल। मुदा सभ तरहेँ सम्पन्न रहितो हमरा के जनैए? जँ जनितो अछि तँ कोन रूपमे जनैए? अपने मन धिक्कारैत भागेश्वरकेँ कहलकैन-

“बुड़िबकहा कहै छेलौं आइ ओकरा आगू तँ अपने बुड़िबक छी!”

मुदा लगले जेना चानि चनैक कऽ चमैक गेलैन तहिना मनमे विचार उठलैन। जेकरा बताह बुझै छेलौं, ओकरा कहियो अपना आँखिये गूँह-गोबर घोड़ैत कहाँ देखलिऐ, जहिया देखलिऐ तहिया गोबर माटि घोरि आँगन-घर निपैत देखलिऐ..।



तिथि: 23 मार्च 2015, शब्द संख्या: 1234

हमर बाइनिक विचार

मास दिनसँ गाममे घोल-फचक्का होइत आबि रहल अछि। कियो बाइसम बर्खक बिआहक उमेरपर टिप्पणी करैत, तँ कियो एक सुशिक्षित महिलाक भविसक वृतान्त सुनबैत। इनार-पोखैरक घाट, कल-बोरिंगक घाट, दुआर-दरबज्जा, चौक-चौराहा इत्यादि सगतैर लालमणिक बिआहक चर्च चलैत। केतौ शास्त्रार्थ बजड़ैत जे जहिना बारह बर्खमे ताड़क गाछक जड़ि बन्हाइ छै तहिना ने मनुक्खोमे हएत..?

मुदा मनुक्खो तँ मनुक्खे छी, केतौ कौआ छी तँ केतौ कुकुड़, केतौ हीरामन हंस छी तँ केतौ धोवि-घाटक गदहा। मुदा पोखैरक घाटपर ईहो तँ विचार चलिए रहल अछि जे महिलाकेँ जेते दिनक जनन शक्ति अछि ओइमे सुधार भेने सेहो लोकक बाढ़ि बन्हाएत। संगे ओकर शरीरो सभ दिन शरीर बनल रहत। माने जनन पीड़ा पड़ा निरोग शरीर बनल रहत। मुदा तहूमे तँ बिहंगड़ा भइये जाइए। बिहंगड़ा ई जे कोनो महिलाक समय स्कूल-कौलेजमे बीतैत आ कोनो महिलाक अभावक चलैत विद्यालयसँ बाहर बीतैत..।

प्रश्न अछि जे ओहन जिनगीक सन्तान जे विधवा माए, चाहे विधुर पिता, चाहे खगल परिवारमे पलित-पोषित हएत, आ जे भरल-पूरल परिवारमे, भरल-पूरल केर माने परिवारसँ लऽ कऽ समाजक बीच जे अपन बेवहारक पहचान बनौने अछि, तइमे पलित-पोषित हएत, की दुनू एक्के रंग खिलत-फलत..?

मास दिन बीतैत-बीतैत काल्हि धरिक सभ व्याख्यान माला तर पड़ि गेल, आ लालमणिक बिआह लगलगाउ भेने आइ दोसर पन्ना उनटि गेल। उनटि ई गेल जे लालमणिक पिता- गिरिधर- लालमणिक बिआह तीन लाख नगदपर तँइ केलैन। मास्टरक बेटा एम.ए.मे पढ़ै छैथ, जत्थो-पात नीके छैन, अपना जीविते मास्टर साहैब बेटाकेँ तेहेन घर बना देलखिन जे पोता-पोती धरिक पार-घाट लगि जेतैन। तेते जमा-जिगर छैन जे वएह ने सठतै। आ तैपर अदहा दरमाहा सेहो जीबैत भरि भेटबे करतैन। लालमणिकेँ कोनो अभाव सासुरमे नइ रहतै, तहूमे अपनो तेते हूनरमन्द अछि जे दस गोरेक परिवारक भार कन्हापर उठा चलैत रहत। नगदक लेन-देन लालमणिकेँ मिसियो भरि देह नहि सिहरौलक। ओना, बातक क्रममे गिरधर अपन हूनरक बात बुझैथ मुदा किछु विचारैथ नहि।

नगद-नारायणसँ दुनू परिवारक बीच बन्धन बन्हाएत। तइ बिच्चेमे लालमणि अपन विचारक अड़ंगा ठाढ़ केलक। अड़ंगा ई जे दू परिवारक सम्बन्ध बनि रहल अछि ओइमे हमरे ने पिताक घरसँ ससुरक घर बुझियौ आकि अपन पतिक घर बुझियौ आकि अपन घर, जाए पड़त..।

मुदा लगले लालमणिक मन ठमकलै। ठमकलै ई जे अखन धरिक जे जन्मदाता-पालनकर्ता हमर छैथ, हुनका समक्ष हम अपन बात राखब। हमरा प्रति पिताक विचारक धारणा की छैन सेहो स्पष्ट हएत?

मुदा लगले लालमणिक मन घूमि 'स्पष्ट हएब'पर पहुँचलै। पहुँचते पिताकेँ पुछलक- "बाबूजी, रुपैआ अहाँ गनब, लेता बर पक्ष, हम तँ बीचमे छी। अखुनका- माने बिआहसँ पहिलुका- परिवारक पाइ सासुरक हमरे ने भेल। मुदा, जे जिनगी अखन धरिक हमर रहल ओइ जिनगीक समावेश ओइ परिवारमे केना हएत, से तँ अहींकेँ ने

कहब?”

लालमणिक विचारपर अपन पित्-बलक शक्तिक उपयोग करब गिरिधर अनुचित बुझलैन। मन मन्हुआ गेलैन। मन्हुआएले मनमे विचार उठलैन जे लालमणिक जन्मदते नहि, पिता सेहो छिऐ, तैसंग अपन जे बेवस्थित परिवार बनल अछि तही बीच रहि ने ओहो बी.ए. औनर्स कला-संगीत शास्त्रक बेवहारिक अध्ययन केलक अछि। जइसँ नीक गबितो अछि आ लिखितो अछि। कौलेजमे कोनो साहित्यिक कार्यक्रम होइ छै तइमे साहित्यक दुनू धाराक बीच बहैत जश-सुजश सेहो बनौने अछि। यएह ने भेलै ओकर अपन अर्जित सम्पैत। जँ ऐ सम्पैतक दुरूपयोग होइ आकि दाबि कऽ राखल जाइ, तखन एकरा नष्ट हएब छोड़ि दोसर रस्ते की छै!

मनमे ग्लानि उझकलैन, अपसोचक विचार उठलैन जे जखन पाइए गनि बेटीक बिआह करब, तखन बेटीक अनुकूल परिवार किए ने करी। हूसल काज देखि गिरिधर लालमणिकेँ कहलखिन-

“बुच्ची, उमेरक दोखे नइ, बेवहारक दोखे हम भँसिया गेलौं, मुदा आइ अपना परिवारेमे आँखि फुटल, तँए मन मन्हुआएल अछि।”

पिताकेँ अनुकूल होइत देखि लालमणि मुस्कान भरल मुस्की दैत बाजल-

“बाबूजी, परिवारक सभ मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। जखने आँखि खुजए तखने दिन। अखैन बिआहक बन्धन-सूते तैयार भऽ रहल अछि, समाजमे एहेन-एहेन बरदात केते होइए।”

लालमणिक विचार सुनि गिरिधरक टुटल साँस पुन: प्रवाहित भऽ गेलैन। बजला- “बुच्ची, बेस कहलह जे परिवारक सभ मिलि

विचार करैत चललासँ परिवार नीके नइ नीकोत्तर सेहो होइ छइ। माएकेँ सोर पाड़हुन, अखैन काजक सूत्र बहुत आगूओ नहियेँ बढ़ल अछि। ओना, ईहो तँ देखिते छी जे केते बिआहक मण्डपसँ उठि लड़का बिआहक सूत्र भंग करैत रहल अछि।"

पिताक बहैत धारमे लालमणि पानिक पलारमे हेलैत माए लग पहुँच बाजल-

"माए, बाबूजीकेँ किछु चिन्ता पछाड़ि रहल छैन, तेकर चिन्ता ओ अनेरे करै छैथ। होशियारसँ होशियार आ बेकूफसँ बेकूफ लोक जखन अपन घर बनबऽ लगैए तखन जेते ओकरा डाँड़मे ढौआ रहल ओइ हिसाबे बनबैए। जेकरा जेहेन सकरता रहलै, से तेहेन बनबैए से कनी जा कऽ कहुन चिन्ता नइ करैथ।"

ओना, लालमणिक विचार कानसँ कामिनी सुनै छेली मुदा जहिना कानक ठेकी आवाजकेँ घेरि लैत अछि तहिना कामिनीक कानकेँ पतिक चिन्ता सुनिते घेरि नेने रहैन। लालमणिक संग कामिनी पति लग पहुँचते चनिआएल चाइन देखए लगली। की चिन्ता छैन से तँ वएह ने बजता, अनेरे बीचमे चुल्हि-चिनमारक बात उठा आरो माथकेँ किए भारी करबनि..।

मुदा जहिना माएकेँ बजबऽ गिरिधर लालमणिकेँ कहने रहथिन तहिना दुनू गोरेकेँ आगूमे ठाढ़ होइते बजला-

"परसूका दिन मास्टर साहैबकेँ नगद दइक विचार केने छी, भने बीचमे जे विचारैक अछि से विचारि लिअ।"

चिन्तित पतिक स्वरूप जेना कामिनीक मनसँ कमि कऽ विचारैक बातपर गेलैन। अपन बेथा बेथैत बजली-

"अखन धरि बेटीकेँ सभ किछु केलौं, ओहो केलक आ दुनू संग मिलि सेहो करैत एलौं, मुदा बिआहक पछाइत ओ ओते दूर

हमरासँ चलि जाएत जे ओकर सीमामे हम पएर नइ देबै। मुदा तँए कि मनमे कोनो कुवाथ अछि? नै! आब तँ सहजे लालमणि लोकक बीच मंचपर ठाढ़ भऽ अपन नीक-बेजए बातो सुनबै-जोकर भइये गेल अछि।"

माइक सह पैबते जेना फूलक कोनो पिआसल लत्ती पानि पीबते हरैस जाइए तहिना लालमणिक मन हरैस गेल, बाजल-

"बाबूजी, अविवाहित कन्या कु-मारि कन्या कहबैए तँए हमरा सभठाम एबा-जेबाक अधिकार अछि। अहाँ हुनका पाइ गनैक जे समय देने छिऐन, से अखने फोनसँ कहि दिअनु जे अपना समैपर ओ निसचित आबैथ, हम तैयार छी। ओना, से जँ नइ कहबैन तँ ओ अपना हिसाबे दिन घुसका-फुसका लेता! अपन हिसाब ई जे बैंकक छुट्टी-तुट्टीक मिलानी कऽ लेता किने।"

जहिना कोनो समांगकेँ काज दिस आगू बढ़ैत देखि आनो समांगक मनमे काजक ललक ललकै छै, तहिना बेटीक विचार सुनि गिरिधरक मन ललकलैन। लगले मोबाइल उठा अपना समैपर एबाक आग्रह करैत अपन तैयारीक बात मास्टर साहैबकेँ कहि देलखिन।

तेसरा दिन अपन समैपर मास्टर साहैब एकटा ड्राइवर-भातीज-केँ संग केने मोटर साइकिलसँ तीन बजे बेरूपहर गिरिधर ऐठाम पहुँचला। चीलमक सूर सारमे ड्राइवर भातीज लगसँ ससैर गेलैन, जइसँ अपनो जान हल्लुक भेलैन। जान हल्लुक ई जे भातिजे छी, चीलम पीबैए आ जँ कहीं निशाँमे छीनियेँ-तीनियेँ लेत तेकर कोन बिसवास। ओना, पच्चीस-पचास तँ दइते रहै छिऐ।

चाहक तस्तरी नेने कुमारि लालमणि दरबज्जापर पहुँच मास्टरो साहैबक हाथमे आ पितोक हाथमे चाह धड़ौलक। पिजुआएल मन मास्टर साहैबक रहबे करैन, चाह मुँहमे लइसँ पहिने

बोकरए लगला- “अखनो धरि स्त्रीगणकेँ सोलहो-अना उत्पादित काजसँ..।”

‘काजसँ’ कहि कनी रूकि गेला। रूकिते लालमणिक डेग सेहो रूकि गेल। पाशा बदलैत मास्टर साहैब फेर बजला- “नोकरी-चाकरीक भीर परिवारक स्त्रीगण जँ गेल तँ घरक इज्जते की रहल!”

हाइस्कूलमे संस्कृत-मैथिली विषयक शिक्षक मास्टर साहैब सभ दिन रहला, ओना, होइयो स्कूलक शिक्षक विषयगत आचरण बनबै छैथ, तँए संस्कृत शिक्षक आ साइंसक शिक्षकक जिनगीमे, एक दरमाहा रहितो, दूरी बनि जाइए। गिरिधर चुपचाप बैसल सुनैत रहैथ। हँ-हूँ किछु ने बजथि। ऐ दुआरे जे लालमणि आगूमे अछि, बाजह।

लालमणि बाजल-

“मास्टर साहैब, नोकरी करैक अपनो विचार नइ अछि, तैपर जँ गारजनक रूपमे बजै छी तँ उत्तम विचार। मुदा हमर अपन जे अरजित सम्पैत अछि, ओकर रक्षाक की उपाय हेतइ?”

मास्टर साहैब- “हँ हेतइ। मुदा कोन रूपमे चाहै छी से तँ खुलाशा करए पड़त?”

लालमणि- “तइले ई जगह नहि ओ जगह हएत।”

❑

तिथि: 26 मार्च 2015, शब्द संख्या: 1207

नोकरिहारा

मनुलाल कक्काक जौंआँ बेटाक चर्च समाजमे सदिकाल चलैत रहैए। कहियो दुनू बेटा- टोपीलाल आ पगड़ीलाल-क मुँह-कानक चर्च पोखैरक घाटपर होइत जे एकोरत्ती दुनू भाँइक मुँह-कानमे तल-बितल नइ छै! भगवानोक कारीगिरी अजीव छैन। तहिना गामक चौको-चोकरीपर चर्च होइत जे दुनू भाँइ- टोपीलाल आ पगड़ीलाल- जहिना पढ़ैमे भूत अछि तहिना दुनू ऊपरा-ऊपरी सेहो अछि!

लोअरे प्राइमरी स्कूलसँ दुनू भाँइक बीच पटका-पटकी शुरू भेल। पटका-पटकी ई जे गोटे दिन टोपीलाल गोटे खाँत कि अक्षर विन्यास बेसी सीखि लिअए तँ गोटे दिन पगड़ीलाल। तहिना साल भरिक परीक्षामे सेहो होइत, गोटे साल टोपीलाल पहिल स्थान लऽ लिअए तँ गोटे साल पगड़ीलाल। मुदा तइले माता-पिताक मनमे कनियोँ कुवाथ नै रहैन। कुवाथो किए रहतैन, दुनू अपने छी। तखन तँ दुनियाँमे आएल अछि जे जेते करत से तेते पौत। तइसँ मिसियो भरि मनमे चिन्ता ऊपर नइ उठैन आ ने चिन्तनक क्षण निच्चाँ उतरैन जइसँ सदिकाल दुनू परानी मनुलाल काका अपन दुनू बेटासँ मुदित-प्रमुदित रहिते छैथ।

दुनू परानी मनुलाल कक्काक मनक सदैत खुशीक दोसरो कारण छैन ओ ई जे सोझहामे टोपीलाल रहऽ आकि पगड़ीलाल, मुदा छी तँ दुनू एक्के। अनका-ले जे होउ मुदा माए-बापकेँ तँ मानले

नहि जानल सेहो छनिहेँ। मुदा एकटा अन्तर दुनू भाँइक बीचक दुनू परानी मनुलाल काका आ मोलही काकी सेहो देखि-परेखि रहला अछि। देखि-परेखि ई रहला अछि जे जेना पगड़ीलाल अढ़ेनौं आ बिनु अढ़ेनौं, माने अपने फुड़ने सेहो, किछु-ने-किछु करिते रहैए। सेहो कि कोनो अपने घर-परिवारटा-ले नइ, टोलो आ आनो टोलक लोकक संग ओहिना हिहिआइए, खिखिआइए जहिना परिवारक संग। मनुलाल काका पत्नीकेँ पुछलखिन-

"जहिना दुनू भाँइक बीच मुहोँ-कानक एकरूपता छै, पढ़ै-लिखैक सेहो एकरूपता रहने नगीची छै, तहिना तँ दूरियो ओहिना छैहे ने।"

अपन विचारकेँ परिवारक पर्दाक झलफलीक बीच रखैत मनुलाल काका बाजल छला, मुदा मोलही काकी बिच्चेमे वौआ गेली। वौआ ई गेली जे पिताक विचार तँ सदैत पितृत्वक दिशामे बढ़ै छै, जखन कि रोग-सोग-पीड़ाक अधिक मारि मातृत्वपर पड़ैत अछि। तँए दुनूक धुरीक मिलानी ओइ मजगूतीक संग होइ, जे सदैत चलैत रहए..।

मने-मन मोलही काकीकेँ विचारक विचरणमे चुप होइत देखि मनुलाल काका बजला-

"चुप होइक कोनो एहेन बेर नइ देखि रहलौं अछि जे चुप होइ, जइसँ मुँह बन्न करी। मुदा माता-पिताक गुरुत्व शक्ति जँ समतूल्य नहि रहत तँ ओहो केहेन हएत?"

जइ सीमापर मनुलाल काका बजै छला तइसँ हटि दोसर घाटपर मोलही काकीक मन घुमैत रहैन। जे मनुलाल काका सेहो झाँकि लेला। मनक विचारकेँ मोड़ैत बजला-

"दुनू परानी दुनू भाँइक जन्मदतेटा नहि मतो-पितो तुल्य तँ

भइये गेलिऐ।"

पतिक बात सुनि मने-मन मोलही काकी चौंकली। ओना, चौंकली जन्मदाता सुनि। मुदा अपनाकेँ संयमित करैत मोलही काकी हुँहकारी भरलैन-

"हँ! तेकरा के बाँटि लेत। ओ तँ अप्पन ओहन धरोहर छी जे कियो ने बाँटि सकैए आ ने लाइए सकैए।"

पत्नीकेँ अनुकूल होइत देखि मनुलाल काका बजला-

"आब ते दुनू भाँइ कौलेजसँ पढ़ि कऽ निकलबे करत। बी.ए. फाइनल भऽ रहल छइ। तैसंग भोँटर लिस्टमे सेहो नाम आबिये गेलइ। भेल तँ गोटे साल आउर टपैमे लगतै सएह ने। तइले अनेरे किए चिन्ताक फकीर बनि वौआएब। जानए लूटिनिहार आ जानए कूटनिहार।"

छीक भेला पछाइत जहिना केकरो मन हल्लुको होइए तँ केकरो मन जबदाहो तँ होइते अछि, तइले अनेरे लोक छीकक पाछूकिए वौआएत, जे सर्दीसँ भेलै, कि कफसँ भेलै, नाकमे सुरसुरी लगने भेलै आकि नाकमे खढ़ घोंसियेने, आकि मनमे गुदगुदी लगने गुदगुदाइत छीक भेलै..। बी.ए. पास करिते दुनू भाँइक दू दिशा स्पष्ट भेल। जहिना टोपीलाल प्रशासनिक परीक्षा दिस बढ़ल तहिना पगड़ीलाल अपन विचारानुकूल आगूक जिनगीमे पग पाग-पगड़ी बनि डेग उठौलक।

ओना, जहिए दुनू भाँइक प्रवेश राजनीति शास्त्रक औनर्समे भेल तहिए जेना दुनूक मनमे धक्का लागि धकियबैक विचार उठि गेल। टोपीलालक मनमे उठल जे प्रशासनिक पदाधिकारीक जिनगी बनाएब। नीक विद्यार्थी रहबे करए, तँए बड़ पैघ आराधनो नहियेँ भेल। अनुकूल भेल। सङ्कल्पित भऽ पुरौल जा सकै छइ।

पगड़ीलालक मनमे रहै जे प्रशासनिक पदाधिकारी बनैक जे शिक्षा पद्धति छै, माने अधिकसँ अधिक विषयक जानकारी, तइसँ कोनो विषयक जड़ि नहि पकड़ा पबैत। मुदा राजनीति शास्त्रक औनर्सक विद्यार्थी रहितो पगड़ीलालक विशेष झूकाउ राजनीति शास्त्रपर। नोकरीक प्रति धारणा बनि गेलै जे नोकरीक लेल एकेटा जगह अछि, ओ छी, जेतए हमरा सन नोकरक जरूरत छै, जे केकरो केने थोड़े भेटै छै, ओ तँ भेटै छै नोकरीक ट्रेनिंग केने। राजनीति शास्त्रसँ पगड़ीलालकेँ बेसी सिनेह। सिनेह ऐ दुआरे नइ जे कोर्सक किताबमे सभसँ मोटगर किताब राजनीते शास्त्रक अछि, सिनेह ऐ दुआरे जे राजनीति विषय ओहन सरोवर छी जइमे रंग-रंगक घाटो बनल अछि आ तीर्थयात्री सभ स्नानो करिते छैथ। आ एकठाम माने एक विषयक अन्तर्गत अरस्तू-प्लेटो लगसँ जखन इतिहास भेटिये जाइए, तैसंग प्रागैतिहास सेहो भेटिये जाइए तखन फुटा कऽ अनेरे इतिहास पढ़ब। जखन राजा विक्रमादितक शासन बेवस्थासँ रामराज तकक, जैठाम दैहिक-दैविक-भौतिक ताप मुक्त छल तैठाम तकक।

तहिना दुनियाँक सभ देशक संविधान सेहो कोर्समे ऐछे, जखन शासन बेवस्था पढ़ब तखन ने बुझबै ओइ देशक आमद-खर्च केहेन छै आ लोक सभ केहेन छै आ ओकरा सबहक जिनगी केहेन छइ।

ओना, जहिना टोपीलालकेँ अपनापर बिसवास रहै जे प्रशासनिक अफसर जरूर बनब तहिना पगड़ियो लालक मनमे नचिते रहै जे जखन अनकर नोकरी नइ करब अछि तखन अनेरे ओइ दिस तकबे किए करब। जखन सभ दिन ई धरती नव जीवनक संचार करैए, तखन अनेरे अनका जिनगीकेँ खोइध-खोइध खोभ बनाएब ठीक नहि। अपन जिनगीक अपन नोकरी अपने हाथमे रखि चलब पगड़ीलाल शुरूहेसँ अड़ैजैत आबि रहल अछि। हाइए स्कूलक अवस्थासँ पगड़ीलाल, माता-पिताक जे आदेश होइ छेलैन तेकरा

पुरबैत दरबज्जापर दस रंगक फुलेक गाछ रोपि वाड़ीमे लत्ती-फत्ती लगा फुलवाड़ी पसारैक लूरि पगड़ीलालकेँ भऽ गेल। तँए अपन धान-गहुम लगसँ हिसाब बैसबैत फल-फलहरी, तीमन-तरकारी, दूध-दहीक हिसाब अपना हाथमे आबि गेने जिनगी फ्री भऽ जाइ छइ। जे पगड़ीलाल खेलते-धुपिते सीखि नेने छल। खेलैक-धुपैक माने भेल विद्यार्थीक पहिल काज पढ़ब भेल। तैबीच जे अपन जिनगीक बाट खोधिया कऽ खोजि लइए वएह ने खोजी भेल। दुनियाँमे ऐसँ बेसी बुझबे की करब। दुनियाँ सभ दिनसँ रहलै आ सभ दिन रहतै, मुदा के की खुनलक आ खुनि कऽ तकलक आकि नै तकलक से तँ ओ जानए मुदा पगड़ीलाल, कखनो नमहर पगड़ी तँ कखनो छोट मुरेठा बान्हि हाथ-पैरकेँ तना-उतार बना जिनगी आ जिनगीक बाट खुनैक पाछू वौअए लगल।

पगड़ीलाल सेहो प्रशासनिक अफसर बनए, जइसँ भैयारीमे सेहो समरूपता रहत, तइले टोपीलाल अपन बुझाएबसँ हारि मानि माता-पितासँ सेहो कहबैक परियास केलक। मुदा माए-बाप अपन पूर्ति होइत अभिलाषा, जे दुनू बेटाकेँ स्नातक बना, अपने दुनू परानी काशी बास करब। अनेरे कोन मायाजालमे लटकल रहब। मुदा तैसंग ईहो प्रश्न तँ मनमे रहबे करैन जे समतुल्य बेटा अपनो विचार किए ने करत। टोपीलाल नोकरीक जिनगी शुरू केलक आ पगड़ीलाल अपन नोकरी अपने करैत अपन जिनगीकेँ खुनि-खुनि खोजै पाछू लगि गेल।

समय बीतल। आइ पाँचम पीढ़ीक सीढ़ीपर जहिना टोपीलाल अस्सी बर्खक जिनगीमे झूलि रहल छैथ तहिना पगड़ियो लाल अस्सी बर्खक जिनगीक सीढ़ीपर झूलि रहल छैथ। मुदा की ओइ झूलाक आश एके रंग अछि? जैठाम पगड़ीलालक पचासो समांगक बीच मिलल-जुलल जिनगी आ मिलल-जुलल कारोबार छैन। जैठाम जे

रहैए तहीठाम ने भैयारीक विचार आगू दिस बढ़बैत अपनाकेँ बढ़बैए। मुदा टोपीलालक परिवार छेहा नोकरिहारा परिवार बनि यत्र-तत्र छिड़ियाएल छैन। जइसँ दुनू भाँइक बीच केतेको बर्खसँ बोला-चाली, आवा-जाही सभ बन्न भऽ गेलैन। मुदा अस्सी बरख पुरला पछाइत जेना दुनूकेँ जिनगीसँ निचेनी एलैन तहिना टोपीलाल अस्सीअम साल-गिरहपर बधाइ दैत पगड़ीलालकेँ कहलखिन-

"भाय साहैब, दुनियाँमे केतौ रही जीबैत रही।"

टोपीलालक शुभकामनाक धैनवाद पगड़ीलाल दिअ चाहै छल कि मोबाइलक नेटवर्क कटि गेल, टाबर हटि गेल।



तिथि: 26 मार्च 2015, शब्द संख्या: 1146

घसवाहि

जुड़शीतल पाबैनसँ तीन दिन पहिने मटिखोबहामे ऊपरसँ दरारि फाटि धसना खसनेसँ गामक चारि गोरे कुमारि ढेरवासँ लऽ कऽ अधवेसू बुढ़िया धरि तरमे पड़ल, जइसँ चारू गोरे मरि गेल।

माटिक तरमे जाबे जीवित छल ताबे अपन जिनगीक केलहा काज सभ मोन पड़ल छेलइ। लगमे रहबे के करै, जे अपनो बात कहितै आ ओकरो बात सुनितै। मटिखोबहाक घटना ने कोनो एक गामक छी आ ने एकबेरक छी, एकरो नमहर इतिहास, मिथिलांचलमे रहल अछि।

सभ गामक अपन जीबैक साधन छै आ जीबै-मरैक इतिहास छै, मुदा जैठाम लोककेँ थूक फेकैक फुरसैत नहि छै, तैठाम अनेरे पान खाएब बुड़िबकीए हएत किने। घटना सुनि सौंसे गाम गम-गमा गेल। बाट-घाट, रस्ता-पेरामे लोकक दौड़-बरहा बढ़ि गेल आ रस्ता-बाटपर घटनाक समीक्षो हुअ लगल। कियो कहैत-

“भुतनी काकीकेँ ऐ उमेरमे कोन भूत चढ़ि गेलैन जे बुढ़ाड़ीमे मटिखोबहा गेली!”

कियो बजैत-

“पावनिक मिरगी चढ़ि गेलैन जे आगि-पानिक भीर तँ नहि, मुदा चिक्कनि माटिक मटिखोबहामे तँ गेबे केली किने।”

अनुकूल समय पाबि सोनमा काका मने-मन अपन तामस

घोंटऽ लगला तँ सात-आठ माससँ पत्नीपर जे दाँत पीसैत आबि रहल छला सएह अगुआ कऽ ऊपर एलैन। समैयक अनुकूलतामे अनुकूल मौसम बनिते चीनियाँ काकीकेँ सोर पाड़ि कहलखिन- “सात-आठ माससँ मनाही करैत आबि रहल छी जे घसवाहि छोड़ू, से अहाँ थोड़े मानै छी। जँ अदहो-अदही पनचैती करब तैयो अहाँ सालक छओ मास हमर बात सुनलौं कि माननलौं?”

एक तँ ओहिना गामक अनुकूल मौसम, अनुकूल ई जे गामक बच्चा बच्चा मटिखोबहाक घटना पाछू लागल। कियो मिडिया बनि परचार करैमे तँ कियो ऊपरमे दाबल माटिक चखानकेँ छोट-छोट गोला बना गुड़का-गुड़का कात करैमे। कियो अस्पताल तँ कियो बजार दौड़-धुप करैमे। एकमुहरी गामक लोक समाज-सेवामे लागल, तँए केकरा एते पलखैत छै जे सोनमा काका आ चीनियाँ काकीक बीचक कहा-कहीक पाछू समय लगौत। जे बात सोनमा काका बुझै छला जे गामक लोक या तँ घर-अँगना छोड़ि सड़कपर चलि गेल अछि या घटना स्थलपर, तँए लगमे कियो सुननिहारो तँ नहियेँ रहल जे सुनबो करत। पति-पत्नीक बीचक बात छी किए कियो आन सुनत। मुदा लगले फेर भेलैन जे हमरे बुझने कि सभ बुझैए। अँगना-घरक टाटमे भूर करि कऽ लोक दुनू परानीक गपक कनसोह लैत बात बुझिये जाइए किने।

एक तँ ओहिना गामक घटना सुनि चिनियाँ काकी मन्हुआएल छेली तैपर पतिक सेवाक चूक आरो मनकेँ घोर-मट्ठा कऽ देलकैन। घोर-मट्ठा होइते चीनियाँ काकीकेँ ओ दिन मोन पड़लैन जइ दिन गाममे बाढ़ि एने छाती भरि पानिसँ घास आनि खुटापर लछमीक सेवा करैत एलौं। माने गाइक सेवा केलौं आ करैत आबि रहल छी। कोन अधला काज करै छी जे मनाहियोँ करै छैथ दोखो लगबै छैथ। मुदा फेर गामक घटना दिस मन बढ़लैन, चारि गोरे माटिक तरमे दबि

मरल अछि। ओ तँ चारू महिले छी, पुरुख तँ एकोटा ने छैथ। मन थकमकेलैन, हो-न-हो एहने चालि-प्रकृति तँ हमरो ने अछि..।

..अपन मनक खोदमे चीनियाँ काकीक विचार लगले रहैन आकि जहिना विषनाशक हरदीक हत्थामे, विषैला फड़ सेहो बनियेँ जाइए तहिना अपन धँसैत विचारक सीढ़ीपर एकटा पौना भेटलैन। ओ भेटलैन जे जखन पतिक सभटा विचार आकि गप आकि आदेश मानि चलिये रहल छी, तइमे भऽ सकैए गोटे जानि कऽ आकि अनजानमे अवहेलना भइये गेलैन, तइले एहेन बात किए कहलैन जे सालक अदहो साल हमर बात नइ सुनै छी, नइ मानै छी..।

साहस बटोरिते चीनियाँ काकीक मनमे दोसर बात धब-दे खसलैन। खसलैन ई जे एकबेर जना देलौं आकि एकोबेर नइ जनेलौं। से तँ नइ भेल। तँ ई की भेल? मन जेना कबुल करए लगलैन जे भरिसक बदमासी लोक एकरे कहै छइ। मुदा लगले फेर हवा पीअल साँप जकाँ आकि गोबर सुंघौल मुसरी जकाँ चीनियाँ काकीक मन फुड़फुड़ेलैन। फुड़फुड़ाइते फुलाएल फूल जकाँ हँसी फुटलैन। बजली- “एक तँ ओहुना पति-पत्नीक बीच अदहा-अदहीक सम्बन्ध अछि तैपर जँ अहाँ कहै छी जे अदहो साल हमर विचार नइ मानै छी, तँ लिअ मानि गेलौं, हमरासँ चूक भेल। मुदा अहीं कहू जे अहाँक अदहा सालमे हमरो हिस्सा हएत किने, अपन हिस्सामे अपना मने केलौं, तइमे अहाँक की विगैड़ गेल आकि बिगाड़ि देलौं, जे दोखी बनबै छी?”

अपन तर्कक साहस चीनियाँ काकीक मनमे रहबे करैन, जे अनुमान सोनमा काकाकेँ सेहो भेलैन। होइते अपन जिनगीक नमहर इतिहास मनमे नाचि गेलैन..।

आइसँ बीस बरख पूर्ब सोनमा कक्काक बिआह चीनियाँ

काकीक संग भेल छेलैन। ओना, कट्ठा दसेक जोतसीम जमीन आ कट्ठा डेढ़ेक घराड़ी रहैन। चीनियाँ काकी साते-आठ बर्खक छेली तहिएसँ घसवाहि करैत आबि रहल छैथ। बिआह तँ बच्चेमे भेल रहैन, मुदा दुरागमन सोलह-सतरह बर्खक अवस्थामे भेलैन। दुरागमनक विदाइकाल एक संग दुनू गोरे- समैध आ जमाए-कैँ चीनियाँ काकीक पिता दुनू हाथ जोड़ि कहने रहथिन-

"एकटा नाँगैर, माने बाछी तरे बिआएल गाए, आ ओकरा सेवा करैले एकटा घसवाहिनी दइ छी। घसवाहीक लूरि चीनियाकेँ अछि तइसँ अपन दिन-दुनियाँ खेप लेत।"

वएह गाए सोनमा कक्काक परिवारमे नारियल आ ताड़क गाछ जकाँ थैर बान्हलक। समय बीतल, सोनमा कक्काक माइयो आ पितो दुनियाँ छोड़लैन। पीढ़ी बदलल, सीढ़ी बदलल। बोनिहार परिवार ओहन किसान परिवार, माने दस कट्ठा जोतबला, सेहो बनल रहल जे बोनिहारो आ किसानो छल।

देखो-देखी तँ दुनियाँ चलिते अछि। अपनो गाममे आ आनो गाममे किछु दुधारू गाइयक आगमन भेल। माने किछु गोरे पोसलैन। जे दुनू परानी सोनमो कक्काक नजैरमे ढूकलैन। ढूकलैन ई जे जखन डेढ़ कट्ठा घराड़ी अछि तइमे किए ने आरो बास चाकर बनाबी। बाधमे जे दस कट्ठा खेत अछि, ओइमे सँ जँ दू कट्ठा बेच लेब आ बँचल आठो कट्ठामे जँ घासक खेती करब, तँ तीन-चारिटा गाए किए ने पोसि लेब। विचार बढ़ने मनमे बल जगलैन।

ओना, दुनू परानी मिलि कऽ विचारो केलैन आ साल भरि पहिने दूटा दुधारू गाए कीनि, सेवामे सेहो लगल छैथ, जइसँ जिनगी अपना भरे चलि रहल छैन।

आठो कट्ठा खेतमे खल लगा मौसमक अनुकूल, घासक खेती

अपने करै छैथ। अपन घासक खेती केने आइ धरिक, माने पैछला खाँढ़क गाइक सेवा धरिक, काजक जे परम्परा चीनियाँ काकी अपनौने छेली, तेकरे मनाही सोनमा काका सात-आठ माससँ करैत आबि रहल छेलखिन।

घसवाहिनी जेरक संग, गामक एक बाध, दू बाधक संग चारूबाध घूमि-घूमि घासो छीलैक, खिस्सो-पीहानी सुनैक आ गपो-सप्प करैक जे अभ्यास चीनियाँ काकीकेँ लगि गेल छेलैन, ओ आदत अपना खेतमे घास रहितो छूटि नहि पाबि रहल छैन। मुदा दालि दू फाँक रहितो एकठाम केना सटल रहैए। ऊपरसँ देखलापर कियो ओकरा एक छोड़ि दू कहत..। जे से मनकेँ मोड़ैत, समटैत सोनमा काका कहलखिन-

"हमरा गपक कोनो बेसी आइन-पीड़ा नइ करू, के पति पत्नीसँ प्रेम नइ करऽ चाहैत अछि आकि पत्नीए पतिसँ प्रेम नइ करऽ चाहैए, मुदा दुनूक बीच दुनूक मन ने करामाती करैए।"

पतिक बात सुनिते जेना चीनियाँ काकीक मन अलिसए लगलैन। मुदा तैयो हफुआइत बजली-

"घसवाहि छोड़ैले कहै छी ते बड़बढ़ियाँ..?"

'बड़बढ़ियाँ'क पछाइत जेना चीनियाँ काकी ऐगला बात बिसैर गेली तहिना अदहेपर चुप भऽ गेली। सुढ़िआइत पत्नीक विचारमे अपन विचार घोड़ैत सोनमा काका मनक घोड़ापर चढ़ि दौड़-बरहा करए लगला। गम्भीर होइत चीनियाँ काकीकेँ कहलखिन-

"आँखि मूनि ओंघेने नइ हएत, निरारि-निरारि देखऽ पड़त।"

जहिना भकुआएलकेँ जगौलापर फुफकार छुटै छै तहिना चीनियाँ काकी बमछैत सोनमा काकापर छुटली-

"अहींक आँखिटा निरारि-निरारि देखैए आकि सबहक?

बदाम, केराउक छीमी जकाँ सबहक पटे निपटैए!”

ओना, चीनियाँ काकीक मन कड़ुआएल जकाँ सोनमा काकार्कें बुझि पड़लैन मुदा सक्कत बदाम आकि सक्कत केराउ जकाँ नहि बुझैमे एलैन। बुझैमे एलैन जे एक तँ ओहुना खिच्चा छीमी हुअए आकि खिच्चा बात-विचार, दुनूमे कनी-मनी मिठाँस रहिते छै...; बजला-

“देखियौ, कोनो फसलमे घसवाहि कमठौन भेल, जे खेतीक प्रक्रियाक एक अंग छी, मुदा वएह आनठाम घसवाहियेटा भेल। जखन अपना गाएले अपन घासक खेती अछि, तखन किए घसवाहि करैत घसवाहिनी बनल बाधे-बाध वौआइत रहब। जखन अपने अछि तखन किए ने गृह बान्हि गृहवासिनी बनब?”

पतिक विचार सुनि चीनियाँ काकीकेँ नूनोमे चीनी भेटऽ लगलैन। भेटबो केना ने करितैन, मीठ नोन दालि, मीठ नोन तीनम-तरकारी आदि सभसँ तँ भेँट-घाँट होइते रहै छैन। बजली किछु ने मुदा जहिना आँखि, तहिना मुँह आ तहिना मुँहक संग सौंसे देह पुलकि उठलैन।



तिथि: 28 मार्च 2015, शब्द संख्या: 1213

तेतर भाइक कविता

विष्णुपुरमे पुनाह जकाँ पहिल बेर काव्य गोष्ठी हएत। आइ धरिक इतिहासमे केतेको बेर ब्रह्मोस्थान, शिवालैयो आ खास-खास दुआरो-दरबज्जापर भागवत कथा होइत आबि रहल अछि। केतौ सात दिनक केतौ नअ दिनक तँ केतौ एक पनरहियाक, माने एक पखक। तहिना उत्तमचन नाटकसँ लऽ कऽ लोरिक-सलहेस, अल्हा-रूदल, शीत-बसन्त, मजदूर-किसान नाच सेहो होइत आबि रहल अछि। ओना, अल्हा-रूदलक नाचो होइत आबि रहल अछि, आ महराइक रूपमे ढोलकक संग गवाइत सेहो आबिये रहल अछि। तेतबे नइ पन्नालालक संग भौर-बेलाहीक नौटंकीसँ लऽ कऽ उमाकान्त–नाटकक संग गमैयो कलाकारक नाटक सेहो होइते आबि रहल अछि। तहिना वृन्दावनक रासक संग रामलीला सेहो होइत आबि रहल अछि।

ओना, गामक विद्यालय नहि, गामेमे पहिल बेर काव्य गोष्ठी हएत। किछु कवि बाहरसँ औता, बाँकी दर्जनोसँ ऊपर गामसँ लऽ कऽ अड़ोस-पड़ोस गामक सेहो रहता। अड़ोस-पड़ोस गामक खाली कवियेटा नहि गीतकारो आ संगीतकारो सभ रहबे करता। तेतबे किए, गामो आ आनो गामक तुकबन्दी फकड़ा-फुकड़ी गढ़निहारसँ लऽ कऽ दृष्टिकूट गढ़निहारक संग सुननिहारोक संख्या जमगर रहबे करत। बहरबैया कवि सबहक कविता-पाठ पछाइत हएत, पहिने गौंआँ-घरूआसँ शुरू हएत। ओना, गौंआँ-घरूआ आ अड़ोसिया-

पड़ोसियाक बीच ई तालमेल बैसबऽ पड़त जे एकबेर गौआँ तँ दोसर बेर अनगौंआँ फेर गौंआँ फेर अनगौंआँक पाठ हएब नीक रहत। जे से सबहक बीच सामंजस बनबए पड़त।

समयसँ पहिने सुननिहारसँ मंच सजि गेल। जे से कविता पाठ होइसँ पहिनहि हँसियो-ठट्ठा आ पीहकारियो शुरू भेल। पीहकारियो तँ पीहकारीए छी, कखनो पीपहीक स्वरमे मन मोहैत तँ कखनो पपीहाक स्वरमे कण्ठ फाड़ैत तँ कखनो टिटही जकाँ टिटकारी भरैत अछि। तहूमे सबरंगा सुननिहारोक संख्या बेसी रहने आरो एके संग सभ चलैत। ओना, गामक काव्य गोष्ठी छी तँए पुनाहोत्सवक रूपमे नइ पान तँ पानक डण्टियो लऽ कऽ आराधना नइ करब तँ अपनो पाप-पुन केना कटत। तँए कविता लिखब शुरू केलौं।

कोनो-कोनो लड़ी तुकबन्दी आ कोनो बिनु तुकबन्दीए बारह पाँतिक एकटा कविता तैयार केलौं।

समाजक बीचक कार्यक्रम छी। ओना, जँ समाजक बीच बसल समाजमे जँ फुटा-फुटा, अपना-अपना अनुकूल गोष्ठीक आयोजन होएत तँ ओ बेसी नीक। बेसी नीक ई जे किसानक बात किसानकेँ नहि कहि वेपारीकेँ आ वेपारीक बात नोकरिहाराकेँ कहबैन तँ ओ छुछे दालि पीअब हएत। वृन्दावनक नाओंपर कोन बोन-झाड़ लगि जाएत तेकर ठेकान नइ। अमबोनी लगत कि जमबोनी तेकरो बुझब कठिन भऽ जाएत। यएह सभ सोचि-विचारि बारह पाँतिक कविता लिखने रही। बरहमासाक धुन दैत छहमासा, चौमासा होइत चैतीपर उतैरते मन सिरसिरा गेल। सिरसिरा ई गेल जे ने नोनछराह भेल आ ने नोनगरे, नोनगरे किए कहू जे मधनोनो ने भेल। मुदा मन गवाही दैत रहए जे नोनगर नइ भेल तँ नइ भेल, मीठनोन नइ कहबै सेहो तँ नहियेँ भेल। वएह मीठनोन कविता लऽ कऽ गोष्ठीमे पहुँचलौं।

काव्य गोष्ठी शुरू होइते तेसर नम्बरमे तेतर भाइक कविता हेतैन आ चारिम नम्बरमे हमरो हएत। ओहन कवि तँ बनि नहि सकलौं जे मंचेपर गढ़ब आ सस्वर पाठो करब आ सबालो-जवाब करब। केते दिने दइवे-सइवे तँ बारह पाँतिक कविता लिखलौं। सेहो केहेन हएत केहेन नइ। ओना, गोष्ठीक पहिल दुनू कविता स्कूलक बच्चा सभ पढ़लैन तँए अनुशासित ढंगक कविताक भाव रहैन। तेसर नम्बर तेतर भाइक रहैन। तेतर भायकेँ ठाढ़ होइते, जहिना रमलीलाक विदूषकेँ, चाहे नाटक-नौटंकीक जोकरकेँ आकि नाचक बिपटाकेँ मंचपर पहुँचते दर्शक दीर्घामे हँसीक संग ठहाका ठहकऽ लगैए, तहिना तेतर भायकेँ देखिते मंचक वातावरण बदैल कऽ हँसी-ठट्ठाक मंच बनि गेल। एना किए भेल? कविता पाठ भेला पछातिक फल पहिने केना आबि गेल? अही गुनधुनमे पड़ल रही कि तेतर भाइक खटमिट्ठी कविताक सस्वर पाठ हुअ लगल। अजीव महमही गोष्ठीमे पसैर गेल। बुझि पड़ल जेना भाँटक भँटियाएल कविता दान-दछिना-ले लिखल गेल होइ वा बुड़िबकीक संग सुननिहारोकेँ बुड़िबक बनाएब होइ। मुदा एते तँ मनमे खुशी उपकिये गेल छल जे हरल-भरल मंचक ऐगला नम्बर हमरे अछि।

कविता सुनबैक मौका भेटल। मंचपर ठाढ़ होइते बुझि पड़ल जे कविता सुनैले गोटि-पङ्गराक टक छैन, बाँकी बेसी तेतरे भाइक कविताक समीक्षा अपन-अपन पड़ोसी सुननिहारक संग कऽ रहल छैथ। मुदा तइसँ की, सुरेब रही, टेढ़ रही, बौना रही आकि लुल्हा रही, दुनियाँक मंच तँ सबहक छी। तेसर पाँतिमे मन कनैत घरसँ निकलैत हिया कऽ देखलौं तँ बुझि पड़ल जे तेतर भाइक कविता अखनो दर्शकक बीच चनचना रहल अछि। तँए मुस्की भरि-भरि सभ कियो चनचना रहला अछि। उठैत, खसैत, लटैत-लटकैत, फटैत-फटकैत विचार रखैत मंचसँ उतरलौं। मुदा अखनो मन कहैए जे

अपन मनक बात तँ सुनेबे केलिऐन, सुनलैन नइ सुनलैन, ई तँ ओ जानैथ। मुदा एना भेल किए? ई प्रश्न अखनो मनमे ओहिना तजगर अछि जहिना गोष्ठी-दिन छल। खाएर..।

बहरबैया कवि सबहक मंच थोपड़ीक बीच सजल। गामक जेहेन पहिल गोष्ठी भेल, तेहन पहिल नहि सएम गुना गुनगरो आ पुष्टगरो तँ भेबे कएल।

विष्णुपुरमे काव्य गोष्ठीक विचार लोकक मनमे किए आ केना जनम लेलक? जहिना दुइभ घास आगू मुहेँ ससरैत जोभ होइत राड़ी-डबहारीक रूपमे फुल फुला अकासमे उड़ैत तहिना विष्णुपुरमे चालीस बरख पूर्ब निरमौल गेल बाल विद्यालयसँ भेल। आन गामक देखा-देखी गामक किछु गोरेक मनमे जगलैन जे बच्चा सभ निरमौल जाए। गौंआँ-जमीनदारक बीच मलगुजारीक झगड़ा भेल, झगड़ाक कारण छल तीन सालक रौदी। जइसँ तेसर साल जमीन नीलामपर चढ़ि गेल, जे खेतबला नइ मानलक। नइ मानैक कारण भेल जे किसान सबहक कहब रहैन जे खेतक संग लागत लगल, लाभक कोनो उपज नइ भेटल, तैपर टैक्स कथीक? दस कट्ठा ऊँचरस जमीनक कोला, विवादमे परती बनि गेल, ओही परतीपर विद्यालय बनबैक विचार भेल, गाम तँ गामे छी, लोकक समूह समाज छी। एकमुहरी किछु नीक विचार जगलै जइसँ सामाजिकताक निर्माण भेल। बाँसक बीटसँ बाँस कटल, कोरो-बाती बनल। सभ कथुक जोगार बैसबैत बिऔहिती मण्डप जकाँ तीनियेँ दिनमे विद्यालयक भवन ठाढ़ भऽ गेल।

ओना, कातिक मासमे विद्यालयक भवन बना ठाढ़ कएल गेल, भवन ठाढ़ होइते विद्यार्थीक आगमन भेल, गामेक एकटा पढ़ल-लिखल अधवेसू, रमाचरण शिक्षक बनला। ओना, रमाचरण मात्रिकमे मिडिल धरि पढ़ि सात-आठ कोस हटि शिक्षणे वृतिमे

लगल छला, मुदा गामेमे ठाढ़ होइत विद्यालय देखि गामेमे रहब विचार केलैन। विचार उठैक पाछू कारण छेलैन जे हमरो मिला कऽ ने गाम-समाज बनल अछि, बाहर तँ सोलहो आना अपनेटा-ले कमाइ छी, मुदा गाममे तँ दुनू हएत, अपनो बेटाकेँ पढ़ाएब आ दोसराइतोक बच्चा पढ़त। गौंआँ शनिचराक रूपमे एकटा पाइयो आ पाभरि चाउरो देब शुरू केलकैन।

माघ मासमे विद्यालयक पहिल बर्खक सरस्वती पूजा सेहो शुरू भेल। रमाचरण पूजाक संग-संग बच्चाक कला प्रदर्शनक कार्यक्रम सेहो बनौलैन। वएह प्रदर्शन साले-साल नाटकक रूपमे रंग-मंच सजबैत रहल। पनरह बर्खक पछाइत रमाचरण सेवा-निवृति भेला, दोसर शिक्षक एला। पूजासँ लऽ कऽ रंग-मंचक बीच तेहेन नटकिया षड्यंत्र चलल जे विद्यालयसँ पूजो हटैक गेल आ मनोरंजनक मंचो।

एक तँ अहुना मशीनी शक्ति शारीरिक शक्तिक विकासकेँ एक दिस रोधक बनल अछि तँ दोसर दिस अवरोधक सेहो बनि गेल अछि जे से लोकक मनक विचार केतौ उठैत तँ केतौ खसबो करैत अछि। कहाँ लोकक मनमे ई उठैत जे बुद्धदेव महावीर, जगत गुरु शंकराचार्यक समकक्ष होइ। वौद्धिक विकास भेनौं हजारो बर्खक अन्तरालक बीच कियो दोसराइतो कहाँ ओहन होइ छैथ। तुलसीदासक रामायण हुअ आकि विद्यापतिक पदावली, जैठाम निरक्षर पितासँ डॉक्टर इंजीनियर, प्रोफेसर, ओकील पैदा लेलैन, तैठाम डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर आ ओकीलक बेटासँ की पैदा लऽ रहल अछि, ईहो तँ देखए पड़त। जैठाम कमसँ कम उपारजन करैबला लोकक जेबीमे मोबाइलक गीत आ घरमे रेडियो-टी.वी.क धुन, दिन-राति चलि रहल अछि, तैठाम आमजनक बीच एहेन विचारोक उपजा उपैज सकैए, जे नाटक लिखी, नाटकक मंचन करी

वा नाटकक मनोरंजन करी। ई ओहने हएत जे बिनु पान खेनिहारक मुहसँ मिथिलाक धरोहर पानक पवनौट बाँटल जाएत। भाय, पानक जोगारमे, माने खाइ-जोकर पान उपजबैमे, केते लोइट पानि पान बनबैमे लगैए आ खएरक गाछसँ खएर बनबैमे केते..। की ओ एके दिने भेल? खाएर जे भेल मुदा एकटा प्रश्न तँ ऐछे जे पानक फूल केहेन आ फूलक सुआद आकि महक केहेन होइए?

गामक विद्यालयक पहिल शिक्षक रमाचरण बाबा आइ अस्सी बर्खसँ ऊपर टपि गेला, मुदा मनक लीलसा हुनकर अखनो ओहिना छैन जेना शुरूमे, गामक बच्चा सभकेँ सिखा-पढ़ा विद्यालयक मंचपर देखै छला। अहूबेर वएह अस्सी बर्खक बुड़हा अपनो पढ़ाएल आ गामसँ बाहरो पढ़ि कऽ आएल युवक सभकेँ एकत्रित कऽ अपन विचार रखलैन- “साहित्य समाजक ऐना छी से नइ तँ गाममे साहित्यक कार्यक्रम काव्य गोष्ठी रूपमे हुअए।”

एक तँ अहुना जइ गाममे भोज नइ भेल रहल, तइ गामक लोकक मनमे जहिना भोजक नव जिज्ञासा जगबैत अछि, तहिना गामक युवक सबहक बीच जगल। एक तँ कवि कवित्व कविताक गोष्ठी तहूमे ओहन वस्तु जे दुनियाँमे केकरा हँसऽ-कानऽ नइ अबै छै, एकमुहरी सभ कला प्रेमी गोष्ठीक सूहकार दैत रमाचरण बाबाकेँ कहलकैन- “बाबा, जँ अपनेक मनमे समाज सजबैक एहेन सरधा अछि, तँ हमहूँ सभ संग छी।”

वएह, सबहक सहमैतसँ काव्य गोष्ठीक आयोजन गाममे भऽ रहल अछि।



तिथि: 1 अप्रैल 2015, शब्द संख्या: 1319

छूआ

जेठ मास, बेरुका उखड़ाहा, मधुबनी कोर्टसँ गाम अबैत रही। मधुबनीसँ पूब लवहद कोठीक रस्तासँ किछु आगू बढ़लौं तँ कनी-कनी पियास जगऽ लगल।

गर्मी समय, हवाक दरस नहि तैपर साइकिलक सवारी। भूख लगलापर जहिना खेबाक छुधा जगैत, तहिना पियास लगलापर पीबैक मन होइत। ओना, पीबो केते रंगक अछि। पानि, दूध, चाह, शरबतक संग प्रेम, सिनेह इत्यादि।

ओना, बड़ बेसी पियासो तेज नहियेँ भेल रहए जे रस्ता रोकैत, तँए पटे-पट पेटमे टहलऽ लगल जे से मनमे उठल। खाएब-पीब? की खाएब-पीब? केते खेबाक-पीबाक चाही? केना खेबाक-पीबाक चाही? इत्यादि-इत्यादि अनेक प्रश्न मनकेँ घेरि लेलक। महजालमे अपनाकेँ ओझराइत देखि कतवाहि पकड़लौं। कतवाहिक माने खेबाकेँ दोसर कतवाहिमे ठेल धारमे बहा देलिऐ आ पीबाक नाँगैर पबैक विचार करए लगलौं। रस्तापर नजैर गेल, लवहद कोठीक रस्ता धेने अबैत रही से मोन पड़ि गेल। महाभारतक चौदहम दिनक लड़ाइमे जहिना सेना-सिपाहीक समय होइत अपनो तेहने छल।

मासक पनरह दिन गामसँ मधुबनी केश-फौदारीक दौरमे अबै-जाइ छेलौं। साइकिलक सवारी, तँए दस-पनरह किलो-मीटर चलि कऽ बढ़लो जा सकैए, यएह सोचि गामसँ मधुबनी अबै-जाइक जेते रस्ता अछि, टेढ़ो-टुँढ़ लगा सभ रस्ताकेँ जंघिया नेने रही। माने

झंझारपुरसँ सकरी होइत रस्तासँ लऽ कऽ बाबूबरही धरिक रस्ताकेँ सदिकाल धङैत आएल छी।

लवहद कोठीसँ कनी पाछूए रही कि पीबैक वस्तुक विचारमे 'छूआ' आबि गेल। छूओ तँ शरबते जकाँ मीठो होइ छै आ गाढ़ो होइ छै, खाली रंगेटा ने कारी होइ छइ। तोहूमे कि कोनो जहर-माहूरक गाछक रस छी जे मरैक डर रहत, ओ तँ मीठक-जड़ि क रस छी। मुदा फेर मनमे भेल छूआ तँ छुए छी, ओ पीब नीक हएत? लगले हुअए जे परम्पराकेँ मानि ली। जखन कियो ने छूआ पीबैए तँ हमहीं किए पीब। मुदा लगले मनमे उठि गेल जे पानि जकाँ छूआकेँ लोक नइ पीबैए मुदा पीनीमे मिला कऽ तँ पीबते अछि। ओकरा पीनाइ कहबै की नइ? आफन तोड़ि घोड़ा जहिना बमैछ जाइए तहिना मन बमैछ गेल। बमैछते मन मानि गेल जे छूआ पीब।

..फेर भेल जे जेकरा पीबै ओहो तँ एक पक्ष भेल। दू पक्षक जखन बात अछि तखन किए ने ओहू पक्षसँ पुछि लेब। जखने ओइ पक्षसँ पुछि लेबक विचार मनमे उठल आकि मनमे कनी ठहराव भेल। आँखि उठा आगू तकलौं तँ अकास-धरती दुनू एकेबेर आगूमे देखलौं। जइ इलाकामे बैशाख-जेठमे कुशियारक फूल अकास उड़ैत रहै छल ओइ इलाकाक लोक छठियो पाबैनमे कुशियारक टोनीक जगह बजारेक खाजा-लड्डूसँ डाली सजबऽ लगल छैथ! नगदी खेतीक रूपमे जानल जाइबला कुशियार इलाका छोड़ि देलक! खेतक ओ रूप नहि जे बरखा आधारित धानक खेती हएत। हँ, बोरिंग-नहरक सुविधासँ धानोक खेती कएल जा सकैए, मुदा से नगण्ये छल। तँए पानिक राजा मिथिलांचलकेँ रहितो सालक-साल, मासक-मास रौदी राजगद्दी छीनि लइए। प्रश्न अछि खेतीक लेल पानिक की खगता? मुदा पानिक खगतासँ पहिनेक प्रश्न अछि, खेतक फल उपजा छी, फल केहेन उपजाबऽ चाहै छी। जँ कनैल

फूलक जड़िमे सभ दिन पानि नहियोँ पड़त तैयो फुलाएत, मुदा रजनीगंधा से मानत? ओ कमल जकाँ तँ नहियेँ रंग बदलत जे पानिमे पनिकमल आ माटिपर थलकमल हएत।

कुशियार बरहमसिया खेती छी, बरहमसिये नहि पाने जकाँ तीन-सलिया-पन-सलिया उपज छी। जे तीनू मौसम- जाड़, गर्मी, बरसात-केँ अङैज फसल तैयार करैत अछि। ओइ खेतीमे नमहर वज्रपात भेल। की भेल, केना भेल, किए भेल, ई अलग बात अछि।

रस्तो टपैत रही आ इलाकाक दरसनो करैत रही। कोस भरि फड़िके रही, माने पछिमे रही कि लवहद कोठी मीलक चिमनीपर नजैर गेल। आँखिक सोझमे चिमनी देखिते अपनो चिमनी जगल। पीयास जेना तेज बुझि पड़ए लगल, मुदा महाभारतक यक्ष-प्रश्न जकाँ केतए पीब से गरे ने पकड़ै छल। मुदा चिमनी देखैत अपनो गर पकड़लक। गर ई पकड़लक जे पहिनहि विचारि नेने रही जे कुशियारक रस छूआ छी, कोनो जहर-माहूरक रस छी नइ, जँ पोश्ता दाना रहैत तँ कनी विचारो करितौं, सेहो नहियेँ अछि। मुदा लगले मन पाछू घुसैक गेल। घुसैक ई गेल जे शुरूएमे विचारि नेने छेलौं जे अपन पियास छुए पीब मुझाएब, मुदा जेकरा पीबै से तँ अपन दुनू पक्ष कहबे करत किने। किए लोक नइ पीबैए आ किए कियो पीनीमे पीबैए, तँ कियो सिनेमा होइ कि थियेटर आकि नाटक होइ कि नौटंकी चाहे लोड़िके-सलहेस किए ने होइ, सेवा निवृत भेला पछाइत पीनी बेचबो करैए आ पीबो करैए।

मुदा लगले मन फेर मनाही केलक जे जखन अप्पन पियासक प्रश्न अछि तखन अनेरे मन सौंसे दुनियाँ वौआएब ठीक नहि। जइसँ मन समटाएल।

लवहद मील लग पहुँचते रस्ते कातक गाछ लग ठाढ़ भऽ विचारए लगलौं जे पानि पीबैले चापाकल सेहो अछि, चाह पीबैले

दोकानो अछि, खाइ-पीबैले सेहो दोकान अछि। तखन अनेरे किए छूआ पीब, एते तँ हेबे करत ने जे परम्परानुकूल हमहूँ केलौं। धार जकाँ छूआक नहर रस्ते कातमे पसरल। यमुना धारक पानि जकाँ कजरारी रंग-रूपमे छूआ सजल-धजल। पियासल मने जखन तकलिऐ तँ छूआक नहैर देखिते कहलक- “अहाँ मनक बात हम बुझै छी, अपना विवेके अपन निर्णए करब, मुदा अपन छुआ-छूत जँ नइ कहि देने रहब तखन हमरा नरकोमे बास हएत। हूरार जकाँ ओतौ ओहिना हुलुक-बुलुक करैत रहब।”

‘छूआ’क रंग-रूप देखि अपनो मन छुए जकाँ कजरा गेल। पुछलिऐ-

“भाय, तोहर एहेन गति किए बनल छह? तोहूँ ते कुशियारेक रस छहक किने।”

हमर बात सुनि छूआ बाजल-

“भाय, कि अपन दुखनामा कहबह। धकियबैत-धकियबैत पहिने छूआ बनौलक आब हमर वंशे उपटबैपर लागल अछि।”

‘वंश’क नाओं सुनि पुछलिऐ-

“भाय, तोहर वंश केहेन छह?”

जहिना रौतुका रटल-पढ़ल विद्यार्थीकेँ दिनमे वएह प्रश्न जखन पुछल जाइ छै तखन जहिना धाराप्रवाह उत्तर दिअ लगैए तहिना छूआ बाजल-

“भाय, जहिना गङ्गासँ यमुना धरिक पानि एकठाम मीलि त्रिवेणी घाट बनौने अछि, तहिना हमरो वंश ओही पानिकेँ समेटि पेटमे रखने अछि। जे मीठो आ गढ़गरो बनैक पौष्टिक शक्ति रखने अछि। जे मिथिलांचलक अपन धरोहर सम्पैत छी। मुदा तेहेन छह-फिटिया लोक सभ भऽ गेल जे वंशे मेटबैपर लागल अछि!”

छूआक बात सुनि जेना अपनो पियास कमऽ लगल। जेना-जेना पियास कमैत गेल तेना-तेना छूआक संग सिनेह सेहो बढ़ैत गेल। छूआक दुर्दशा देखि मन सिहरऽ लगल। सिहरैत मने कहलिऐ-

“भाय, जखन तोहर वंशे मेटबैपर छह-फिटिया लोक छह, तखन जे तूँ गबदी मारि कऽ बैसल रहबह, से तोरा सन भेल?”

हमर बात जेना छूआकेँ चहटगर लगलै, तहिना जीहसँ ठोर चाटि मुस्की दैत बाजल- “जहिना हमरा वंशकेँ मेटबैपर लगल अछि तहिना कि ओकरो शुभ छोड़बै।”

छूआक मुहसँ ‘शुभ’ सुनि मन सहमल। सहमल ई जे खाधिमे फेकल अछि ओहो ‘शुभ-अशुभ’क विचार करैए! पुछलिऐ-

“भाय, चाणक्यक धर्म-सूत्र बुझल छह?”

जेना बेवहारमे छूआ चाणक्य-सूत्र गुनने हुअए तहिना धाँइ दऽ बाजल- “शैतानकेँ शैतानी ताबैए चलै छै जाबे शैतानसँ भेँट भऽ शेतनपन्नी झाड़ल नइ गेल रहै छइ।”

ऐगला बात छूआकेँ पेटेमे रहै तइ बिच्चेमे पुछलिऐ- “की शेतनपनी?”

गुर-घा बहबैकाल जहिना सुआस पड़ै छै तहिना जेना छूआकेँ भेलै। अह्लादित होइत बाजल- “भाय, देखै नइ छहक, केकरो मुहमे लगल रहै छिऐ, तँ केकरो ढेकामे! मुदा..।”

छूआक बात सुनि हँसियो लगै छल, मुदा केकरो कुल-खनदानक बातमे हँसबो तँ उचित नहियेँ हएत। समय छल, नीक कि बेजए, जे भेल से भेल। मुदा आइ जेतए छी तेतएसँ ने डेग उठाएब।

समय ससरल। देखिते-देखिते तीस बरख बीति गेल। एक पीढ़ीसँ ऊपर समय निकलि गेल। जेकर जनमो ने भेल छल ओहो जवान भऽ गेल, जे जवान छला ओ या तँ चौथापनमे पहुँच गेल छैथ,

वा दुनियेँसँ डेरा-डण्टा तोड़ि लेलैन..।

आइ गामसँ मधुबनी जा रहल छी, ओही लवहद कोठीक रस्तासँ। ढहल-ढनमनाएल कोठी, सुखाएल छूआक नहैर। मीलक चिमनीबला बम्मा खसल, देवाल सभ चहकल, झड़ल। छूआक सुखाएल खाधिपर नजैर पड़िते मृत्युसज्जापर पड़ल छूआकेँ कुहरैत देखलिऐ। लगमे पहुँच अपन परिचय दैत तीस बरख पहिलुका दोस्तीक भावे पुछलिऐ-

“भाय, कि हाल-चाल अछि?”

देहसँ दुर्वल रहितो छूआ बाजल-

“भाय, कि हाल-चाल रहत, अपने हाथे अपने मुँहमे लगबै छी।”

छूआक बात नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं तँए दोहरबैत पुछलिऐ-

“की अपने मुँहमे..?”

जेना छूआक छाती चहैक गेल होइ, तहिना बाजल-

“हमरेटा वंश थोड़े मेटौलक, दुनियाँक जेते कल-कारखाना अछि ओइमे अदहासँ बेसी किसानी वस्तुसँ चलैत अछि, जइ सभटाक मुँहमे लागि गेल छिऐ।”



तिथि: 6 अप्रैल 2015, शब्द संख्या: 1223

दोसराइत

पचास बर्खक पछाइत सुखेन जगेनकेँ भेँट भेल। दुनू गौंआँ, दुनू संगे-संग बीस बरख बालपनक जिनगी काटि नेने छल।

गौंआँ रहितो, गाममे रहितो दुनू संगीक भेँट पचास बर्खक पछाइत भेल। ओना, दुनू संगे गामक स्कूलसँ कौलेज धरि पढ़ने रहए।

दुनू गोरे संगे कौलेजक मुहथरिपर सङ्कल्प केने छल- 'अपन पेट तँ कुत्तो-बिलाइ पोसि, धिया-पुता जनमा अप्पन बिनु बनौल घरमे घरवास करैत सौंसे जिनगी काटि लइए। मुदा अपना सभ तँ मनुक्ख छी तँए आगू बढ़ि दोसराइतोक सेवा करैत रहब। ओना, कहब जे मिठाइ दोकानक जे कुत्ता घी पीब अपन चाइन परहक केश उड़ा नेने अछि, तखन सौंसे जिनगी केना भेल? ओकरा तँ देहमे एकोटा रूइयेँ ने छइ। भाय, तइले अनेरे छाती किए चहकत जखन लोमस बाबा छैथे..।

बीसे बर्खक जिनगी दुनू गोरे- सुखेन-जगेनकेँ चारू दुनियाँ देखा चुकल छल। जेहेन उदाहरण सामाजिक पुराणमे साइयो अछिए।

सुखेन-जगेनक भेँट ओहिना भेल जहिना नर-सिंह आ वन-सिंहक भेँट होइते, दुनू ठमैक जाइए। केकरो आगू डेग उठबैक साहस नइ होइ छै, मुदा नजैरक नीचाँ-ऊपर भेने एक-दोसरपर टुटैए। मुदा से सुखेन-जगेनक बीच नइ भेल। भाय, किछु छी तँ

मनुक्ख छी किने, जेकरा अमरीतक उफनाइत समुद्रो छै, बहैत धारो छै, आ असथिर पोखैरोयो-इनार छै, से किए ने चपेकलसँ अमरीत निकालि दरबज्जाक महमही पसारत। मुदा जहिना केकरो परिवर्जनक बिछोहक विरोग मनकेँ दलमलित करैत, तहिना दुनूकेँ भेल।

सुखेनकेँ जगेनक वैचारिक दूरी बनैत-बनैत एते-दूर हटका देलक जे एकठाम रहनिहार, एक गाममे रहनिहार, एक रस्ता-पेरासँ चलनिहार पचास बर्खक पछाइत एक-दोसराकेँ लग अनलक। दुनूक झहरैत-हहरैत देहक रंग किए ने होइन, आइक परिवेशमे सत्तरि बरख कम नइ भेल। एक दोसरपर नजैर पड़िते, बीचक पचास बर्ख उधिया गेल। बालपनक बीसो बरख एक-दोसरक चेहरासँ छिटकऽ लगल। जइसँ एक दोसरक जिनगीमे चेन्ह मारैत ओइ सीमापर अँटैकगेल जेतए दुनू सङ्कल्पित छल- ‘अपनासँ आगू बढ़ि दोसराइतोक सेवा..।’

दुनूक मनक विचार बेसीकाल अँटकल नहि। दुनू विचड़ऽ लगल। दुनूक दू-दिसिया बाट, जइसँ एक गाममे रहितो दूरी बनऽ लगल। एक दोसरसँ हटकैत हटऽ लगल। अपनाकेँ एक-दोसरसँ हटैत वौआइत सुखेन पाछू उनटि तकलक तँ बुझि पड़लै शुरूमे अनारक रूपमे रहलौं मुदा बाँझी जनमने बँझिया गेलौं। छातीसँ छाती सटबैत अपन छाती दइत आ जगेनक छाती लैत आलिंगन करैत बाजल- “जगेन भाय, कि कौलेजक जिनगी छल!”

जेना रस्ता चलैत कोनो राहीकेँ पाछूसँ कियो जोरसँ हाकक स्वरमे सोर पाड़ैत, जइसँ कोनो गरूगर विचार अबैत होइ। तहिना जगेन पाछू उनटि आबि दुनू बाँहिसँ सुखेनकेँ पँजिया बाजल- “भाय सुखेन, ओ दिन अहिना आगूमे ठाढ़ अछि, जइ दिन संगी सबहक संग नियमित पढ़ाइ नइ होइक कारणे कौलेजक गेँटपर तीन दिन

तक अनशन केलाक पछाइत पुलिसक लाठी खाइत, मुरदा जकाँ उठा-उठा कौलेजक गेँटसँ कात कएल गेल रही।”

जगेनक बात सुनिते सुखेन छड़पि उठल। जगेनसँ आगू बढ़ि सुखेन ओइ घटनामे अपन रणकलाक प्रदर्शन केने छल। मुदा लगले एक मन ठमैक गेल। दोसर मन जगेनक विचारक बीच बाजल-

“भाय, एहेन नौवत किए बनल जे विद्या भवनमे बेइमानीक रणक्षेत्र बनल?”

सुखेनक प्रश्न सुनि जगेन गम्भीर होइत बाजल-

“भाय, दुनियाँमे केकरो विवेक ई नइ कहै छै जे पापी-अधरमी बनी, मुदा जिनगी जीबैक एहेन प्रक्रिया बनि गेल अछि, जइमे बाघ्यता छै, मजबूरी छइ। पोखैरक माछ जकाँ बिनु किछु केनौं जालमे फँसि जाइए।”

जगेनक बातसँ सुखेनकेँ जेना किछु नव विचार मनमे उठऽ लगलै मुदा लगले एक मनकेँ दोसर मन दाबि विचार देलकै- किए ने जिनगीक ओही इतिहासक पन्ना उनटा किछु गप-सप्प करी। बाजल-

“भाय, ई बात हम अखनो नइ बुझि पाबि रहल छी जे शिक्षकक सेवा पढ़ाएब भेलैन, विद्यार्थीक सेवा अध्ययन भेल, अहिना परिवारसँ समाज धरिक सीमा बनले अछि, तखन बीचमे एहेन परिस्थिति किए बनल जे जीबैत जिनगीकेँ जीबैले जहलो जए पड़ै छै आ मारि खा मुरदोक ढेरीमे फेकल जाइ छइ।”

अपनो ढलैत देहक शक्ति आ सुखेनोक देहक ढलैत शक्ति देखि जगेन मने-मन विचारए लगल, केना महाभारतक अभिमन्यु अखनो ओहने रणक्षत्री बनि आगूमे ठाढ़ छैथ। हजारो बर्खक अन्तराल रहितो नवयुवके छैथ। देह-दैहिक बीच ठाढ़ होइत जगेन बाजल- “भाय, अनेरे कोन फेड़मे पड़ऽ चाहै छह, छोड़ऽ दुनियाँ-

दारी, अपने बनौलहा जे माला छह ओकरे साँझ-भोर जप करह।”

जगेनक बात सुनि सुखेनक मन हल्लुक भेल। हल्लुक होइते बाजल-

“भाय, ओही साल ने सिनेमा टिकट-ले सेहो हौलक आगू अनशन केने रही?”

जेना जगेनोक जीहेपर रहै तहिना बाजल-

“ओ ते चारिए घन्टाक अनशनमे फड़िया गेल रहए। मन छह किने, शनि दिनक मैटिनी शो आ सोम दिनक सौंझुका शो-मे विद्यार्थीकेँ सिनेमा टैक्ससँ मुक्ति भेटल।”

कोनो बाल-बोधकेँ टटका किछु भेटलासँ जहिना खुशी होइ छै तहिना सुखेनोकेँ भेल। मुदा केहनो सुन्नर चाह पाँच सितारा होटलमे किए ने बना कऽ पीने होइ मुदा आइ तँ अपने घरक चाहक सुआद ने नीक अछि। मन ठमकल। ठमैकते अपन कौलेजक गेँटपर लेल सङ्कल्प जगलै। जगिते बाजल-

“भाय जगेन, मन मानि रहल अछि जे तूँ हजार कच्छे नीक छह, मुदा एकटा बात साफ नइ भऽ रहल अछि जे सङ्कल्पक सूत्र तँ दुनू गोरेक एके ने छल।”

जेना कोनो भारी वस्तु अभरलासँ माथ झनकि उठैए तहिना जगेनक चानि झनकल। मनमे उठलै, दोसराइतिक सेवा..। अपन निसचित जगहमे कौल्हुक बरद जकाँ दिन-राति घुमैत रहै छी, मुदा से सुखेनक कहाँ अछि, ने जिनगीक ठेकान छै आ ने दिन-रातिक आ ने अपन-दोसराइतिक। अखनो दिन-राति कोट-कचहरीक चक्करमे चकराइत रहैए। मुदा कोन चकराइ भऽ रहल छै, भरिसक सुखेन सएह ने बुझि पाबि रहल अछि। अनुमानित बात बजलो तँ नहियेँ जा सकैए। मुदा बिनु सुनने नीक-बेजाइक आँकड़ो तँ नहियेँ निकालल

जा सकैए। बाजल- “भाय सुखेन, अपन सबहक अन्तिम भेँट कहिया भेल, तैठाम चलह।”

जगेनक बात सुनि सुखेनक मनमे सुखक संचार भेल। सोभाविको छै जे हाल-सालक आमदनी किछु दिनक आशा बढ़ाइए दइ छइ। बाजल-

“जगेन भाय, हमरा मने जइ दिन कोटक अन्तिम केसक फैसलाक लफड़ा छुटल, से अन्तिम भेँट छी।”

सुखेनक बात सुनि जगेनक जगैत मन मुस्की दैत बाजल-

“दुनू गोरेकेँ कोटक लफड़ा एके दिन छुटल। मुदा हमरा सोलहन्नी छुटि गेल आ तोरा कुशियारक छूआ जकाँ बैसैकाल ढेकामे लगि गेलह।”

ओना, सुखेनक मन मानि गेल छल जे जगेनक विचारमे सक्कतपन बेसी छइ। तँए सटले प्रतिवादो करब उचित नहि। किए ने जगेनेसँ पुछि लिऐ। बाजल-

“भाय जगेन, की छूआ लागल?”

‘छूआ’ सुनिते जगेनकेँ हँसी लगल, मुदा गम्भीर होइत अपन बचकानी दोस्तीक आगू हँसब उचित नइ, तँए मुस्की मारैत बाजल-

“भाय, कुशियारक छूआ ओ भेल जेकर रंग बहुत कारी छइ। मीठाँस रहितो पीनी वा अन्य कोनो दोसर काजमे उपयोग होइ छइ।”

बिच्चेमे जगेनकेँ रोकैत सुखेन दोसर प्रश्न पटकलक-

“अपना दुनू गोरे संगी छी आ कुशियारक छूआ?”

अपन प्रश्नपर सुखेन भार देने रहै, तँए भारकेँ तँ गुड़कबऽ पड़त नइ तँ रस्ते रोकि देत। बाजल- “भाय सुखेन, जेना बुझि पड़ैए

जे दुनू गोरे कौलेजक ओहन क्लासमे पढ़ै छी जेकरा पास केने शिक्षक, नइ तँ विद्यार्थी।”

प्रश्नक समुचित उत्तर पबैले सुखेनक मन कछमछाइत। सुखेनक कछमछी देखि जगेन बाजल-

“भाय, ऐठाम कबछुआ केना चलि आएल जे तोरा लगिते कछमछबै छह!”

चारूकात सुखेन हुलैक-बुलैक तकलक तँ केम्हरो किछु ने देखलक, देह-हाथक कुड़यैनी छोड़ि सुखेन बाजल-

“भाय जगेन, अपना मने हम कहियो ने कोनो गलती केलौं, मुदा अखनो, अहू उमेरमे ओही चक्करमे दिन-राति वौआइत रहै छी! चैन किए ने अछि?”

सुखेनक प्रश्नकेँ टारैत जगेन बाजल-

“भाय सुखेन, अपने सिंगार ने अनको नीक लगै छै, तँए ने ओ ओकर पञ्चो भेल।”

बहैत धारक किनछरिक पानि जकाँ सुखेन कतवाहि धरैत बाजल-

“हँ।”

‘हँ’ सुनि जगेन बाजल-

“भाय सुखेन, तोहूँ दोसराइतेक पाछू माने जाति-कुटुम, हित-अपेक्षित लेल समय गमेलह आ हमहूँ ओही पाछू गमेलौं। मुदा..।”

‘मुदा’ सुनि सुखेनक मनमे उठल भरिसक अहीठाम, घाट-बाट छइ। जिज्ञासु हंसिनी जकाँ बाजल-

“भाय, की मुदा?”

अपन अन्तिम विचार दैत जगेन बाजल- “भाय सुखेन, हम

अपन आँट-पेट बुझि चलि रहल छी आ तूँ कचहरिया लोक बनि गेलह। दोसराइत भेल, दोसर-रातिक अन्हारमे जे टप्पा-टोइया दइए, से।”

जगेनक विचार नीक जकाँ सुखेन नइ बुझि पेलक, जे सोभाविको छइ। हजारो रंगक सुखो छै आ दुखो छै, अही दुनूक बीच सभ चलैत आबि रहल अछि। मुदा प्रश्नक उत्तर नुकाएल अछि। जेकरा ताकि निकालब बाल-बोधक चिक्का-दड़बड़ खेल नइ छी। जिनगी छी जिनगी। जेकर बाट-घाट बिनु बुझने..। सभ धारक घाट, पोखैरक घाट, सागरक घाट, गङ्गा सागरक घाट तँ घाट भेल, तँए कि धोविघट्टा नइए सेहो तँ नहियेँ कहल जेतइ।



तिथि: 9 अप्रैल 2015, शब्द संख्या: 1270

लछनमान

झंझारपुर जाइले तैयार भऽ दरबज्जापर सँ निकललौं कि शुभधी काकीक जोरसँ बाजब सुनलयैन। ओना, आँगन आकि कोनो आनेठाम जँ पाँच-दस गोरे एकठाम रहि गप करत तँ हल्ला जकाँ भइये जाइ छै, तहिना बुझि पड़ल। तीन बर्खक पोता- रमुआँ-क संग शुभधी काकी खुरपी नेने घास-ले विदा भेल छेली, तही बीच चाह पीबैले सभ कियो- शुभधी काकीक दुनू बेटो, दुनू पुतोहुओ आ चारू-पाँचू पोतो-पोती ओसारपर थहाथही करैत रहैथ।

छोटकी पुतोहु चाहक केतलियो आ कपोकेँ बीचमे रखि घर जा एटैचीसँ एकटा पेस्तौल आ एकटा बएट-बाउल नेने रमुआँक आगूमे रखली। ओ दुनू रमुएँ-ले मुम्बइसँ अनने छेली। चाह पीब शुभधी काकी विदा भेली, आगू-आगू रमुओं ठुठियेलहा खुरपी नेने आगू बढ़ल। भातीजकेँ खेलौना छोड़ि खुरपी नेने आगू बढ़ैत देखि रूपलालकेँ छगुन्ता लगलै। एहेन रंगर खेलौना बच्चा-ले अनलौं मुदा ओ तँ एम्हर तकितो ने अछि! अपना दिस आकर्षित करैले पेस्तौलक बटन दाबि एकबेर जोरसँ आवाजो केलक। तहिना गेनकेँ पटैक सेहो देखौलक। पेस्तौलक आवाज आ गेनक भीतर जे लाल-हरिअर बिजली जकाँ चमकै, ओ दुनू रमुआँकेँ डर पैसा देलक। तैबीच कि सभ गप भेलैन से तँ हल्लामे नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं, मुदा शुभधी काकीक मुहेँ बाजब सुनलौं-

“जेकरा कोठी जेहेन धान से तेते तेहेन लछनमान।”

कहि शुभधी रमुआँकेँ अगुएने डेढ़ियासँ आगू बढ़ली। हमहूँ बीचमे टोकबसँ परहेज केलौं। परहेजो केना ने करितौं, एकहरियो काजमे लोक गप-सप्पसँ परहेज करैए, ऐठाम तँ दोहरी काज अछि। हमहूँ झंझारपुर ब्लौकपर काजे विदा भेल छी आ काकियो घासले विदा भेल छैथ।

साइकिलपर चढ़ि झंझारपुर विदा भेलौं। मनमे उठल शुभधी काकीक विचार। मुदा तइ बिच्चेमे पाछूसँ रूपलाल कहलक- "भैया, पान खा लिअ, जेबे करब।"

अपने ठेकना कऽ विदा भेल रही जे चौकपर पान खाएब, मुदा से दरबज्जेपर भेट गेल। तँए मनमे कनी खुशी जगिये गेल। ओही खुशीमे रूपलालकेँ कहलिऐ- "बौआ, कमाइ-खटाइ नीक छह किने?"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि रूपलाल अपन बात अनठौलक। मुदा उपराग जकाँ दैत कहलक-

"भैया, रमुआँ-ले एकटा पेस्तौल आ बएट-बाउल नेने आएल छी, देलिऐ से कथीले ओम्हर घुरियो कऽ ताकत। ठुठियेलहा खुरपी नेने दादी सेने विदा भऽ गेल!"

एक संग रूपलालक केतेको प्रश्न मनमे उठि गेल। मुदा सभटा प्रश्नकेँ तहियबैत कहलिऐ-

"बौआ, अखन हमहूँ धड़फड़ीमे छी, गप-सप्प करैक छुट्टी नइ अछि, घूमि कऽ अबै छी, दुपहरमे आरो कुशल-समाचार बुझैक अछि।"

आन पड़ोसी जकाँ शुभधी काकीक परिवार नइ जे एक-दोसरसँ देहक कोन बात जे छाँहोसँ लोक परहेज करैत कात रहैए,

से नइ अछि। तँए अपनो खेबोकाल जँ धड़फड़ीमे रहलौं आ भातेटा भेल रहल तँ शुभधीए काकीक दालि होउ कि तीमन लऽ खेबो करै छी। ने अपने बुझै छी जे शुभधी काकी कियो आन छैथ आ ने वएह बीरान बुझै छैथ।

शुभधी काकीक भरल-पुरल परिवार, दूटा बेटा- सोनेलाल आ रूपलाल, तहिना दुनू पुतोहु आ सहरगंजा पोता-पोती परिवारमे। सहरगंजाक माने भेल पोतो आ पोतियो। करीब तीस बर्खक शुभधी काकी रहैथ, तहिए पति- देवीलाल- मुइल रहथिन। तइ दिनमे हमहूँ चेष्टगर नइ रही, तँए अपन देखल तँ नहि मुदा शुभधी काकीक अपनो मुहेँ आ माइयोक मुहेँ सुनने छी जे जइ समय देवीलाल मुइलखिन, ओइ समय शुभधी काकी कड़कड़ाएल जुआन रहैथ, ओना, सात बर्खक सोनेलाल आ चारि बर्खक रूपलाल बेटा रहैन। मुदा पतिक मृत्युसँ आन जकाँ नइ जे पति मुइने पत्नी धिया-पुताकेँ छोड़ि डेरा-डण्टा तोड़ि ससैर जाइए। पति-पत्नीक बीचक अपन अर्जित सम्पैत छी, जइमे तेसरकेँ ने दखल देबाक अधिकार छै आ ने दखल लेबाक। ऐ विचारक शुभधी काकी। तँए आन जकाँ ने मृत्युए लगसँ कननाइक कतार लगौलैन आ ने मनेसँ विचलित भेली। कननाइक कतार भेल जे मरबसँ पहिनहि ओछाइनेपर सँ जे कानब शुरू केलौं, आ मृत्यु, असमसान घाट, पोखैर वा धारक घाट होइत लोह-पाथर छुबैत तेराइत करैत नह-केशसँ लऽ कऽ सराध, समपिण्डण होइत कनैत रहलौं, कनैत रहलौं। मुदा शुभधी काकी से नइ केलैन, केलैन ई जे कुसमैयक पतिक मृत्यु दुखद ऐछे, शरीरोसँ आ मनोसँ। शरीरक ई भेल जे तीस बर्खक अवस्थामे जइ महिलाकेँ समाज विधवा कहि अशुभ मानि समाजसँ वहिष्कार करैए, ओहन समाजमे केना जीब। तँए आँखिसँ नोरो खसबे केलैन, आ सौंस छाती सेहो छहोँछीत भेबे केलैन। मुदा तेकरा ओ बिपैत नहि बुझि

अपन उपैत शुरू केलैन।

शुभधी काकी अपन जिनगी दिस तकै छैथ तँ देखै छैथ जे जेठ बेटा- सोनेलाल अपन गाम-घर, माटि-पानिक बीच हँसैत-खेलैत जिनगी बीता रहल अछि, तहिना छोटको बेटा मुम्बइमे जीबिये रहल अछि। कम पढ़ल-लिखल रहनौं रूपलालक तेहेन वगै-बानि छै जे एक संग सत-सतटा कम्पनीक एजेन्सीक काज करैए। सात दिसक अम्बोह आमदनी, तँए मुम्बइ सन शहरमे नीक बास करिते अछि। ऐ बेर रूपलाल सात बर्खपर गाम आएल छल, जे तीन साल पहिने रमुआँक जनम दिनक शुभ अवसरपर संगी सबहक बीच मुम्बइएमे नमहर पार्टी देने छल। सभसँ छोट भातीज- रमुआँ- अछि तँए ओकरा-ले लत्ता-कपड़ाक संग खेलौनामे पेस्तौल आ बएट-बाउल नेने आएल छल।

दिन उगिते आगू-आगू तीन बर्खक रमुआँ ठुठी खुरपी नेने आ पाछू-पाछू शुभधी काकी घास छीलऽ अपने बाड़ी दिस बढ़ली। जाड़क मास नै जे घास शीताएल रहत। आगू-आगू मुँह घुमौने रमुआँ बाजल-

“दादी।”

बिच्चेमे सजग सिपाही जकाँ शुभधी काकी बजली-

“हँ! की भेलौ?”

आगू-आगू बढ़ैत रमुआँ, दादीक हाजरी नोट केलक आ अपना धुनिमे दौगैत आगू बढ़ल। कोन जरूरी वेचाराकेँ छै जे खुरपीसँ कोबी कमाएत, आकि धान कमाएत आकि कोनो गाछक जड़ि कोरत। हाथमे ओजार छै दुनियाँ दिस जाइए रहल अछि, जेतए दादी अँटकत तेतए अँटैक कऽ जे मनलग्गु काज देखत, करत। मुदा तँए कि शुभधी दादीक नजैर रमुआँपर नइ छैन, जे केते दूर हटि ओ

ओजार चलबैए। मुदा तइले शुभधी काकीक मनमे मिसियो भरि चिन्ता नइ होइक कारण अछि अप्पन सोच-विचार। अपना सोचकेँ विचार मानि विवेकाधीन रूपमे जिनगीक दिसा दी। तँए शुभधी काकी सौंसे दुनियाँ खेले-खेल देखैथ। पोतापर नजैर जानि कऽ कनडेरीए आँखिये देने रहथिन जे ई छौड़ा हमरा काजकेँ खेल बुझि करैए आकि..। मुदा लगले मन घुसैक गेलैन, घुसैक ई गेलैन जे हमहीं कोन गोवरधन-पहाड़ उनटबै छी, अपनो तँ घासे ने छीलै छी। फेर नजैर बढ़लैन- घासेटा किए छीलै छी पोताकेँ खेलेबो करै छी किने। आब अपन उमेर काज करैबला अछि आकि बाल-बोधक संग खेलाइत-धुपाइत दिन बीताएब, सएह ने अछि।

झंझारपुरसँ गरमाएल एलौं। नहा-खा दू घन्टा सुतलौं तखन मन थीर भेल। एकेठाम दुनू भैयारीक घरो अछिए। मुदा दुनू परिवारक बीच एते सम्बन्ध तँ बनले अछि जे हमरे कोनो ओहन बात जे बजैबला नइ अछि से ने शुभधी काकीक परिवारक कियो बजैए आ ने हमहीं हुनका परिवारक ओहन बात बजै छी। मुदा तँए कि दुनू परिवारमे कोनो बात-विचारक कमी अछि से बात नै। ..सुति कऽ उठलापर मन हल्लुक भेल। कलेपर सँ रूपलालकेँ कहलिऐ-

“बौआ, चाह तैयार करह, अबै छिअ।”

जहिना पहुँचलौं, तहिना चाहो पहुँच गेल। जेना बुझि पड़ल जे ई तँ दरबारी ढाठी भेल, खाइ-पीबैकाल मुड़ीए डोला कऽ गप करी। मुदा लगले भेल जे ऐठाम कोन राज-काजक गपे हएत। घरैया गप हएत। तइ बिच्चेमे रूपलाल बाजल-

“भैया, अपना जनैत मुम्बइसँ हम नीक खेलौना भातीज-ले अनने छी मुदा ओ ओइ दिस तकबो किए ने करैए?”

रूपलालक प्रश्न मनकेँ ठर्ड़ा देलक। मुदा अन्हार घर साँपे-

साँप, केना कहबै जे बौआ दुनू समाज- माने गामक समाज आ मुम्बइक समाज- परिवारक ऐगला पीढ़ीकेँ ओते कात हटा देतह, जे चिन्ह-पहचिन्ह मेटा जेतह। मुदा दुनू भैयारी अपन-अपन जिनगीमे मस्त। मस्तीए ने जिनगी भेल, मुदा मस्ती की? अपनाकेँ ओझराइत देखि बजलौं-

"बौआ, जिनगी ते तोरा सबहक छह। बाल-बच्चा हवाइ-जहाजक पायलट हेबे करतह।"

हमर गप जेना रूपलालकेँ नीक लगलै, मुदा तैयो बाजल-

"भाय साहैब, भातीजक बात नइ बुझि पेलिऐ?"

की कहितिऐ। बजलौं-

"बाल-बोध राजा होइए, ओकर पनचैती हमरा बुते कएल हएत। तोहूँ तँ भातीजे छह अपनेसँ बुझि लएह।"



तिथि: 13 अप्रैल 2015, शब्द संख्या: 1173

हमर कोन दोख

नोकरी करैबला जहिना रवि दिनक छुट्टीकेँ दिनक छुट्टी बुझि रवियेकेँ छुट्टी कऽ दइए तहिना हमहूँ बिनु नोकरी करैबला लोक तँए शनि दिनकेँ छुट्टी मनबै छी। से कोनो अदी-गुदी नै मनबै छी, मनसँ मनबै छी, हृदैसँ मनबै छी, तहेदिलसँ मनबै छी। ओही उखाहीमे ओछाइनेपर पड़ल रही। भाय, दिनकेँ ने छुट्टी करब अछि कनी-कनी सभ चीज बढ़ौने, दिनक छुट्टी भइये जाएत। कोनो कि गणितक बड़का फर्मूला थोड़े छी जे फर्मूले ने बुझब तँ हिसाब केना फड़ियाएब। सोझ-साझ फर्मूला अछि जेतेकाल सुतै छी तइमे कनी समय बढ़ा देबइ, तहिना नहाइ-खाइमे कनी बढ़ा देबै, बस भऽ गेल दिनक छुट्टी।

मुदा से भेल नहि। जगैओक तँ केते कारण अछि, कियो अपने विचारे समैपर जगि जाइ छैथ, तँ कियो माता-पिताक जगौने जगै छैथ तँ कियो परिवारक आन-आनक जगौने जगै छैथ तँ कियो समाजक जगौने जगै छैथ। समाजक जगौनाइ ई भेल जे किनको काजक भार लऽ कहि दिऐन जे चारि बजे भोरे आबि जाएब नइ तँ काज पाछू पड़ि जाएत, काजक चाँइक रहने ओ आबि कऽ जगेबे करता। सुर्ज उगैमे घन्टासँ बेसी समय बाँकी रहै, अनहरिया राति रहने अन्हारक झलफली रहबे करइ। भोरुका कौआ जकाँ रस्ते-रस्ते चलैत मनोहर भाय बजला-

"आइ तँ गामक नाक कटि जाइत, प्रतिष्ठा डुमि जाइत।"

ओना, नीन रही, मुदा बरहबजिया रौतुका कड़कड़ाएल नीन नइ रही, भोरुका पतरेलहा रही, मनोहर भाइक बात सुनलौं। मनमे भेल जे पुछिऐन जे की प्रतिष्ठा डुमि जइतए, मुदा फेर भेल जे भोरे-भोर रामक नाओं लऽ ओछाइन छोड़ब आकि अनेरे प्रतिष्ठेक उगै-डुमैक दर्शन करब। मनोहरो भाय रस्ते-रस्ते बजैत आगू बढ़ि गेला, जेना सौंसे गाममे हकार बाँटैक भार हुनके भेट गेल होइन। ओछाइन छोड़ि कोठरीसँ निकलि रस्तापर एलौं कि स्त्रीगणक गुरमिटनी केतेठाम, माने थोड़े-थोड़े हटि कऽ होइत देखलिऐ। मने-मन विचारलौं जे जे बात केकरो पुछबै तेकर जवाब जँ अपने केम्हरोसँ आबि जाए तँ अपन मुहोँ ने खोलऽ पड़त, आ जवाबो भेट जाएत, यएह सोचि दुनू कानकेँ घिड़नीबला वंशी जकाँ घाटपर पाथि देलिऐ। पाथिते एकटा डेढ़बा फँसल, माने ई जे एक गोरे बजली- “एहेन लोककेँ अहिना हुअए।”

सुनिते मन चकरा गेल। चकरा ई गेल जे लोककेँ पनचैती करौ ने पड़लै आ उचित न्यायो भऽ गेल। मनमे कनी खुशी जगल। फेर दोसर दिससँ एकटा जनाना बाजल-

“मनुक्खो कि आब मनुक्ख रहल, हाथी भऽ गेल।”

मनुक्ख हाथी भऽ गेल? कोनो अर्थे ने लगल। मनुक्खक वंशसँ बहुत पहिने हाथी भेल, तखन फेर इतिहास केना उनटल? मुदा लगले भेल जे केकरो कहने किछु होइ छै, लोकेकेँ की लोक कम गंजन करैए, केकरो हाथी कहै छै तँ केकरो घोड़ा, केकरो गाए कहै छै तँ केकरो बरद, केकरो गदहा कहै छै तँ केकरो कुत्ता। कियो अपन मुँह दुइर करैए। मुदा फेर भेल जे ओहिना थोड़े कियो केकरो कहै छै, जाबे किछु लछन-करम नइ देखैए। तइ बिच्चेमे तेसर दिसक आवाज टकराएल। एकटा नवतुरिया कनियाँ बजली- “एहने-एहने लोककेँ अपटी खेतमे परान जाइ छै, ई तँ गुन रहलैन जे माइयक खरदुतिया

पाबैन कएल छेलैन तँए दोहरा कऽ समाजक मुँह देखलैन, नइ तँ तेहेन खत्तामे खसल छला जे लोककेँ हाड़ बीछि-बीछि अछियापर आनए पड़ितैन।”

सुनिते मन थकमका गेल। केना नवकी कनियाँसँ पुछब नीक हएत। फेर हुअए जे जे बात ओ बजली ओ तँ दमगर अछिए। मुदा जइ नजरिये ओ बजली ओ नजैर जँ दोसरोक होइन तखन ने, जँ से नइ हेतैन तखन प्रश्नक उत्तर नीक जकाँ दऽ केना पेती। कोनो रस्ते ने सुझए जे की करी की नइ करी। तैबीच मनोहर भाय आपस घुमल अबैत रहैथ। हुनका देखिते मनमे सवुर भेल जे आब सभ बात जड़िसँ बुझि लेब। लग औता तइ आशामे अपन मुँह बन्न रखने रही, मुदा चारि लग्गा हटलेसँ मनोहर भाय बजला-

“सिंहेश्वर भाय, आइ तँ गाममे अन्याय-अन्याय भऽ जाइत?”

मनोहर भाय तेहेन टोनमे बजला जे आगूक बात पुछब जरूरी भऽ गेल। पुछलयैन-

“की अन्याय भऽ जाइत भाय?”

जे बात बुझऽ चाहै छेलौं तेकरा आरो तर कऽ झँपैत मनोहर भाय बजला-

“गामक प्रतिष्ठा आगू बँचब कठिन भऽ जाइत।”

मनोहर भाइक बात सुनि आरो मन घुरिया गेल। घुरिया ई गेल जे एक तँ प्रतिष्ठा बनब कठिन होइए तैपर बनल प्रतिष्ठा बँचा कऽ राखब तँ आरो कठिन, तैपर मनोहर भाय बाजि रहल छैथ जे ‘प्रतिष्ठा बँचब कठिन भऽ जाएत।’ मुदा मनमे सवुर भेल जे एते तँ बाजिए रहल छैथ जे प्रतिष्ठा बँचब कठिन भऽ जाएत माने ई जे बँचल अछि, गेल नइ। जखन मुसरीकेँ हुकहुकियो रहने तँ बाल-बोध गोबर सुङ्घा पुन: प्राण-प्रतिष्ठा दैत अछि, तखन ई तँ मनुक्खक बात

भेल। हूबा जगल, पुछलयैन- “भाय, अहूँ सभ दिन कौल्हेक तेल रहलौं, घानी लेब अढ़िया भरिक आ चुबब ठोपे-ठोप।”

हमर गप मनोहर भायकेँ नीक लगलैन, नीक ई लगलैन जे जेते बेसी वौस रहत ओते बेसी ने ओइमे आँकड़ो-पाथर पचत। अपन कारोबारमे लछमीकेँ अबैत देखलैन, करेज खोलि टोकरा दैत बजऽ लगला-

“बौआ, ओ.. हो... हो..., गाममे एकेटा बेटा अखन बाँचल छैथ, जे गामक प्रतिष्ठाक टेक धेने छैथ नइ तँ केकर माए एहेन बेटा जनमौलक जे..?”

मनोहर भाइक बात सुनि हदाश उड़ि गेल, जे एहेन कोन अनहोनी भऽ गेल जे माता-पिता पाशापर आबि बैसला। मुदा तेहेन आभूषणसँ आभूषित करैत मनोहर भाय रूप बनौलैन जे वीर तर कान, मङ्गटीका तर माङ्ग आ चश्मा तर आँखि झँपा गेल, तँए नीक जकाँ किछु बुझबे ने केलौं। मुदा होश करैत कहलयैन-

“भाय, हमरो सबहक जरूरत अछि?”

जेना हुनको हँसेरीक खगता रहबे करैन तहिना बजला-

“यएह ने भेल समाजक उपकार। घन्टा भरि पहिने जोगी काका पहुँचबे केलाह अछि, अखन जे अगुआ-अगुआ खोज-पुछाड़ि करतैन वएह ने हुनकर हितैषी भेलैन।”

जोगी काकासँ हमरा कोनो बेसी नजदीकी नहि, मुदा घटना छी, जँ समाजमे केतौ आगि लगै आकि कोनो दैहीके घटना होइ, तैठाम जेबाले लोक आगू-पाछू नइ तकैए। तँए जेबामे कोनो हर्ज नहियेँ अछि। कहलयैन-

“भाय, चलू अहीं कलपर मुहोँ-कानमे पानि लेब, चाहो पीब आ जोगी काकाकेँ जिगेसो कऽ लेबैन।”

जेना भरि रस्ताक खोराकी भेट गेल होइन तहिना मनोहर भाय हलसैत बजला-

“समाजमे दस कप चाह जँ सभ दिन लोककेँ नइ पिआएब तँ सामाजिकता रहत।”

मनोहर भाइक बात सुनि मनमे उठल जे अनेरे कोन बतंगरमे पड़ल छी, तइसँ नीक जे मनकेँ किए ने जोगीए काका दिस तका दिऐन आ हुँहकारी भरैत चली। सएह केलौं, आगूए-आगूए की-कहाँ मनोहर भाय बजैत रहला आ हम हुँहकारी भरैत रहलौं।

जोगी काका जिला कार्यालयक वित्त विभागक बड़ाबाबू पदसँ सेवा निवृत भेल छला। ऑफिसो-ऑफिस आ किरानियो-किरानीमे अन्तर होइते छइ। कोनो सहरगंजा नइ छै जे जहिना वित्त विभागक ऑफिसक चुहचुही रहैत अछि तहिना टोल-टपरामे बसल लोकोक रहत। तँए शुरूहेसँ नीक आमदनी जोगी कक्काक रहलैन। बच्चेसँ खाधुर रहबे करैथ, तैपर नीक उपाय भेटने आरो खखड़ भऽ गेला। हजारटा रसगुल्ला आकि पाँच-दस किलो माछ जँ चौबीस घन्टामे भेटैत रहैन तँ कहियो हारि मानैबला नहि। सेवा निवृत भेला पछाइत गाम आबि बिआहक बरियातियो आ गामक भोजो-काजमे अपनाकेँ उसरैग देलैन। बजारक मांग छैहे जे जेते भोजमे खर्च, तेते जश। जइसँ जोगी कक्काक चलती सभ दिन रहबे केलैन। ओना, पैंसैठ बरख पार भऽ गेल छैथ।

जोगी काका दरबज्जेपर बैसल अपन खेरहा पसारने, दस गोरे आगूमे मुड़ी गोंतने बैसल सुनैत। दरबज्जापर पहुँचते कहलयैन-

“काका, आब अहाँ घुमि कऽ आबि गेलौं, कहियो ने जाएब?”

मुदा हमर बात काकाकेँ नीक नइ लगलैन। जेना भक्त सभ मृत्युकेँ आगूमे रखि साधनारत् रहैए तहिना जोगी काका बजला-

“बौआ, आब हमरा सभकेँ जात-बरियातमे नइ जेबा चाही।”

टुटल मन देखि कहलयैन- “काका, एहेन रोग जहिया धेलक तहिया नइ बुझलिऐ?”

बजला- “बौआ, जुआनीक धाहे एहेन होइ छै जइमे अकसरहाँ सभ झड़ैक जाइए। बिरले कियो बाँचि पबैए। आब बुझै छी जे जहिना छबे-छबे खेत काटि लोक खेत बढ़ा लइए तहिना कौरे-कौरे खोराक बढ़बैत लोक पेट बढ़ा लइए।”

जोगी कक्काक मनक विषादकेँ रोकैत कहलयैन-

“काका, जेते अन्न-पानिमे अहाँक नाओं लिखा गेल अछि ओ तँ अहींक भागमे ने भेल।”

हमर बात सुनि जोगी कक्काक मनपर आरो बेसी विषाद चढ़ि गेलैन। बजला- “हमर कोन दोख।”

जोगी कक्काक बात सुनि मनमे भेल जे बतीस आनासँ चौंसैठ आना अपन दोख भेल, मुदा पाशा बदलैत बाजि केना रहल छैथ जे- हमर कोन दोख! केकरो अपन केलहा भोगऽ पड़ै छै, मुदा एक तँ ओहिना डरे छाती थरथराइ छैन तैपर आरो थरथराएब उचित नहि तँए पाशा बदलैत कहलयैन- “काका, अहिना दिनक दोख होइ छइ। अपन कोन दोख। मुदा जड़ि बात अखैन तक नइ बुझि पेलौं, से कनी जड़िएसँ एकबेर दोहरा दियौ।”

जहिना केकरो मनक पीड़ा कियो जेते सुनैए तेते ओकर मनो हल्लुक होइ छै आ पीड़ो पीरौंछ हुअ लगै छै, तहिना जोगियो काकाकेँ भेलैन। चैनिक साँस छोड़ैत बजला- “बौआ, एक तँ अखुनका बरियाती जनमारा भऽ गेल अछि, जे कण्ठ तक नाको-नाक खुआ दइए आ अरामक ओछाइनिक जगह बस गाड़ी धड़ा दइए।”

जोगी कक्काक बात सुनि, ओना, गपक झलकीसँ घटना बुझि गेल रही, मुदा अपन बीतल अपना मुहेँ सुनऽ चाहै छेलौं, भेल जे भरिसक फेर जोगी काका बहैक रहला अछि। पाछूएसँ विचारक छोर खींचैत पुछलयैन- “काका, आहे-माहे छोड़ू की भेल से कहियौ।”

हमर बात सुनि जोगी कक्काक छातीक धड़कन फेर जेना तेज हुअ लगलैन। मुदा छाती असथिर करैत कहऽ लगला- “बौआ, गुण भेल जे छोटकी गाड़ी रहै, चारिये गोरे ओइमे रही। चारूकातसँ खिड़की सभ बन्न रहै, ने तँ तेते तेजीमे सड़कपर सँ पलटी मारलक जे मिनटो ने लागल, तीन पलटी मारि निच्चाँ खाधिमे खसि पड़ल।”

खाधिमे खसैक नाओं सुनि मनमे भेल जे किए ने लगले-हाथ मुँह मीठा कऽ तीतहा गप सुनि ली। सएह केलौं, पुछलयैन- “बेसी ने तँ खेने रहिऐ?”

जहिना कम खर्चक जिनगी सुखद होइत तहिना कम खोराकियो खाधुरक लेल सुखद होइ छइ। बजला- “जैठाम एक हजार रसगुल्ला खाइ छी तैठाम आठे साए खेने छेलिऐ, कलेजीक गमक लगि गेल रहए, ओइपर मन दौग गेल।”

मने-मन हँसी लगि गेल। पुछलयैन- “रसगुलाक पछाइत मौसेटा रहए आ माछ नइ!”

खुश होइत बजला- “एह, रहबे करै! किलो पाँचेक करीब ओहो खेनहि हएब।”



तिथि: 17 अप्रैल 2015, शब्द संख्या: 1527

मौसी

मुम्बइ शहरक एकटा भाड़ाक कोठरीमे असगरे बैसल गीता अपन दिन-दुनियाँक बात सोचि रहल अछि। घिरनी जकाँ रंग-बिरंगक विचार मनमे नाचि रहल छइ। आइ सात तारीख छी, पनरह तारीख तक जँ बेटाक नाओं नइ लिखा सकब तँ जिनगीक सभ मनोरथ पानिमे दहा जाएत। मुदा बँचाएबो तँ असान नहियेँ अछि। समस्याक समाधान नइ होइत देखि गीताक मनमे खौंझ उठल। बुदबुदाएल-

“बलुआहा खेतक आड़ि आ गरीबक मनोरथ, ओतबेकाल तक रहै छै जेतेकाल मनमे रहै छै, सहर-जमीनपर अबिते टुटि कऽ उड़िया जाइ छै आ फेर ओहिना-क-ओहिना सहीट भऽ जाइ छइ।”

मुहसँ निकैलते गीता अपना दिस तकलक। आइ सात तारीख बीतिये रहल अछि, शेष रहल आठ दिन। मुदा काजक ओरियानो तँ असान नहियेँ अछि। तीन लाख रुपैआक ओरियान हमरा सन-सन लोक-ले असान थोड़े अछि। गीताक मन जेना सिकुड़ऽ लगलै। सिकुड़िते बकार फुटलै-

“बेटा की कहत! केते जतनसँ पढ़ि वेचारा मेडिकलमे प्रवेश करै-जोकर अपनाकेँ बनेलक, अपन कर्तव्य पूरा केलक, मुदा..?”

‘मुदा’ कहि वेचारी ठमैक गेलि। ठमैक ई गेलि जे ने माइये-बापक विचार भेने बेटा-बेटी डॉक्टर बनि सकैए, आ ने बेटे-बेटी अपना विचारे बनि सकैए। दुनूक संयोग भेने सम्भव अछि। माए-बाप

जँ चाहबे करत आ बेटा-बेटी अपनाकेँ ओइ-जोकर नइ बना पौत, तखन सम्भवे केना भऽ सकै छै तहिना जँ बेटा-बेटी अपनाकेँ ओइ-जोकर बनाइए लेत आ माए-बापकेँ ओते सकड़ते ने हेतै, तैयो सम्भव नहियेँ अछि। फेर गीताक मन बेटापर सँ ससरैत अपन बालपनपर गेलै, मोन पड़लै मौसी। मौसी मनमे अबिते हलैस गेलि। अखन मौसी पाइ-कौड़ीबाली भऽ गेल अछि, जरूर ओ मदैत करत। मनमे 'मदैत' अबिते बैशाखक दुपहरियाक टुटल गुलाब जहिना जलासिक्त होइते कनकना जाइए, तहिना मौसीक मदैतक बिसवास मनमे अबिते गीताकेँ भेल। मोन पड़लै परसा धामक लक्ष्मी नारायण भगवानक दर्शन। नानियोँ मौसियो आ हमहूँ रहौं। तीनू गोरे मात्रिकेसँ भगवानक दर्शन करए गेल रही। आगू भऽ नानी बाजल रहए- "रीता, जेहने बेटी तूँ, तेहने ने गीतो भेल?"

माइक बातक जवाब रीता-मौसी बिना कोनो लागि-लपटक देने रहै- "माए, लक्ष्मी नारायण भगवानक दर्शन करैक रस्तामे छी, तोहर विचार असिरवाद भेल, जहिना तोरा-ले दुनू बेटी तहिना हमहूँ दुनू बहिना भेलौं।"

रस्ता चलनिहारकेँ केतौ पीच भेटै छै तँ केतौ सिमटीक पुल, केतौ बँसपुल्ला आकि कठपुल्ला भेटै छै तँ केतौ पजेबा उखड़ल-पसरल खरंजा, केतौ खच्चा-खुच्ची तँ केतौ ढलैयाबला नवका सड़क जहिना भेटै छै तहिना गीताक मनमे भेलै जे जे मौसी छह माससँ मोबाइलक पाइ दुआरे फोन नइ करैए, से लाख-दू लाख सम्हारि केना..? मनमे अबिते गीताक हृदए दड़ैक गेलै। दड़ैकते उठलै, माइयो आ नानीयोँ कहने अछि जे जहिना रीताक हिस्सा- नानीक दूध- गीतो पीने अछि तहिना गीताक हिस्सा- बहिनक दूध- रीतो पीने अछि।

रीता अपन पाँचो भाए-बहिनमे माए-बापक सभसँ छोट

संन्तान आ गीता जेठ बहिनक जेठ बेटी। दुनूक बीच मात्र छह मासक दूरी। माने रीतासँ छह मास छोट गीता। रीताक संगपनाक संग-संग नाना-नानीक सिनेह सेहो गीताकेँ दस बरख धरि माए-बापसँ अलग मात्रिकेमे भेटैत रहल। दुनूकेँ संगे गामेक स्कूलमे नाउओं लिखौल गेल। गीताक नाना कहियौ आकि रीताक पिता, रीता-गीताक संग समान बेवहार करैत रहलखिन। तेतबे नइ, रीतो-गीता अपनाकेँ सखीए-बहिनपा जकाँ रहल। जहिना एक-उमेरिया पित्ती, पित्ती नै संगी भऽ जाइत तहिना ने मौसियो होइत अछि। तहूमे बच्चेसँ नाना-नानीक मुँहक असिरवाद 'नूनू-बच्चा' सभ दिन किए जे दिनमे पच्चीसो-पचास बेर जपल जाइत।

समय आगू ससरल। दस बर्खक पछाइत गीता अपन माए-बाप ऐठाम, माने अपन मूल बासपर चलि आएल।

रीताक बिआह मैट्रिक पास लड़काक संग भेल। गाम-गामक दुर्भाग्य भेल जे गौंआँ गाम छोड़लक, ओना, किछु एहेन गाम जेकर भाग्य सचमुच अभाग्य भेल जइसँ दुर्दिन आएल, जइसँ गौंआँकेँ गाम छोड़ब अनिवार्य भऽ भेल, मुदा किछु एहनो गाम तँ ऐछे जइ गामक लोक बजारू देखौंसमे पड़ि, गाम छोड़ि पड़ाएल। रीताक सासुरक गाम दोसर कोटिक। गामसँ पड़ाइक नौबत नइ रहै, मुदा तैयो ममियौत भाइक संग रीताक पति- सुधीर- मुम्बइ गेल। नीक वेपारीक ड्राइवर ममियौत भाय। सुधीरोकेँ अपने वेपारी ऐठाम एजेन्टक रूपमे नोकरी लगा देलक। एक तँ ओहुना लोक बडी-गार्डक सहायतासँ चलैए, तैपर सभसँ नमहर बडी गार्ड गाड़ीक ड्राइवरे होइए, जेकरा हाथेमे विधाता जकाँ जीवन-मृत्यु रहै छै, तँए सोभाविके छै जे ओ सभसँ बेसी बिसवासू भेल। मौकाक अवसर सुधीरकेँ भेटल। कपड़ा दोकान होउ चाहे लटखेना आकि मनिहाराक, रंग-रंगक साइयो-हजारो रंगक सौदा रहिते अछि। जहिना एक कम्पनीमे एके

डिजाइनिक गाड़ी जकाँ एकेटा सौदा नइ रहैए तहिना सुधीरोकेँ भेल। फील्ड वर्क रहने एक संग अनेक रंगक कारोबार करैक मौका हाथ लगलै। जइसँ नीक आमदनी हुअ लगलै। कनीयेँ दिनक पछाइत मुम्बइएमे नीक मकान कीनि लेलक।

गीताक बिआह सेहो मैट्रिक पास लड़का-संग भेल। मुदा गाममे उजार लगल। माने गीताक सासुरक गाम धारक कटाउमे आबि गेल। जइसँ समुच्चा गामक लोककेँ पड़ाइन लगि गेल। गीताक पति- सुनील- गामसँ पड़ा कऽ मुम्बइए गेल। संयोज नीक बैसलै, प्राइवेट स्कूलमे नोकरी भेलइ। स्कूलक एहेन बेवस्था जे चौबीस घन्टाक नियमानुसार आठ घन्टा पढ़ौनीक ड्यूटी बान्हल रहइ। बान्हल दरमाहा, बान्हल जिनगी। संगमे परिवारो। भाड़ाक घरमे सुनील जीवन-निर्वाह करए लगल। एक तँ ओहुना एक राज्यमे रहने मोबाइल सस्ता रहैए, तैपर अनधुन आमदनी रीताकेँ, तँए अगुरवारे-माने अपना खर्चे- घन्टा भरि-भरि गप-सप्प करैक आदत रीता गीताकेँ लगा देलक। गपोक कमी दुनूक बीच नहियेँ। तैपर आन-राज्यक आन समाजमे गपो-सप्प केकरासँ करत। बचपनक दस बर्खक जिनगी एक संगे रीता-गीताकेँ बीतल छल तँए कृष्णा-मुट्ठीक उपासक संग नरक निवारण चतुर्दशीक उपास, दुर्गा पूजा-ले भोरमे सिंगहारक फूल बीछैक संग-संग संगे स्कूल जाएब-आएब इत्यादि-इत्यादि दुनूकेँ संगे बीतल छल। तँए गप-सप्पक क्रममे दुनूक नजैरसँ मोबाइलक खर्च उड़िया जाइ। उड़िया ई जाइ जे मोबाइलक गप-सप्प पाइयक हाथे होइए से बिसैर जाइत रहए।

एक राज्यमे दुनू रहैत। तहूमे गाड़ी-सवारीक सुविधा सेहो अछिए। ओना, आइ बीस बर्खसँ रहैत आबि रहल जिनगीमे कनी-मनी खटास तँ अबैत रहल, मुदा दालिमे देल काँच आम जकाँ घुलि-मिलि जाए।

जहिना दूटा बेटा आ एकटा बेटी रीतोकेँ, तहिना एकटा बेटा आ दूटा बेटी गीतोकेँ। ओना, दुनूक सन्तानक बीच पढ़ाइ-लिखाइसँ लऽ कऽ खेनाइ-पीनाइ, कपड़ा-लत्तामे दूरी बनियेँ गेल अछि। जे नजैरपर ऐ दुआरे नै चढ़ैत रहै जे कहियो-काल एकठाम सभ बच्चा हुअए- माने काजे-उदेममे एकठाम होइ छेलए। जहिना गीताक मन बच्चाक खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ पढ़बै-लिखबैमे ओझराएल बीतैत, तहिना रीतोक बीतैत छल। ओना, रहै-सहैसँ लऽ कऽ पढ़ै-लिखैक जे सुविधा रीताक बेटा-बेटीकेँ भेटैत रहै से सुविधा गीताक बेटा-बेटीकेँ नै भेटैत। मुदा विद्यालयमे सुनीलकेँ कार्यरत रहने, जहिना आन-आन बच्चाकेँ बुझै-गमैक- माने अनुभव करैक- अवसर भेटने तीनू बच्चाकेँ अपना जिनगीसँ ऊपर उठबैक दिसामे रहबे करइ।

ओना, दोसरो कारण भेल, दोसर कारण ई भेल जे जरूरतसँ बेसी कमाइ सुधिरकेँ रहने रंग-बिरंगक वस्तु-जात कीनि घर सजौने रहए। एके वस्तु रंगसँ रंगर सेहो होइए आ रंगसँ बेदरंगो होइए। रंगसँ रंगर जिनगीक चढ़ाइक दिशामे होइए, मुदा रंगसँ बेदरंग लुढ़कैत जिनगीक ढलानक दिशामे होइए। सुविधा भोगी मनुक्खक एहेन सोभाव होइते छै जे बिनु किछु केनौं आगू बढ़ैत चली, माने जहिना ढलानपर साइकिल-गाड़ी आकि गेने अपने गुड़कैत चलैए तहिना अपनो गुड़कैत चली।

समय आगू बढ़ल। परिवारक काज बढ़ने, जेते दुनूक बीच विचार विनिमयमे मोबाइलपर बात-विचार होइ छल तइमे कमी आबिये गेल छल। जे गीताक बेटाक नामांकन समय आरो बातकेँ पतरा देलक। एक तँ गीताक बान्हल आमदनी तँए खरचो रहै, जइसँ निसचित खर्च मोबाइलपर रहइ। तैपर सँ रीताक दूर होइत गप-सप्पक बेवहार आरो बन्न केलक। बन्न होइक एकटा सोभाविक कारण सेहो भेल। ओ ई जे ने दुनू परिवारकेँ एक रंग काज आ ने

एकरंग जिनगी, तखन विचार-विनिमय हएत की? ओना, आएबो-जाएब दुनूकेँ तीन सालसँ नहियेँ भेल अछि। तँए पैछला जिनगी बसियाइत-बसियाइत साढ़े बाइसे जकाँ भऽ गेल।

आइ विद्यालयसँ डेरा अबिते सुनील गीताक मन खसल देखलक। मनमे एलै अखन अपनो विद्यालयसँ एबे केलौं हेन, जाबे पारिवारिक नइ बनब, माने कपड़ा-लत्ता बदैल, हाथ-पएर धोइ चाह-जलखै नइ करब, तैबीच पारिवारिक चर्च नीक नहि। जँ पत्नीकेँ मन खसले छैन तँ ओकर उपाय हेतइ। जे होइ-जोकर हएत, से हएत आ जे नइ होइ-जोकर रहत से नइ हएत। अपन मनक बेथाकेँ दबैत गीता पतिकेँ चाह-पानि करा आगूमे उदास चेहरा नेने बैसल। सुनील बाजल- “मन खसल देखै छी?”

अपन मनोरथ व्यक्त करैत गीता बाजल- “बौआक नामांकन..?”

‘नामांकन’क पछाइत गीताक कण्ठ घेरा गेल। जे सुनील बुझि गेल। मुस्की दैत सुनील बाजल- “पनरह तारीक तक बौआक नाओं लिखबैक समय अछि। बारह तारीककेँ लिखा देबइ।”

बदरीहन मेघ फटिते सुर्जक रोशनी जहिना चमैक उठैए तहिना गीता चमकैत बाजल-

“खर्चक ओरियान केना केलिऐ!”

सुनील-

“जे काज अनिवार्य करब अछि, ओकरा तँ करै पड़त। अखन संगी सभसँ तीन मासक करारपर लेलौं, तैबीच गामक जमीन बेच ओरियार कऽ लेब।”

पतिक बात सुनि गीता मुड़ी डोलबए लागलि। पत्नीक स्वीकृत देखि सुनील बाजल- “देखियौ, ने आब ओइ खेतकेँ जोतै-कोरैले

जाएब आ ने ओते सहज रहल। एक तँ अपन अदहासँ बेसी खेत कटि कऽ धारमे चलि गेल अछि, बाँकी जे अछि ओ सुभ्यस्त जगहसँ भारी खेती भऽ गेल अछि। तँए ओकरा जँ बेचियो लइ छी ते ऐगला पीढ़ीकेँ कोनो दिक्कत नइ हएत। दिक्कत नइ होइक कारण अछि ओकर बदलैत जिनगी। आब ओ जमीन ऐ बदलैत जिनगीकेँ ठाढ़ करैक पूजी भेल। तँए एकरा जँ बदैल दोसर उपाय करै छी तँ से पूजीक नाश नै बल्कि विनिमय भेल।"



तिथि: 21 अप्रैल 2015, शब्द संख्या: 1393

नटकिया गति

बेरुका समय। दरबज्जापर बैसल सुबल काका श्यामलालक बाटा-बाटी बाट दिस तकैत रहैथ। काल्हि साँझुए पहर दुनू गोरेक विचार भऽ गेल रहैन जे काल्हि बेरूपहर विचार करब जे 'गाममे हाइस्कूल केना बनत?'

छोट-छोट सातटा गाम मिला एकटा पंचायत अछि। साए घरक वस्ती अपनो गाम अछि। ओना, लोकोक विचार आ गामक शकलो-सूरत पंचायतिक आन गामसँ बेसी नीक अपन- लछमीपुरक तँ अछिए। बेसी नीक ई जे आन-आन गामेमे ने कियो स्कूल-अस्पताल बनबैले जमीन दइए आ ने बनैक तनदेहीए करैए। ओना, सातो गाम घौदियाएले अछि जइसँ एके गाम जकाँ बुझि पड़ैए, मुदा वित्तीय सीमा रहने सातो सात गामक नाओंसँ सेहो जानले जाइए। एकर माने ई नइ भेल जे एहेन गाम दोसर नइए, जइमे दू-तीन-चारियो पंचायत तँ अछिए। ओना, सातो गामक बीचमे लछमीपुर अछि, मुदा लछमीपुर जकाँ शकलो-सूरत तँ गामक छैहे। शकल-सूरत ई जे आन छबो गामसँ ऊँचगर जमीन रहने बारहो मास ठनकगर बुझि पड़ैए, जे आन-आन गाममे नइ छइ। तीनटा गाम ओहन अछि जइमे पोखरिये बेसी छै, आ तीनटा ओहन अछि जइमे नीचरस- माने चौरीए- जमीन बेसी छै, जइसँ दुआर-दरबज्जापर मालो-जाल कम छइ। एकर माने ई नइ जे ओइ छबो गाममे लछमीपुरसँ बेसी किछु ने छै, डेङ्गी नाह, जाल आ टौहकी-पहटा

इत्यादि तँ बेसी छैहे।

ठनकगर गाम लछमीपुर रहने बान्हो-सड़क, गाछियो-कलम आ बैसै-उठैक जगहो तँ बेसी अछिए। जहिना जगह गुने उपजा, तहिना ने उपजा गुने लोको! गाममे सामाजिक किरिया-कलाप आ सामाजिक संस्था समाजमे बनइ, एहेन विचारक लोक गाममे बेसी अछिए। आन-आन गाममे तेहेन-तेहेन ओझरौठ अछि जे कोनो गाम जातिक उन्मादमे फँसल अछि तँ कोनो साम्प्रदायिक ओझरौठमे। साठि बर्खक जिनगीक अपन सीमा तँइ करैत सुबल काका लंगोटिया संगी- श्यामलाल-क संग गाममे हाइस्कूल बनै से विचार करता।

कोनो सामाजिक काज दस गोरेक लाभक रहितो दस गोरेक विचारक बीच रहितो, खास विचारसँ उठैत अछि, आ विचार रूपमे बढ़बैत काज दिस बढ़बैए, जइसँ सामाजिक काज होइ छइ।

ओना, विचारक बान्हल सोभाव श्यामोलाल कक्काक छैन मुदा ओ बहन्तू लोक छैथ। जेम्हरे काजक गर देखलैन तेम्हरे बहैक जाइ छैथ, जइसँ समय बेठेकान भऽ जाइ छैन। जे बेठेकान बेसियो होइ छैन आ कमो होइ छैन। मुदा आइ कमे भेलैन, दसे मिनट बिलमसँ सुबल काका लग पहुँचला। देरो-सबेर काज लग पहुँचते आशा जगिते अछि। श्यामलाल काका किछु बिलमसँ पहुँचला मुदा तइले सुबल काकाकेँ कोनो मथहानि नहियेँ बुझि पड़लैन। बुझले छैन जे श्यामलालकेँ काजक ठेकान नइ रहै छैन, सभ काजकेँ लोकक जरूरी बुझि काजे बुझै छैथ, तँए रिंच-हथौरीसँ लऽ कऽ बड़का-बड़का इंजीनक गप सेहो करिते छैथ। चाह चलल। चाह पीब सुबल काका श्यामलाल काकाकेँ कहलखिन- “श्याम, गाममे हाइस्कूल बनत, ई तँ तँइ भऽ गेल, मुदा एकर रूपरेखा की हएत?”

एक तँ ओहुना श्यामलाल काका बजैमे फरकोर, तैपर एकटा

नव काजक रूपरेखा खिंचैक भार पैबते आरो उत्साहित होइत बजला- “भाय साहैब, सामाजिक काज छी, सबहक बाल-बच्चा पढ़त, तैसंग अपनो सबहक बच्चा तँ पढ़बे करत। तँए नीक हएत जे पहिने सातो गामक लोकक कान तक ई विचार पहुँचा दिऐ। विचार पहुँचले पछाइत ने कियो अपन विचारक संग सहजोगो करता।”

श्यामलाल कक्काक बात सुनि सुबल काका बजला-

“ई तँ बड़ बेस जे सबहक काज छी तँए सबहक सहयोगसँ सही दिशोमे आ सही ढंगोसँ चलत। तहूमे अपनो सबहक बाल-बच्चा पढ़बे करत, जइसँ अपनो काज ओहने भेल जेहेन सबहक।”

सुबल कक्काक बात सुनिते श्यामलाल काकाकेँ मन उधकलैन, रूपरेखा बनबैक विचार करैले बैसलौं अछि, जँ दोसर दिसक गप पसैर जाएत तँ काजेक गप पछुआ जाएत। जखने काज पछुआएत तखने समय ससैर गेने काज ठमैक जाएत..। बजला-

“भाय साहैब, स्कूल-ले जगह चाही, तइले पंचायतमे अपना गामसँ नीको आ असानो आन गाममे नइ हएत, तहूमे पंचायितक लोअर प्राइमरी स्कूलसँ लऽ कऽ मिडिल स्कूलो तक अछि। छोट-मोट अस्पतालो ऐछे, पंचायतो भवन ऐछे, तैसंग दसटा दोकानो-दौरी सेहो अछिए।”

मुड़ी डोलबैत सुबल काका बजला-

“हँ! से तँ अछिए।”

सुबल कक्काक सह पाबि श्यामलाल काका बजला-

“सभसँ पैघ गुण अपना गाममे ई अछि जे भदवारियोमे थाल-खीच कम होइए, आन गामक रस्ते सभ बन्न भऽ जाइए जइसँ धिया-पुताकेँ एबो-जेबोमे दिक्कत हेतइ। जमीनक कोनो झंझटो ने अछि। बड़की पोखैरक महार ऐछे, जेहने रमणगर स्कूल हएत तेहने

खेलाइले फील्डो हेतइ।”

जहिना कुशल मिस्त्रीक बनौल बक्सा खाँच-मे-खाँच मिलि सटि जाइए तहिना दुनू गोरेक विचार खाँच-मे-खाँच बैसैत गेलैन। बिच्चेमे मंगला पहुँचल। मंगलाकेँ देखिते सुबल काका बैसैले कहलखिन। मुदा मंगला ठाढ़े रहल। बिच्चेमे श्यामलाल काका टोनैत पुछलखिन-

“की हाल-चाल मंगल?”

‘हाल-चाल’ सुनिते मंगल श्यामलाल कक्काक लगमे बैस बाजल- “काका, अहाँकेँ नइ कहब तँ केकरा कहबै, सब दिन बाप-पित्ती जकाँ मानैत एलौं हेन आ अखनो मानै छी।”

मंगलाक भूमिका सुनि श्यामलाल काका बोहिया गेला। स्कूलबला काजक रूप-रेखा बिसैर गेला। सुबल काका बीचमे किछु बाजऽ नइ चाहैथ। केम्हरोसँ बजने एक गोरेक मनमे सोग हेबे करत। तहूमे अपना ऐठाम छी। आनठाम रहितौं तँ रस्ते-पेरेक बात कहि टारलो जा सकै छल। मुदा भोजक नव विन्यास पातपर पड़िते जहिना मन चटपटाए लगैत तहिना श्यामलाल कक्काक मन चटपटेलैन। मंगलाकेँ कहलखिन-

“पहिने एक जूम तमाकुल खुआबऽ मंगल। आ हे! तमाकुल जे बनबिहऽ से खूब रगैड़ कऽ रंगर बनबिहऽ।”

श्यामलाल कक्काक बात सुनि मंगलाक मनमे खुशी उपकल। चुनौटी निकालैत बाजल-

“काका, किछु छी तँ समरथाइक हाथ छी किने। चुटकीएसँ तेना तरहत्थीपर चुन-तमाकुलकेँ रगड़बै जे अपने रंग पकैड़ लेत।”

मने मन सुबल काका छुब्ध होइत रहैथ। की करए बैसलौं आ की भऽ रहल अछि!

तमाकुल मुहमे लइते श्यामलाल काका बजला- “मंगल, समय-साल ठीक-ठाक चलै छह किने?”

बजला तँ ऐ खियालसँ जे सोझमतिया मंगला ऐछे, जखने कानमे पड़तै आकि ‘हँ’ कहि देत। मुदा से भेल नहि। कहलकैन-

“काका, समय-साल की ठीक-ठाक चलत। तीन मासक करारीपर बाबूसँ घर लेलौं हेन!”

ओना, सुबलो कक्काक मनमे मंगलाक बात घुरियेलैन मुदा श्यामलाल कक्काक मनमे तँ घुड़छीए लगि गेलैन। घुड़छी ई लगलैन जे ओहुना देखै छी जे पिताक सम्पैत बेटाकेँ होइ छै, तैठाम ई कहैए जे तीन मासक करारीपर घर लेलौं हेन! बजला- “की करारीपर लेलह?”

मनक पीड़ा मनसँ निकलि जखन सुननिहारक कानमे पहुँचैए तखन जे खुशी बजनिहारकेँ होइ छै, वएह खुशी मंगलाक मनमे जगल। चौअनियाँ मुस्की दैत बाजल- “काका! दस दिन पहिने अही फागुनमे बिआह भेल। तीन बापूत मे दूटा घर इन्दिरा आवासबला अछि। एकटा भैया नाओंसँ, दोसर बाबू नाओंसँ। हमर बाँकीए अछि।”

मुस्की दैत श्यामलाल काका बजला- “आब तँ तोरो हेबे करतह?”

‘तोरो हेबे करतह’ सुनि मंगलाक मनमे खुशी तँ भेल, मुदा जहिना आशापर पानि हरेने होइए तहिना मंगलाकेँ भेल। बाजल-

“काका, बड़का लकड़पेँचमे पड़ि गेल छी। पुश्तैनी रहैत तँ बाबूएबला घरमे टाट लगा दूटा घर बना लैतौं, से तँ छी नइ। इन्दिरा आवासक छी, हमरा केना हएत?”

मंगलाक बात श्यामलाल काकाकेँ जँचलैन। मुड़ी डोलबैत

बजला- “अच्छा तोहूँ चिन्ता नइ करह। ब्लौक जाएब तँ तोरो भाँज लगा देबह।”

‘भाँज’ सुनि मंगला बाजल-

“काका, घरक भाँज की लगाएब, एके कट्ठाक घराड़ी तीनू बापूत मिला कऽ अछि। तइमे दू-दू डिसमिल बाँटि कऽ दुनू बापूत घर बना लेलक, आब घराड़ी कहाँ अछि जे इन्दिरा आवास भेटत!”

मंगलाक बात सुनि श्यामलाल काका तेना ओझरा गेला जे कोनो जवाबे ने फुड़लैन। समैयक मांग करैत बजला-

“अखन स्कूलक काजमे लगल छी, निचेनसँ तोहर विचार करब। जखन गामक लोक छह तखन गाममे घराड़ी नइ हएत।”

श्यामलाल कक्काक भरोस देखि मंगला बाजल-

“काका, अन्तिम जेठ तकक करारीपर बाबूसँ घर मंगनी केने छी से बिथुत ने होइ।”

कहि उठि कऽ विदा भेल। मंगलाक बात सुबलो कक्काक मनकेँ मथऽ लगलैन। मथऽ ई लगलैन जे तीस बरख पहिने गाममे जेकरा घराड़ी नइ छल तेकरा जमीन्दारो सबहक आ सरकारियो जमीन कट्ठा भरि-भरि बाँटि समस्याक समाधान भऽ चुकल छल। आइ खेती-पथारी, पढ़ै-लिखै आदि विभिन्न दिशामे समाज आगू बढ़ल। समाजक संग-संग समाजक काजो बढ़ल। गाममे सड़क बनल, मिडिल स्कूल तक पढ़ाइक सुविधा भेल, पंचायत भवन बनल। अस्पतालक शाखा बनल। पानि पीबैले साइयो चापाकल, अपनो केने आ सरकारियो सुविधा भेटने गड़ल। मुदा घराड़ीक समस्या पुन: आबि गेल! नजैर उठा सुबल काका श्यामलाल काकापर देलैन। श्यामोलाल कक्काक नजैर उछटगर नै बुझि पड़लैन। बजला- “श्याम! नटकिया गति होइले करैए।”

श्यामलाल काका पुछलखिन-

“से की?”

सुबल काका-

“जैठाम आइ स्कूलकेँ आगू बढ़बैले, अस्पतालकेँ आगू बढ़बैले आ खेती-पथारीकेँ आगू बढ़बैले शक्ति आ श्रमक जरूरत अछि, तैठाम जँ तीस बरख पहिलुके समस्या दिस बढ़ब तँ आगू की बढ़ब जे आगू बाधिते हएब किने?”

मुड़ी डोलबैत श्यामलाल काका कहलखिन-

“हँ! से तँ हएत।”

सुबल काका-

“तखन?”



तिथि: 24 अप्रैल 2015, शब्द संख्या: 1313

खाए चाहैए

आसिन मास, भिनसुरका पहर, मेघौन समय। झिहिर-झिहिर पुर्बा हवा चलैत। सुर्ज उगैक समय भेलो पछाइत रंग-रोशनक कोनो दरस नहि, मुदा करिखाएल अन्हारो नहियेँ अछि। ओस-बर्खाक सीमा परहक मास आसीन, तँए जहिना ओस कनकनाइत तहिना बर्खोक मन कनकनाइते अछि। मुदा दुनूक कनकनाएब दू रंगक अछि। एक अछि- ओसक अपन उठैत जिनगीक कनकनी, तँ दोसर अछि बर्खाक खसैत जिनगीक कानब। जइसँ जहिना दुभिक लोल चमकैत अछि तहिना गुलाबक बोल चुमैक-चुमैक चकभौर लगैबते अछि। एक तँ भरि रातिक कनैत-खिजैत बितौल समय, जइसँ जगरनासँ भकुआएल आँखि आ मिरमिराइत मन, मुदा तैयो भाषा दाय जिद्द पकैड़ घरक चौकठि लग बैस, डेढ़िया दिस देखि रहल छैथ।

भिनसुरका अखबार जकाँ गामो-घरमे गामोक आ आनो गामक समाद-समाचार पसैरते अछि। ने समदियाक कमी, ने घटनाक कमी गाम-घरमे अछि।

बरतन-बासन माँजव छोड़ि सोनमी दीदी भुलिया दादी लग जा बजली-

“काकी, अतहतह होइए!”

भावुक कलाकार जकाँ तेहेन भावमे सोनमी दीदी बजली जे भुलिया दादी तुलसी चौरा नीपब छोड़ि दुनू कानो आ दुनू आँखियो

ठाढ़ केलैन। अपरिचित-अनभुआर जकाँ भुलिया दादी पुछलखिन-

“की अतहतह होइए, सोनू?”

छोट वस्तुकेँ जहिना कलाकार नीक मुँह-कान बना पैघ कलामे बदलैत अछि तहिना सोनमी दीदी बजली-

“काकी, की कहब! ओ तँ तेना..?”

‘ओ तँ तेना’ कहि सोनमी दीदी मुँह बन्न करैत जेना मने-मन किछु सोचए लगली। भुलिया दादीकेँ ने गपक छीप भेटलैन आ ने जड़ि। मुदा भावक जिज्ञासा मनकेँ तेना सिहरा कऽ डोला देलकैन जे ने किछु पुछैत बनैन आ ने चुप रहल होइन। सोनमी दीदीक मन तरे-तर, भदवरिया कोसीक बाढ़िक पानि जकाँ तेना घोर-मट्ठा होइत रहैन जे ने मुहसँ बकार फुटैन आ ने..।

तइ बिच्चेमे भुलिया दादी पुछलखिन-

“एना किए सोनू, जेठुआ बरखा जकाँ अदहेपर सँ बकार हरण भऽ गेलह?”

तैबीच सोनमी दीदीक मनमे सेहो, नीक जकाँ तँ नहि मुदा कनी-मनी फरिछा गेल छेलैन। बजली-

“भाषा दाय अपन गाम-घर, देस-कोस छोड़ि जाए नइ चाहै छैथ, मुदा बड़की बहिन तेना ने चलैले जोर करै छथिन जे वेचारी भारी सङ्कटमे पड़ि गेल छैथ!”

न्यायालयमे ओकील जहिना अपन पक्षधरक विचारकेँ कसि कऽ पकैड़ न्यायालयमे वक्तव्य दैत तहिना भुलिया दादी बजली-

“बड़की बहिन तँ अपने दोसर मुलुक चलि गेल अछि किने?”

भुलिया दादीक विचारमे सोनमी दीदीकेँ जेना पुरैनिक सिरक संग बिसाँढ़ो भेटल होइन तहिना भेलैन। सह दैत बजली- सोनमी

दीदीक विचारसँ भुलिया दादीकेँ मनमे आरो भड़ भेटलैन। अपन टुटल जिनगीक कथा बुझिते मनमे जहिना सक्कतपन अबै छै तहिना अपन विचारकेँ आरो सक्कत बनबैत बजली-

"बुच्ची, हमरा सबहक दिन घटल, जइसँ दुरदिनक मुँह देखऽ पड़ि रहल अछि, मुदा..?"

सुदिन-कुदिनसँ ऊपर उठि भुलिया दादी बाजल छेली, मुदा सोनमी दीदी नीक जकाँ भुलिया दादीक विचारकेँ नइ बुझि पेली। चहरा-ले जहिना चिड़ैक गेल्ह अपन लोल उठबैत अछि तहिना मुँह बॉबि सोनमी दीदी भुलिया दादीकेँ पुछलखिन-

"काकी, हम तँ अहाँ आगूमे जनमल छी तँए अहाँ जकाँ सभ बात थोड़े बुझल अछि। कनी विलगा-विलगा कहियौ जे नीक जकाँ बुझि पाएब।"

अपन गुरुत्व देखैत भुलिया दादी बजली- "बुच्ची, एक बाते नइ बुझबहक, तँए जे कहऽ चाहै छेलियऽ से तर पड़ि जाइ छह आ ऊपरसँ तोहीं एकटा आरो सबाल उठा दइ छहक।"

कहि भुलिया दादी चुप भऽ गेली। मुदा सोनमी दीदीक पियासल आँखि आँखिपर पड़िते भुलिया दादीक आँखि नीर-पानिसँ छल-छला गेलैन। बजली-

"बुच्ची, दूटा गप बुझलापर सभ बात बुझि जेबहक। तँए..?"

आगूक विचार सुनैक प्रवल जिज्ञासु- सोनमी दीदीक मन बाजि उठलैन- "काकी, बुझबैमे जे गर अहाँकेँ नीक लगए तही गरे बाजू। मुदा कहियौ सब बात।"

भुलिया दादी बजली- "बुच्ची, कोनो भाषा-साहित्यक उदय-प्रलय केना होइ छै, ओ निर्भर करै छै ओइठामक लोकपर आ लोकक विचारक परिपक्वतापर। जेहेन जैठामक लोक रहल

तैठामक वस्तु-जात, खान-पान, बात-विचार तेहेन बनल। तँए एकरा अहीठाम रहऽ दहक।”

अपना विचारे भुलिया दादी विरामक खुट्टा ठाढ़ केलैन, मुदा दुनू दिससँ सोनमी दीदी तेना डोलौलखिन जे भुलिया दादीकेँ अपन पैछले विचारपर आबऽ पड़लैन। बजली-

“बुच्ची, जे शासन जेहेन जनप्रिय रहल ओ ओहेन अपन शासनक बेवस्था बनबैए, जेहेन बेवस्था बनि शासन चलैए तेहेन ओइठामक मनुक्खक निर्माण होइए। जखने मनुक्खक निर्माण हेतै तखने ओकरामे निरमबैक शक्ति औते। जखने निरमबैक शक्ति ओकरामे आबि जाइ छै तखने ओ अपन विचारानुसार निर्माणक प्रक्रिया शुरू करैए।”

भुलिया दादीक विचार सोनमी दीदीक मनमे अँटबे ने केलैन, जइसँ अकछाइत बजली-

“काकी, ओते खिस्सा–पिहानी नइ पसारू। मुड़कुटिये मे कहियौ।”

सोनमी दीदीक विचार सुनि भुलिया दादीकेँ मिसियो भरि ई तामस नइ उठलैन जे हमर पेटक सभ बात सोनमी नइ बुझऽ चाहैए। उल्टे मनमे खुशीए उपैक गेलैन। बजली-

“बुच्ची, जहिना पाली भाषा राजसत्ता तक पहुँच फड़ल-फुलाएल मुदा ओ रसे-रसे केना विलीन भेल जाइए! जखन कि पाली भाषाक साहित्य, कला, संस्कृति समयानुकूल सुसम्पन्न छल! जे मृत्युक कगारपर अछि।”

भुलिया दादीक बात सुनि सोनमी दादीक मन आरो अकैछ गेलैन। बजली-

“अपन विचार करू काकी, दुनियाँ बड़ीटा छै तँए ओकर

गरदैनक ढोलो आ घेघो ओहने नमहर छइ।”

सोनमी दीदीक अकछाइत मन देखि भुलिया दादी मने-मन विचारली जे कोनो बात-विचार जँ सुननिहारकेँ अकछबऽ लगै तँ पाशा बदलबे नीक। तहूमे दुनियाँ छोड़ि अपन बात सोनमी बुझऽ चाहैए। बजली-

“बुच्ची, कहऽ लागल छेलियऽ जे अपना सबहक दिन घटल।”

सोनमी दीदी-

“की दिन घटल?”

भुलिया दादी-

“दिन घटब भेल, काज घटब। लोककेँ जीबैले समैयक अनुकूल बनऽ पड़ै छै, अनुकूलता पबैले जिनगीक अवस्थानुकूल आवश्यकता होइ छै, जे भेला पछाइते सही दिशामे चलि पबैए।”

भुलिया दादीक बात सोनमी दीदी नीक जकाँ नहि बुझि पाबि रहल छेली, जइसँ फेर अकछा बजली-

“काकी, तेना अहाँ झाँपि-तोपि बजै छी जे नीक जकाँ बुझिये ने पबै छी। कनी फरिछा कऽ बजियौ।”

सोनमी दीदीक बात सुनि भुलिया दादीकेँ मनमे भेलैन जे जे बात सोनमीकेँ बुझैक मन छै भरिसक से बात छुटि गेल अछि। जँ से बात बजितौं तँ अकछाइत किए। बजली-

“बुच्ची, अपना सबहक दिन खेती-पथारीपर चलैए। खेती-पथारी जड़ि भेल। अही उपज-उपार्जनपर पेटसँ लऽ कऽ पारिवारिक-सामाजिक किरिया-कलाप चलैए।”

बिच्चेमे सोनमी दीदी मुड़ी डोलबैत बजली-

“हँ से तँ चलिते अछि।”

सह पैबते भुलिया दादी बजली- “पेट-परिवारसँ समाज धरिक जे किरिया-कलाप अछि तही बीच जिनगी चलैए। आइक युगमे मशीन सभसँ बेसी उत्पादित वस्तु बनि गेल अछि, जइसँ अपना सभ बहुत दूर भऽ गेल छी। जेतबो पहिने छल- माने अन्न आ दलहन-तेलहनसँ लऽ कऽ पटुआ, रूइया, कुशियार इत्यादिक मशीन, सेहो नष्ट भऽ गेल। बढ़ैक जगह कमि गेल। जइसँ किसानी जिनगीपर भारी चोट पड़ि गेल!”

भुलिया दादीक बात सोनमी दीदीकेँ नीक लगलैन। मुदा गामक औझुका घटना- माने भाषा दायकेँ जे बड़की बहिन अपना संगे चलैले कहै छथिन- ओइपर नजैर पड़िते सोनमी दीदी बाजली-

“काकी, समाजक बीचक बात छी, नीक हएत जे दुनू गोरे संगे चलू आ भाषा दायकेँ हुनकर अपन विचार पुछि लियनु।”

सोनमी दीदीक विचार भुलिया दादीकेँ जँचलैन। बजली-

“हाथमे माटि लगल अछि, देखबे केने छेलह जे तुलसी-चौरा नीपै छेलौं, से पहिने धोइ लइ छी।”

हाथ-पएर धोइ कऽ भुलिया दादी सोनमी दीदीक संग भाषा दाय ऐठाम विदा भेली।

घरक मुहथरिपर बैस जेना भाषा दाय बहिनक बात सुनि कनिते रहली, तहिना ललौन आँखि। नोरक टघारक दाग ओहिना आँखिसँ गाल तक सुखाएल। आँगन लग पहुँचते भुलिया दादी भाषा दायकेँ पुछलखिन-

“बहिन, एना आँखि किए ललियाएल अछि?”

‘ललियाएल’ सुनि भाषा दाय बुझि गेली जे भरिसक राति भरिक जे कानब अछि ओ आँखि शिकाइत कऽ रहल अछि। अपनाकेँ संयमित करैत भाषा दाय बजली- “बहिन अपना सेने

चलैले कहैए से जेनाइ नीक हएत? तेहेन-तेहेन एकरा सबहक लीला छै जे उलाइए-पका कऽ खा जाएत!”

भाषा दाइक मनक बेथा सुनि सोनमी दीदी बजली-

“दीदी, अहाँ माए तुल्य छी, हम सभ बच्चा भेलौं। जहाँ धरि पार-घाट लागत तहाँ धरि सेवा तँ करबे करब, तइले केकरो बातमे किए पड़ब।”

सोनमी दीदीक बात सुनि भाषा दाय मुस्कुराइत बजली-

“अपन पूर्वजक लगौल सभ किछु छी, एकरा छोड़ि केतऽ जाएब। सबहक जीवन-मरण संगे रहत।”



तिथि: 27 अप्रैल 2015, शब्द संख्या: 1223

Notes